# Badische Landesbibliothek Karlsruhe

## Digitale Sammlung der Badischen Landesbibliothek Karlsruhe


# Des Lahrer hinkenden Boten neuer historischer Kalender für den Bürger und Landmann

## Karlsruhe, Im Digitalisierungsprozess: 1814-1994

[Kalender und Kalendergeschichten]


**urn:nbn:de:bsz:31-62031**



Visual Library

## Chronologische Elemente und bewegliche Feste.

(Nach dem gregorianischen Kalender.)

Die goldene Zahl ist 16.
Die Epakte XV.
Der Sonnenzirkel 10.
Zinszahl der Römer 5.
Der Sonntagebuchstabe G.
Septuagesima 28. Januar.
Aschermittwoch 14. Februar.
Ostersonntag 1. April.
Himmelfahrt Christi 10. Mai.
Pfingstsonntag 20. Mai.
Trinitatissonntag 27. Mai.
Fronleichnamsfest 31. Mai.
Erster Adventsonntag 2. Dezember.
Zahl d. Sonntage nach Trinit. 26.
Die vier Quatember: 21. Feb., 23. Mai, 19. Sept., 19. Dez.
Von Weihnachten 1876 bis Herrenfastnacht 1877 sind es 6 Wochen 6 Tage.

## Stand der Uhren verschiedener Städte

wenn es in Berlin 12 Uhr Mittag ist.

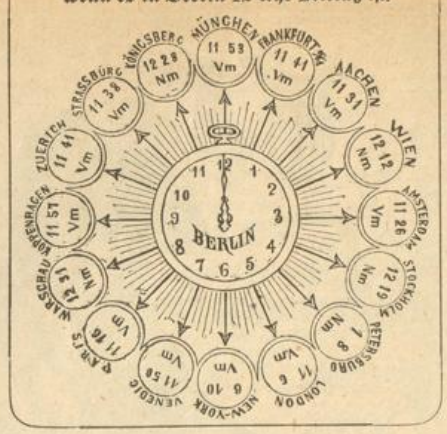


## Historische Zeitrechnung auf 1877.

Nach der Erschaffung der Welt (jüdisch) . . . . 58
Nach Erbauung der Stadt Rom . . . . . 2630
Nach Erfindung des Schießpulvers . . . . . 49
Nach Erfindung der Buchdruckerkunst . . . . . 43
Nach Entdeckung Amerika's 3
Nach der Reformation Dr. Martin Luthers . . . 3
Nach dem westphälischen Frieden . . . . . 2
Nach Antritt der Regentschaft des Großherzogs Friedrich v. Baden .
Nach Ausrufung des deutschen Kaiserreichs . . .

Der Neumond
Das erste Viertel
Der Vollmond
Das letzte Viertel
Stunde Vorm. V.
Stunde Nachm. N.

**Himmelszeichen.**

Widder
Stier
Zwillinge
Krebs
Löwe
Jungfrau
Waage
Scorpion
Schütze
Steinbock
Wassermann
Fische

## Die Mondscheibe

gibt an, wie viele Stunden der Mond vor und nach Mitternacht, von 6 Uhr Abends bis 6 Uhr Morgens gerechnet, scheint. Der äußere Kreis zeigt die Ab- und Zunahme des Mondes; der zweite gibt die Tage, der dritte die Stunden und der vierte die Minuten nach dem Neumond an, bis auf den Tag, den man wissen will. Ist z. B. der Mond 8 Tage alt, so scheint er 6 St. 24 M. vor Mitternacht; ist er 22 Tage alt, so scheint er wieder 6 St. 24 M., aber erst nach Mitternacht.

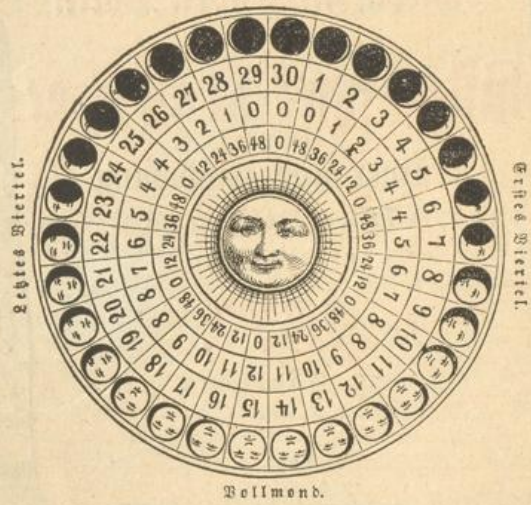


**Die Aspekten.**

Zusammenkunft
Gegenschein
Dritterschein
Vierterschein
Sechsterschein
Aufsteig.
Absteig.

**Himmelskörper.**

Sonne
Venus
Merkurius
Mond
Saturnus
Jupiter
Mars
Uranus

## Kalender der Juden (das 5637. Jahr der Welt und der Anfang des 5638. Jahres).

| 1877. | | |
|---|---|---|
| 15. Jan. | 1. | Schebat des Jahres 5637. |
| 14. Febr. | 1. | Adar. |
| 26. „ | 13. | „ Fasten-Esther. |
| 27. „ | 14. | „ Purim o. Hamansf. |
| 28. „ | 15. | „ Schuschan-Purim. |
| 15. März | 1. | Nisan. [Anfang*. |
| 29. „ | 15. | „ Passah oder Osterfest |
| 30. „ | 16. | „ Zweites Fest*. |
| 4. April | 21. | „ Siebentes Fest*. |
| 5. „ | 22. | „ Passah, Ende*. |
| 14. „ | 1. | Ijar. [Schülerfest. |
| 1. Mai | 18. | „ Lag B'omer oder |
| 13. „ | 1. | Sivan. |

| 1877. | | |
|---|---|---|
| 18. Mai | 6. | Sivan Wochen- o. Pfingstf.* |
| 19. Mai | 7. | „ Zweites Fest*. |
| 12. Juni | 1. | Thamuz. [Eroberung. |
| 28. „ | 17. | „ Fasten. Tempel- |
| 11. Juli | 1. | Ab. [brennung. |
| 19. „ | 9. | „ Fasten. Tempel-Ver |
| 10. Aug. | 1. | Elul. |
| 8. Sept. | 1. | Tischri. Neujahrsfest* |
| 9. „ | 2. | „ Zweites Fest*. |
| 10. „ | 3. | „ Fasten-Gedaljah. |
| 17. „ | 10. | „ Versöhnungsfest oder lange Nacht*. |
| 22. „ | 15. | „ Laubhüttenfest*. |

| 1877. | | |
|---|---|---|
| 23. Sept. | 16. | Tischri. Zweites Fest*. |
| 28. Sept. | 21. | Tischri Palmenfest. |
| 29. „ | 22. | „ Versammlung od. Laubhütten Ende*. |
| 30. „ | 23. | „ Gesetzesfreude*. |
| 8. Okt. | 1. | Marcheschwan. |
| 7. Nov. | 1. | Kislev. |
| 1. Dez. | 25. | „ Tempelweihe. |
| 7. „ | 1. | Tebeth. |
| 16. „ | 10. | „ Fasten. Bel. Jeruf. |
| **1878.** | | |
| 5. Jan. | 1. | Schebat. |

Die mit * bezeichneten Feste werden strenge gefeiert.

| 1877. I. Monat. | Katholischer u. Evangelischer **Januar** oder **Jänner.** | ☾- u. Planetenlauf. Muthmaßl. Witter. | Mond- Aufg. U. M. | Mond- Untg. U. M. | Sonnen- Afg. U.M | Sonnen- Utg. U.M |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Mont. | 1 **Neujahr, JESUS.** | hell | 6. 14 | 9. 28 | 7. 54 | 4. 14 |
| Dienst. | 2 Abel, Seth, Mach. | ☾□♂ | 7. 44 | 9. 55 | 7. 54 | 4. 15 |
| Mittw. | 3 Isaak, Genovefa, En. | ☾☌♄, ☿ im ♒ | 9. 10 | 10. 17 | 7. 54 | 4. 16 |
| Donn. | 4 Elias, Tit. Dafra. | ☾i♉, ☾□♃, ☾ | 10. 32 | 10. 34 | 7. 54 | 4. 17 |
| Freit. | 5 Simeon, Telesphorus | (□♀ | 11. 50 | 10. 49 | 7. 53 | 4. 19 |
| Samst. | 6 **Hl. 3 Kön.** Ersch. Ch. | ☾ 2, 49 n. | Vorm. | 11. 5 | 7. 53 | 4. 20 |

**1.** Pr. Der Prophet gilt nichts in seinem Vaterland. Luk. 4, 14-24.
Kath. Jesus 12 Jahre alt. Luk. 2, 42-52. (Röm. 12, 1-5.)

Nach weisen Sprüchen und guten Lehren,

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Sonnt. | 7 **G. 1. n. E.** Isidorus | frisch. | 1. 7 | 11. 20 | 7. 53 | 4. 21 |
| Mont. | 8 Erhardus, Severinus | ☾□☿ | 2. 24 | 11. 38 | 7. 52 | 4. 22 |
| Dienst. | 9 Julianus, M. | ☾☌♂, ☿☌♃ | 3. 39 | Nachm. | 7. 52 | 4. 23 |
| Mittw. | 10 Samson, P. E. Agatha | ☾□♄ | 4. 52 | 0. 31 | 7. 52 | 4. 24 |
| Donn. | 11 Gerson, Felicitas H. | ☾☌♀ ☾☌♃ | 5. 59 | 1. 10 | 7. 51 | 4. 25 |
| Freit. | 12 Asarias, Reinhard | ☾( ☿ Abendst. in gr. Ausw. | 6. 57 | 2. 0 | 7. 51 | 4. 26 |
| Samst. | 13 XXTag, Hilarius | kalt. | 7. 43 | 3. 0 | 7. 51 | 4. 28 |

**2.** Pr. Christus und die Samariterin. Joh. 4, 5—30.
Kath. Die Hochzeit zu Kana. Joh. 2, 1-11. (Röm. 12, 6-16.)

Soll man handeln, nicht blos hören.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Sonnt. | 14 **G. 2.** Felix, Priester | 1, 59 n. ♂ in ♒ | 8. 18 | 4. 8 | 7. 50 | 4. 29 |
| Mont. | 15 Maurus, J. E., Itha | ☾Erdferne | 8. 45 | 5. 18 | 7. 50 | 4. 31 |
| Dienst. | 16 Marcellus, Hein. | ☾☌☿ unfreundlich | 9. 5 | 6. 28 | 7. 49 | 4. 32 |
| Mittw. | 17 Antonius, Ulfried | ☾□♂, ☿ in ♒ | 9. 21 | 7. 37 | 7. 48 | 4. 33 |
| Donn. | 18 Prisca, Jgn. Meinr. | ☾i♌, ♂ ♄, ☿ rch | 9. 34 | 8. 45 | 7. 47 | 4. 35 |
| Freit. | 19 Martha, Sara, C. | ☾□♃, ☿ in ♒ | 9. 47 | 9. 54 | 7. 46 | 4. 36 |
| Samst. | 20 Fab. Seb., Ariovist | ☾□♀ | 10. 0 | 11. 4 | 7. 45 | 4. 38 |

**3.** Pr. Die Verwandten Jesu. Matth. 12, 46—50.
Kath. Hauptmanns Knecht. Matth. 8, 1-13. (Röm. 12, 17-21.)

Hüt' dich, auch kleine Thiere stechen!

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Sonnt. | 21 **G. 3.** Agnes, Adelstan | 4. 25 n. | 10. 14 | Vorm. | 7. 44 | 4. 40 |
| Mont. | 22 Vincentius, Anast. | | 10. 29 | 0. 16 | 7. 43 | 4. 41 |
| Dienst. | 23 Emerentia, Raid. | ☾□☿ | 10. 50 | 1. 33 | 7. 42 | 4. 43 |
| Mittw. | 24 Timotheus, Erich, A. | Schneefall | 11. 19 | 2. 54 | 7. 41 | 4. 44 |
| Donn. | 25 Pauli Bek., Poppo | ☾☌♂, ☾□♄ | 11. 58 | 4. 15 | 7. 40 | 4. 46 |
| Freit. | 26 Policarpus, P. | ☾☌♄, ☿☌♂ | Nachm. | 5. 29 | 7. 39 | 4. 47 |
| Samst. | 27 Joh. Chrysost., Karol. | ☾☌♀ (w. Morgst. | 2. 6 | 6. 33 | 7. 38 | 4. 49 |

**4.** Pr. Der Blindgeborne. Joh. 9, 1—38.
Kath. Vom Weinberge. Math. 20, 1-16. (1. Cor. 9, 24-29 u. 10, 1-5.)

Ein kleiner Feind kann oft sich rächen.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Sonnt. | 28 **G. Sept.** Karl, Charl. | ☿✳♂ Regen | 3. 35 | 7. 20 | 7. 36 | 4. 51 |
| Mont. | 29 Valer., Rüger, Franz | 9, 10 v. ☾ in Erdnähe | 5. 8 | 7. 52 | 7. 35 | 4. 52 |
| Dienst. | 30 Adelgunde, Martha | (☾☌☿, ♂✳ | 6. 39 | 8. 16 | 7. 34 | 4. 54 |
| Mittw. | 31 Virgil., Petrus, M. | ☾i♉, ♂□♄ | 8. 5 | 8. 36 | 7. 33 | 4. 56 |

☞ Nach den Bestimmungen der General-Synode vom Jahre 1834 steht es den evang.-prot. Geistlichen frei, bis zum 1. Advent d. J. über die angegebenen Evangelien oder über frei gewählte Texte zu predigen. Die Texte für die Nachmittagspredigten sind immerwährend freigegeben.

**15—17. Januar 1871. Dreitägige Schlacht bei Belfort.**

**18. Januar 1871. Ausrufung des deutschen Kaiserreiches.**

## Nützliche Regeln

für Haus- und Bauersleute und **Anmerkungen** zu den zwölf monatlichen Himmelszeichen.

In welchem Zeichen du geboren bist, Kann dir gleichgiltig sein, o frommer Christ. Die Zeichen deuten Böses dir u. Gutes. Thu' dieses und laß jenes festen Muthes, So kannst du trotzen jeglichem Geschick, Und immer dir versprechen Heil und Glück.

**Kinder im ♒ geboren.**

Im Wassermann ein Kind geboren, bei dem war nie der Spruch verloren: „Nur der ist weise und beglückt, der sich in seinen Zustand schickt, zufrieden ist mit seiner Welt und sich in ihr allein gefällt. Wer das nicht kann, der ist für wahr — und bleibt sein Leben lang — ein Narr."

Vinzenzen Sonnenschein Bringt viel Korn u. Wein.

Im Januar viel Regen, wenig Schnee Thut Bergen, Thälern und Bäumen weh.

**Tageslänge.**

| | | | |
|---|---|---|---|
| d. 7. 8 | St. 28 | M. |
| = 14. 8 | = 39 | = |
| = 21. 8 | = 56 | = |
| = 28. 9 | = 15 | = |

| 1877. II. Monat. | Katholischer u. Evangelischer Februar oder Hornung. | ☾- u. Planetenlauf. Muthmaßl. Witter. | Mond- Aufg. U. M. | Mond- Untg. U. M. | Sonnen- Asg. U. M. | Sonnen- Utg. U. M. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Donn. | 1 Brigitta, Ignatius | ☾□♃ kalte | 9. 28 | 8. 53 | 7. 31 | 4. 57 |
| Freit. | 2 Mar. Lichtm. M. R. | ♀ in ♒ zurück. | 10. 48 | 9. 8 | 7. 30 | 4. 59 |
| Samst. | 3 Blasius, Hadelin | ☾□♀ Winde. | Vorm. | 9. 24 | 7. 28 | 5. 0 |
| **5.** Pr. Lazari Auferweckung. Joh. 11, 1—45. Kath. Vom Säemann. Luk. 8, 4-15. (2.Cor. 11, 19-33 u. 12, 1-9.) | | | Wer Gott und Welt vereinigen kann, | | | |
| Sonnt. | 4 G. Sex. Cleophea, And. | ☾ 5, 31 v. ☾□☿ | 0. 8 | 9. 42 | 7. 27 | 5. 2 |
| Mont. | 5 Agatha, Bertolf | | 1. 26 | 10. 4 | 7. 26 | 5. 4 |
| Dienst. | 6 Dorothea, Alder. | frisch | 2. 41 | 10. 31 | 7. 24 | 5. 5 |
| Mittw. | 7 Richard, Romuald | ☾☌♂, □♄, ☿ dir. | 3. 52 | 11. 8 | 7. 23 | 5. 7 |
| Donn. | 8 Salomon, Joh. v. M. | ☽☾☌♃, ☿☌♀ | 4. 53 | 11. 55 | 7. 21 | 5. 9 |
| Freit. | 9 Apollonia. | | 5. 44 | Nachm. | 7. 19 | 5. 10 |
| Samst. | 10 Scholastika, Desider. | ♀ in ♓ | 6. 21 | 1. 57 | 7. 18 | 5. 12 |
| **6.** Pr. Zachäus. Luk. 19, 1—10. Kath. Jesus verkündet sein Leiden. Luk. 18, 31-43. (1.Cor. 13, 1-13.) | | | Den heiß' ich einen selg'en Mann, | | | |
| Sonnt. | 11 G. Est. Hrn. Fastn. | ☾ in Erdf., ☾☌☿ | 6. 49 | 3. 8 | 7. 16 | 5. 14 |
| Mont. | 12 Susanna, Ludan, E. | ( ☾☌♀ | 7. 11 | 4. 18 | 7. 14 | 5. 15 |
| Dienst. | 13 Fastnacht. Leander S. | 9. 30 v. ☿ in ♓ ab- | 7. 28 | 5. 27 | 7. 13 | 5. 17 |
| Mittw. | 14 Ascherm., Brig. Ign. | ☾im ♌, ☾☌♃ | 7. 42 | 6. 36 | 7. 11 | 5. 19 |
| Donn. | 15 Faustinus, Siegfried | ☾□♂ wech- | 7. 55 | 7. 45 | 7. 9 | 5. 20 |
| Freit. | 16 Juliana, Onesimus | ☾□♃, ♃ ✱ ♋ | 8. 8 | 8. 55 | 7. 7 | 5. 22 |
| Samst. | 17 Donatus, Weid | selnd. | 8. 22 | 10. 5 | 7. 6 | 5. 24 |
| **7.** Pr. Die Mutter der Söhne Zebedäi. Matth. 20, 17—23. Kath. Versuchung Christi. Matth. 1, 4—11. (2. Cor. 6, 1-10.) | | | Des Lebens Frühling ist ein flüchtig Wesen, | | | |
| Sonnt. | 18 G. Inv. Gabinus, S. | ☾ in ♓ | 8. 37 | 11. 18 | 7. 4 | 5. 25 |
| Mont. | 19 Gubertus, Mansuet. | ☾□☿ | 8. 55 | Vorm. | 7. 2 | 5. 27 |
| Dienst. | 20 Eucharius, El. | ☾□♀ | 9. 19 | 0. 36 | 7. 0 | 5. 29 |
| Mittw. | 21 Quat. Felix, Elenore | 4, 47 v. ☿ Morgst. in | 9. 52 | 1. 55 | 6. 58 | 5. 30 |
| Donn. | 22 Petri Stuhlfeier | ☽☾☌♂ größter | 10. 39 | 3. 11 | 6. 56 | 5. 32 |
| Freit. | 23 Josua, Florid., Reinh. | ☾☌♃ Ausw. | 11. 43 | 4. 18 | 6. 55 | 5. 33 |
| Samst. | 24 Mathias, Nicephorus | feucht | Nachm. | 5. 12 | 6. 53 | 5. 35 |
| **8.** Pr. Jesus weint über Jerusalem. Luk, 19, 41—48. Kath. Verkl'ärung Christi. Matth. 17, 1—9. (1. Thess. 4, 1—7.) | | | Will schnell bemerkt und rasch ergriffen sein. | | | |
| Sonnt. | 25 G. Rem. Victorinus | [☾☌♀ hell | 2. 31 | 5. 50 | 6. 51 | 5. 36 |
| Mont. | 26 Nestor, Alexius | ☾ in ☾☌☿ | 4. 2 | 6. 18 | 6. 49 | 5. 37 |
| Dienst. | 27 Sara, Leander | 7, 48 v. ☾ in ☾i.♌ | 5. 29 | 6. 39 | 6. 47 | 5. 39 |
| Mittw. | 28 Leander | (sichtb. ☾ Finsterniß. | 6. 55 | 6. 56 | 6. 45 | 5. 40 |

Wer die Zeit verklagen will, daß sie gar zu früh verraucht, der verlage sich nur selbst, daß er sie nicht früher braucht.

**1. Februar 1871.**
**80,000 Franzosen fliehen in die Schweiz.**
**15. Februar 1871.**
**Belfort übergibt sich den Deutschen.**

**Anmerkungen.**

Scheint an der Fastnacht die Sonne, so gerathen gemeiniglich Korn und Weizen wohl so wie auch die Erbsen.

Matheis bricht Eis, find't er keins, so macht er eins. Wenn die Katz im Februar liegt in der Sonne, so muß sie im März wieder hinter den Ofen.

Ist der Hornung warm, muß man auf seinen Heuvorrath acht geben, weil ein spätes Frühjahr zu erwarten ist.

Wenn es an Petri Stuhlfeier kalt ist, soll die Kälte noch 40 Tg. währen.

Viele Nebel im Februar,
Bringen Regen oft im Jahr.
Lichtmeß i. Klee,
Ist Ostern im Schnee.
Lichtm. dunkel,
Macht d. Bauer zum Junker.

**Kinder im ♒ geboren.**

Hast du im Fisch das Licht d. Welt erblickt, So werd' ein Mann, so freundlich, als geschickt, Der gern den Armen von dem Seinen gibt, den wahren Freund u. die Gesellschaft liebt, Und Jedermann gern dient; so wirst du reich Und in d. Unternehmen fest zugleich.

**Tageslänge.**

| | | | |
|---|---|---|---|
| d. 4. | 9 St. | 35 M | |
| „ 11. | 9 „ | 58 „ | |
| „ 18. | 10 „ | 21 „ | |
| „ 25. | 10 „ | 45 „ | |

Du sollst reden, nicht viel, aber sinnig;
Du sollst beten, nicht lang, aber innig;
Du sollst handeln, nicht rasch, aber kräftig;
Du sollst lieben, nicht laut, aber heftig;
Du sollst leben, nicht wild, aber heiter;
Du sollst dir helfen, Gott hilft dir weiter.

Friedr. Halm.

| 1877. III. Monat | Katholischer u. Evangelischer **März** oder **Lenzmonat.** | ☾- u. Planetenlauf. Muthmaßl. Witter. | Mond- Aufg. U. M. | Mond- Untg. U. M. | Sonnen- Afg. U. M | Sonnen- Utg. U. M |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Donn. | 1 Albinus, Donatus | ☿ ☌ ♃, ♄ ☌ ● | 8. 19 | 7. 12 | 6. 44 | 5. 42 |
| Freit. | 2 Simplicius, Cradda B. | ☌ in ♒, ♃ in ♒ | 9. 43 | 7. 27 | 6. 42 | 5. 44 |
| Samst. | 3 Kunigunda, Kunihilde | schön | 11. 5 | 7. 45 | 6. 40 | 5. 45 |
| **9.** | Pr. Jesus verkündet seinen Tod. Joh. 12, 20–33. Kath. Jesus treibt Teufel aus. Luk. 11, 14-28. (Ephes. 5, 1-9.) | | Faulenz und schrei, Du bekommst für zwei; | | | |
| Sonnt. | 4 G. Vc. Adrian, Kasimir | ☿ ✳ ♃ | Vorm. | 8. 6 | 6. 38 | 5. 47 |
| Mont. | 5 Friedrich, Eusebius | ☾ 10. 32 n. ☾ □ ☿ ☿ in ♒ | 0. 23 | 8. 32 | 6. 36 | 5. 48 |
| Dienst. | 6 Fridolin, Oldegar | | 1. 38 | 9. 4 | 6. 34 | 5. 50 |
| Mittw. | 7 Perpetua, F. | ☽ ( ☾ □ ♀, □ ♄ | 2. 45 | 9. 47 | 6. 32 | 5. 51 |
| Donn. | 8 Philemon, Ger. | ☾ ☌ ☌, ☾ ☌ ♃ | 3. 39 | 10. 42 | 6. 30 | 5. 53 |
| Freit. | 9 40 Ritter, Franziska | freundlich | 4. 21 | 11. 47 | 6. 28 | 5. 55 |
| Samst. | 10 Alexander, 40 Märt. | ☾ i. Erdf., ☿ ✳ ♃ | 4. 52 | Nachm. | 6. 26 | 5. 56 |
| **10.** | Pr. Jesus betet für sich. Joh. 17, 1–5. Kath. Jesus speist 5000 Mann. Joh. 6, 1-15, (Gal. 4, 22-31.) | | Arbeit und schweige, Dir bleibt die Neige. | | | |
| Sonnt. | 11 G. Laet. Sophron, Cyr. | ☿ in ♒ | 5. 16 | 2. 5 | 6. 24 | 5. 58 |
| Mont. | 12 Gregorius, Friederike | angenehm | 5. 35 | 3. 14 | 6. 22 | 5. 59 |
| Dienst. | 13 Desiderius, Euph., E. | ☾ i. ♌, ☾ ☌ ☿ u. ♀ | 5. 50 | 4. 24 | 6. 19 | 6. 1 |
| Mittw. | 14 Zacharias, Mathilde | ☾ ☌ ♄ | 6. 4 | 5. 34 | 6. 17 | 6. 2 |
| Donn. | 15 Matthäus, Longinus | 3 25 v. ● Ringförmige Finsterniß. | 6. 17 | 6. 44 | 6. 15 | 6. 4 |
| Freit. | 16 Heribert, Henriette | ☾ □ ☌, ♀ ☌ ♄ | 6. 30 | 7. 54 | 6. 13 | 6. 5 |
| Samst. | 17 Gertrud, Patricius | bedeckt | 6. 44 | 9. 7 | 6. 11 | 6. 7 |
| **11.** | Pr. Konfirmationstag. Kath. Juden wollen ꝛc. Joh. 8, 46-59. (Hebr. 9, 11-15.) | | Lust will stets im Glanze funkeln, | | | |
| Sonnt. | 18 G. Jud. Gabriel, Ans. | Regen | 7. 1 | 10. 24 | 6. 9 | 6. 8 |
| Mont. | 19 Joseph Nährvater | ☿ ☌ ♄ | 7. 23 | 11. 44 | 6. 7 | 6. 10 |
| Dienst. | 20 Emanuel, Joachim | ● i. ♈ Tag u. Nacht gleich Frühlings-Anfang | 7. 53 | Vorm. | 6. 5 | 6. 11 |
| Mittw. | 21 Benedikt, Relinda | ☾ □ ☿, ♀ u. ♄ | 8. 35 | 1. 1 | 6. 3 | 6. 13 |
| Donn. | 22 Geb. d. Deutsch. Kaisers | 1. 41 n. ☽ ☾ ♃ □ ● | 9. 30 | 2. 10 | 6. 0 | 6. 14 |
| Freit. | 23 Serapion, Viktor., E. | ☾ ☍ ☌, | 10. 41 | 3. 6 | 5. 58 | 6. 16 |
| Samst. | 24 Pigmen., 7 Schm. M. | ☌ ✳ ♄ | Nachm. | 3. 47 | 5. 56 | 6. 17 |
| **12.** | Pr. Jesus betet für seine Jünger. Joh. 17, 6–26. Kath. Christi Einzug ꝛc. Matth. 21, 1-9. (Ph. 2, 5-11.) | | Liebe duftet auch im Dunkeln. | | | |
| Sonnt. | 25 G. Palmtag. Mar. Ver. | Sturm | 1. 33 | 4. 18 | 5. 54 | 6. 19 |
| Mont. | 26 Israel | ☾ i. Erdnh., ☿ ☌ ♀ | 3. 0 | 4. 41 | 5. 52 | 6. 20 |
| Dienst. | 27 Ruprecht, B., Berengar | ☾ im ♌, ☾ ☍ ♄ | 4. 26 | 5. 0 | 5. 50 | 6. 22 |
| Mittw. | 28 Priscus, Günth., M. | ☾ ☍ ☿, ☍ ♀ □ | 5. 49 | 5. 16 | 5. 48 | 6. 23 |
| Donn. | 29 Gründonn. Eustachius | 6. 20 v. ☿ i. ♈ ( ♃ | 7. 12 | 5. 32 | 5. 46 | 6. 25 |
| Freit. | 30 Charfreitag Guidon | ☾ □ ☌, ☿ □ ♃ | 8. 35 | 5. 49 | 5. 44 | 6. 26 |
| Samst. | 31 Balbina, Corn., Rom. | ( ♀ in ♈ | 9. 57 | 6. 8 | 5. 42 | 6. 28 |

Freunde sind in Wohlfahrt lieblich und behülflich in der Noth,
Ohne wackere Freunde leben, ist fürwahr der halbe Tod.

Nehmt dem geschminkten Glück den prahlerischen Schein,
Der König wird ein Sklav, der Reiche dürftig sein.
Wieland.

Witz ohne Herzenseinigkeit,
Das ist das eitle Herzeleid.

**1. März 1871. Einzug der Deutschen in Paris.**

**Anmerkungen.**

Wenn es im März donnert, so soll's ein fruchtbar Jahr bedeuten. Den Märzmonat wünscht d. Landmann trocken, aber nicht zu warm. Trockener März füllt die Keller. Märzenstaub bringt Gras u. Laub. Wenn der März naß u. der April trocken ist, so geräth das Futter nicht. Märzenschnee schadet der Frucht und dem Weinstock. Wenn die wilden Kraniche bald kommen, so wird es bald Sommer; So viel Nebel im März, so viel Wetter im Sommer; so viel Thau im März, so viel Reif um Pfingsten u. Nebel im Augustmonat.

**Kinder im ♈ geboren.**

Soll ich dir dieses Zeichen deuten, So sei beherzt, nicht zänkisch mit den Leuten. Heirath ein frommes Weib aus dieser Welt, Sei selber fromm, so mehrt sich Gut u. Geld, Trau nie des Glücks veränderlichen Blicken, Und suchest du der Herrn und Knechte Gunst, So lerne früh die Kunst, Dich in die Zeit zu schicken.

**Tageslänge.**

d. 4. 11 St. 9 M.
= 11. 11 = 34 =
= 18. 11 = 59 =
= 25. 12 = 25 =

| 1877. IV. Monat. | Katholischer u. Evangelischer April oder Ostermonat. | ☾- u. Planetenlauf Muthmaßl. Witter. | Mond- Aufg. U. M. | Mond- Untg. U. M. | Sonnen- Afg. U. M | Sonnen- Utg. U. M |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **13.** | Pr. Auferstehung des Herrn. Joh. 20, 1—18. Kath. Auferstehung Christi. Mark. 16, 1-7 (1. Kor. 5, 7-8.) | | Wer das Leben liebt, und den Tod nicht scheut, | | | |
| Sonnt. 1 | G. Osterfest. Hugo, B. | ♀□♃ | 11. 15 | 6. 31 | 5. 40 | 6. 29 |
| Mont. 2 | 2. Osterfest Abundus | Regen | Vorm. | 7. 1 | 5. 37 | 6. 31 |
| Dienst. 3 | Venatius, Rich., B. | ☾□♄ [♂♃ | 0. 27 | 7. 42 | 5. 35 | 6. 32 |
| Mittw. 4 | Ambrosius, Isidor | ☾ ◡, ☾□♀, | 1. 30 | 8. 33 | 5. 33 | 6. 34 |
| Donn. 5 | Martialis, Vinzenz | ☾ 6, n. ☾□☿ | 2. 18 | 9. 33 | 5. 31 | 6. 35 |
| Freit. 6 | Irenäus, Celsus | ☿♂☉ w. Abendst. | 2. 52 | 10. 40 | 5. 29 | 6. 37 |
| Samst. 7 | Cölestinus, Egesipp. | ☾i. Erdf. (☾♂♂ | 3. 19 | 11. 50 | 5. 27 | 6. 38 |
| **14.** | Pr. Jesus das Brod des Lebens. Joh. 6, 35—40. Kath. Jesus erscheint den Jüngern. Joh. 20, 19-31. (1 Joh. 5, 4-10.) | | Geht fröhlich und frei durch die sinkende Zeit. | | | |
| Sonnt. 8 | G. Quas. Maria i. Eg. | stürmisch | 3. 40 | Nachm. | 5. 25 | 6. 40 |
| Mont. 9 | Sybilla, Adolar | | 3. 56 | 2. 10 | 5. 23 | 6. 41 |
| Dienst. 10 | Ezechiel, Daniel, M. | ☾ im ♌, ☾♂♃ | 4. 9 | 3. 20 | 5. 21 | 6. 43 |
| Mittw. 11 | Leo, Papst | naß [☿ in ♋ | 4. 23 | 4. 29 | 5. 19 | 6. 44 |
| Donn. 12 | Julius, Zen., Jukun. | ☾♂♀, □♃, | 4 37 | 5. 40 | 5. 17 | 6. 46 |
| Freit. 13 | Egesippus, Anton | 6, 20 n. [□♂ | 4. 52 | 6. 53 | 5. 15 | 6. 47 |
| Samst. 14 | Tiburtius, Val., Max. | ☾♂☿, □♂, ☿ | 5. 8 | 8. 10 | 5. 13 | 6. 49 |
| **15.** | Pr. Bittet, so wird euch gegeben. Matth. 7, 7—14. Kath. Vom guten Hirten. Joh. 10, 11-16. (1. Petri 2, 21-25.) | | Siehst du an einem Freund sich Fehler zeigen, | | | |
| Sonnt. 15 | G. Miser. Plympius | ☿△♃ feuchte | 5. 28 | 9. 30 | 5. 11 | 6. 50 |
| Mont. 16 | Daniel, Aaron, Callist | Winde. | 5. 56 | 10. 51 | 5. 9 | 6. 51 |
| Dienst. 17 | Rudolf, A. | ☾□♄, ♂ in ♋ | 6. 34 | Vorm. | 5. 7 | 6. 52 |
| Mittw. 18 | Ulmann, Eduard, El. | ☾♂♃ | 7. 25 | 0. 3 | 5. 5 | 6. 53 |
| Donn. 19 | Werner, Leo | ☉ in ♋ [♂ | 8. 33 | 1. 2 | 5. 3 | 6. 55 |
| Freit. 20 | Hermann, Sulp., V. | 8, 8 n. ☾□♀, ♂ | 9. 52 | 1. 48 | 5. 1 | 6. 56 |
| Samst. 21 | Anselm B., Adolar | ☾□☿, (♃retr. | 11. 16 | 2. 21 | 5. 0 | 6. 58 |
| **16.** | Pr. Wer mir nachfolgen will. Mark. 8, 34—38. Kath. Noch eine kleine Weile ꝛc. Joh. 16, 16-22. (1 Petr. 2, 11-19.) | | So denk' an deren zwei, die dir sind selber eigen. | | | |
| Sonnt. 22 | G. Jubil. Cajus | ☾ in Erdnähe. | Nachm. | 2. 45 | 4. 58 | 7. 0 |
| Mont. 23 | Georg, Ad. | ☾i. ♌, ♃△☉, ♀ | 2. 4 | 3. 4 | 4. 57 | 7. 1 |
| Dienst. 24 | Albrecht, Fidelius | ☾♌♄ (in ♋ | 3. 26 | 3. 20 | 4. 55 | 7. 2 |
| Mittw. 25 | Marc. Evang., Erwin | ☾□♃, ♂□☉ | 4. 46 | 3. 36 | 4. 53 | 7. 4 |
| Donn. 26 | Anacletus, Marcus | schön | 6. 7 | 3. 52 | 4. 51 | 7. 5 |
| Freit. 27 | Anastasius P., Zitha | ☾ 5, 7 n. ☾♌♀ | 7. 30 | 4. 10 | 4. 49 | 7. 7 |
| Samst. 28 | Vitalis, Rudibert | ☾□♂, ♀△♃ | 8. 51 | 4. 32 | 4. 48 | 7. 8 |
| **17.** | Pr. Fürchte dich nicht, du kleine Heerde. Luk. 12, 32—38. Kath. Verheißung des Trösters. Joh. 16, 5—15. (Jac. 1, 17—21.) | | Arme Hoffart ist ein Spott, Reiche Demuth liebet Gott. | | | |
| Sonnt. 29 | G. Cantate. Petrus | ☾♌☿, ☿ in ♋ | 10. 8 | 5. 0 | 4. 46 | 7. 10 |
| Mont. 30 | Quirinus, Katharina | ☾□♄ unstet | 11. 15 | 5. 36 | 4. 44 | 7. 11 |

Sei gut und laß von dir die Menschen Böses sagen,
Wer eigen Schuld nicht trägt, kann leichter fremde tragen.

Das ist kein Glück, was ich mit Herzblut muß erkaufen,
Glück ist, was zu mir kommt, und läßt nach sich nicht laufen.

**18. April 1864. Erstürmung der Düppeler Schanzen.**

**Anmerkungen.**

Wenn d. Palmtag schön, hell und klar,
Wird es geben ein fruchtbar Jahr.

Der April ist nicht zu gut,
er beschneit dem Ackermann den Hut.

Wird es am Ostertag regnen, so soll's dürre Futter gerathen.

Dürrer April
Ist nicht des Bauern Will';
Aprilen-Regen,
Ist ihm gelegen.

St. Georg und Marx,
Dräuen oft viel Args.

Wenn die Reben um Georgi sind noch blutt u. blind, Sol' sich freuen Mann, Weib und Kind.

Der März im Schwanz,
Der April ganz
Der Mai neu.
Halten selten Treu.

**Kinder im ♋ geboren.**

Bist du in dem Zeichen des Stiers geboren,
somerke Freund dir's: Bestelle dein Landgut mit Fleiß, Sei froh im geselligen Kreis, Dir heitre den traurigen Blick, Die liebliche süße Musik, Das herrliche Sternengezelt, Sei Bild dir der künftigen Welt,
Und liebst du ein Mädchen, so sei
Es bis in den Tod dir getreu.

**Tageslänge.**

d. 1. 12 St. 49 M.
„ 8. 13 „ 15 „
„ 15. 13 „ 39 „
„ 22. 14 „ 2 „
„ 29. 14 „ 24 „

| 1877. V. Monat. | Katholischer u. Evangelischer **Mai, Wonnemonat.** | ☾- u. Planetenlauf. Muthmaßl. Witter. | Mond- Aufg. U. M. | Mond- Untg. U. M. | Sonnen- Afg. U. M | Sonnen- Utg. U. M |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Dienst. 1 | Philipp Jakob, Walb. | ☽ trüb | Vorm. | 6. 22 | 4. 42 | 7. 12 |
| Mittw. 2 | Athanasius, Sigm. | ☾☌♃ | 0. 9 | 7. 20 | 4. 41 | 7. 14 |
| Donn. 3 | † Erfindung, Friso | ☿ Abendst. i. gr. Au[illegible] [☌ | 0. 50 | 8. 26 | 4. 39 | 7. 15 |
| Freit. 4 | Monica, Florian | ☾□♀[☾☌ | 1. 20 | 9. 35 | 4. 37 | 7. 17 |
| Samst. 5 | Gotthard, Pius V. | ☾ 11, 00 v. ☾i. Erdf. | 1. 44 | 10. 44 | 4. 36 | 7. 18 |
| **18.** | Pr. Was ihr bitten werdet in meinem Namen. Joh. 14, 13-21. Kath. Vom Gebet. Joh. 16, 23—30. (Jak. 1, 22—27.) | | Willst du geliebt sein von Leuten, | | | |
| Sonnt. 6 | G. Rog. Joh. v. d. Pf. | bedeckt [☌ ● | 2. 2 | 11. 53 | 4. 34 | 7. 20 |
| Mont. 7 | Cyriacus, Gottfried | ☾i.♌ ♀□♂, ♀ | 2. 16 | Nachm. | 4. 33 | 7. 21 |
| Dienst. 8 | Mich. Ersch., Stanis. | ☾☌♄ (w. Abndst. | 2. 29 | 2. 11 | 4. 31 | 7. 22 |
| Mittw. 9 | Beatus, Hiob, Gregor | ☾□♃ | 2. 43 | 3. 22 | 4. 30 | 7. 24 |
| Donn. 10 | Chr. Himmelf. Gord. | Regen | 2. 57 | 4. 35 | 4. 28 | 7. 25 |
| Freit. 11 | Ericus, Luise, Adolf | ♉□● | 3. 12 | 5. 50 | 4. 27 | 7. 27 |
| Samst. 12 | Pankratius, Wibert | | 3. 31 | 7. 9 | 4. 25 | 7. 28 |
| **19.** | Pr. Das Reich Gottes inwendig im Menschen. Luk. 17, 20-30. Kath. Wenn der Tröster ꝛc. Joh. 15, 26.27 u. 16, 1-4 (1 Petr. 4, 7-11.) | | So höre, lerne, schweig' und laß' das Streiten. | | | |
| Sonnt. 13 | G. Exaudi. Servatius | ● 6, 1 v. ☾☌♀, ☾ | 3. 57 | 8. 30 | 4. 24 | 7. 29 |
| Mont. 14 | Epiphan, Bonifazius | ☾☌☿(□☌ | 4. 32 | 9. 47 | 4. 23 | 7. 31 |
| Dienst. 15 | Sophia, Torquatus | ☾☾□♄, ☿ retr. | 5. 19 | 10. 54 | 4. 21 | 7. 32 |
| Mittw. 16 | Peregrin, Joh. v. Nep. | ☾☌♃ | 6. 23 | 11. 45 | 4. 20 | 7. 33 |
| Donn. 17 | Bruno, Ubald, Emma | ☾ i. Erdn. ♀ i. ♊ | 7. 39 | Vorm. | 4. 19 | 7. 35 |
| Freit. 18 | Chrischona, Venant. | unfreundlich | 9. 4 | 0. 22 | 4. 17 | 7. 36 |
| Samst. 19 | Potentiana, Cöl. | ☾□♀, ♌☌ | 10. 30 | 0. 49 | 4. 16 | 7. 37 |
| **20.** | Pr. Ausgießung des heiligen Geistes. Apostelgesch. 2, 1—18. Kath. Wer mich liebt ꝛc. Joh. 14, 23-31. (Apg. 2, 1-11.) | | Je mehr die Frau dem Manne gleicht, | | | |
| Sonnt. 20 | G. Pfingstfest. Christian | ☽ 1, 28 v. ☾ im ♉ | 11. 54 | 1. 10 | 4. 15 | 7. 38 |
| Mont. 21 | 2. Pfingstf. Constantin | ☾☌♄ (● i. | Nachm. | 1. 28 | 4. 14 | 7. 40 |
| Dienst. 22 | Helene, Julie, Ritta | ☾□♃ (♊ | 2. 32 | 1. 44 | 4. 13 | 7. 41 |
| Mittw. 23 | Quat. Desiderius | ☿☌♀ | 3. 51 | 1. 59 | 4. 12 | 7. 42 |
| Donn. 24 | Johanna, Esther | mild | 5. 11 | 2. 15 | 4. 11 | 7. 43 |
| Freit. 25 | Urban, Gregor. | [wird Morgenstern | 6. 31 | 2. 34 | 4. 10 | 7. 44 |
| Samst. 26 | Remigius, Beda, Alfr. | ☾□♂, ☿☌● | 7. 49 | 2. 59 | 4. 9 | 7. 45 |
| **21.** | Pr. Mir ist gegeben alle Gewalt. Matth. 28, 18—20. Kath. Mir ist alle Gewalt ꝛc. Matth. 28, 18-20. (Röm. 11, 33-36.) | | Desto weniger Uebergewicht wird sie über denselben haben. | | | |
| Sonnt. 27 | G. Dreifalt. Eutropius | ● 4, 36 v. ☾☌♀ | 9. 1 | 3. 31 | 4. 8 | 7. 47 |
| Mont. 28 | Wilhelm, German B. | ☽☾□♄ | 10. 0 | 4. 14 | 4. 7 | 7. 48 |
| Dienst. 29 | Maximilian, Theod. | ☾☌♃ | 10. 45 | 5. 7 | 4. 6 | 7. 49 |
| Mittw. 30 | Wigand, Felix, Pr. | veränderlich | 11. 19 | 6. 10 | 4. 6 | 7. 50 |
| Donn. 31 | Fronleichn. Crescentia | | 14. 46 | 7. 19 | 4. 5 | 7. 51 |

Lieben erzeugt das Leben, und Leben erzeugt die Liebe;
Denn nur der Lebende liebt, denn nur der Liebende lebt.

Schönheit bestrickt der Männer Herz, aber Tugend weiß es sich in den sanften Banden der Liebe zu erhalten.

Könnt ich nur mich selbst besiegen,
Alle Noth wär' überstiegen

**10. Mai 1871.**
**Friedensschluß zu Frankfurt.**

**Anmerkungen.**

Abendthau und kühl im Mai,
Bringet Wein u. vieles Heu.
Pankraz- und Urbantag ohne Regen,
Dann folgt ein großer Weinsegen.
Mai kühl Brachmonat naß,
Füllt den Bauern Fruchtböden und Faß.
Ein kühler Mai
Bringt gut Geschrei.
Vor Nachtfrost bist du sicher nicht,
Bis daß herein Servatius bricht.
Säe Nettig im wässerigen Zeichen des wachsenden Mondes
Wenn es am ersten Mai kalt ist, oder ein Reif fällt, so gerathet die Frucht nicht.
Maikäferjahr ein gutes Jahr.

**Kinder in ♊ geboren.**

Geboren in d. Zeichend. Zwillinge, Kannst du verrichten viele schöne Dinge;
Hab' Lust zur Weisheit und Geschicklichkeit
Studire wohl in deiner Jugendzeit; Sei fröhlich allezeit und auch kurzweilig; Mische dich in fremde Händel nicht voreilig;
Nimmst du viel ein, so zahl auch aus geschwind,
Und drehe nie den Mantel nach dem Wind.

**Tageslänge.**

d. 6. 14 St. 46 M
= 13. 15 = 5 =
= 20. 15 = 23 =
= 27. 15 = 39 =

| 1877. VI. Monat. | Katholischer u. Evangelischer **Juni** oder **Brachmonat.** | ☾- u. Planetenlauf. Muthmaßl. Witter. | Mond- Aufg. U. M. | Mond- Untg. U. M. | Sonnen- Afg. U M | Sonnen- Utg. U. M |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Freit. | 1 Fortunatus, Nicod. | ☿ □ ♂, ♂ ✳ ♃ | Vorm. | 8. 29 | 4. 5 | 7. 52 |
| Samst. | 2 Erasmus, Thilemon | ☾ i. Erdf., ☾ ☌ ♂ | 0. 6 | 9. 39 | 4. 4 | 7. 53 |
| **22.** Pr. Jesus segnet die Kindlein. Luk. 18, 15.—17. Kath. Seid barmherzig ꝛc. Luk. 6, 36-42. (Joh. 4, 8—21.) | | | Selig preise nur den, der das Leben wennerreich geschlossen hat | | | |
| Sonnt. | 3 G. 1. n. Dr. Clotildis | ☾ im ♌ schön | 0. 22 | 10. 48 | 4. 4 | 7. 54 |
| Mont. | 4 Quirinus, Caspasius | ☾ b. 42 v. ☾ ☌ ♄ | 0. 36 | 11. 55 | 4. 3 | 7. 54 |
| Dienst. | 5 Bonifacius, Winfried | ☾ □ ♃ ( ☾ □ ♀ | 0. 48 | Nachm. | 4. 3 | 7. 55 |
| Mittw. | 6 Norbertus, Weibert | beständig | 1. 1 | 2. 14 | 4. 2 | 7. 55 |
| Donn. | 7 Robert, Sebastian | ♂ in ♋ | 1. 17 | 3. 27 | 4. 2 | 7. 56 |
| Freit. | 8 Medardus, Wittich | ☿ direct. | 1. 34 | 4. 44 | 4. 1 | 7. 57 |
| Samst. | 9 Columbus, Gebhard | ♃ in ♑ zurück. | 1. 55 | 6. 4 | 4. 1 | 7. 57 |
| **23.** Pr. Gleichniß vom verlornen Sohne. Luk. 15, 11—32. Kath. Vom großen Hochzeitsmahle. Luk. 14, 16-24. (Joh. 3, 13-18.) | | | So möcht' ich leben, daß ich hätte, wenn ich scheide | | | |
| Sonnt. | 10 G. 2. Onofrion, Mar. | ☾ ☌ ☿ ♄ □ ☉ | 2. 25 | 7. 24 | 4. 1 | 7. 58 |
| Mont. | 11 Barnabas, Iduna | 3, 4 n. ☾ ☌ ♀ in ♋ | 3. 7 | 8. 38 | 4. 0 | 7. 59 |
| Dienst. | 12 Basilides, Johann F. | ☾ ☌ ♀ ( ♀ ☍ ♃ | 4. 5 | 9. 38 | 4. 0 | 7. 59 |
| Mittw. | 13 Anton v. Padua, Lob. | ☾ i. Erdn. | 5. 21 | 10. 21 | 4. 0 | 8. 0 |
| Donn. | 14 Rufinus, Elisabeth | bewölkt | 6. 46 | 10. 52 | 4. 0 | 8. 0 |
| Freit. | 15 Vitus, Modestus, L. | [ ☍ ☌ | 8. 14 | 11. 14 | 4. 0 | 8. 1 |
| Samst. | 16 Justina, Ludger., Fr. | ☾ i. ♌, ☾ □ ☿, ☾ | 9. 40 | 11. 33 | 4. 0 | 8. 1 |
| **24.** Pr. Das Gebet des Herrn. Matth. 6, 9—13. Kath. Vom verlorenen Schafe. Luk. 15, 1-10. (1. Petri 5, 6-11.) | | | Gelebet mir zur Lust und Andern nicht zu Leide. | | | |
| Sonnt. | 17 G. 3. Hortensia, Bot. | ☾ ☍ ♄, ♀ △ | 11. 3 | 11. 49 | 4. 0 | 8. 2 |
| Mont. | 18 Marcellus, Arnulf | 6, 56 v. ☾ □ ♃ ( ♂ | Nachm | Vorm. | 4. 0 | 8. 2 |
| Dienst. | 19 Gerhard, Gerv., P. J. | ☾ □ ♀ [ ♃ ☍ ☉ | 1. 41 | 0. 5 | 4. 0 | 8. 2 |
| Mittw. | 20 Sylverius, Pr. | ☿ Morgenst. in gr. Ausweich. | 3. 0 | 0. 21 | 4. 0 | 8. 3 |
| Donn. | 21 Albanus, Aloysius | ☉ in ♋ längster Tag, Sommer-Anfang | 4. 18 | 0. 39 | 4. 0 | 8. 3 |
| Freit. | 22 Justinus, Basilius | regne- | 5. 36 | 1. 1 | 4. 0 | 8. 3 |
| Samst. | 23 Edeltrud, Agrippina | ☾ ☍ ☿ risch | 6. 49 | 1. 31 | 4. 1 | 8. 3 |
| **25.** Pr. Frei zu wählender Text. Kath. Vom reichen Fischfange. Luk. 5, 1-11. (Röm. 8, 18-23.) | | | Alles Vergängliche ist nur ein Gleichniß. | | | |
| Sonnt. | 24 Ref.-Fest, bad. J. d. T. | ☾ □ ♂, □ ♄ | 7. 51 | 2. 9 | 4. 1 | 8. 3 |
| Mont. | 25 Eberhard, Eulop., Pr. | 5. 24 n. ☾, ☾ ☌ ♃ | 8. 42 | 2. 59 | 4. 1 | 8. 3 |
| Dienst. | 26 Joh. Paul, Jeremias | ☾ ☍ ♀, ☿ □ ♂ | 9. 20 | 3. 59 | 4. 2 | 8. 3 |
| Mittw. | 27 7 Schl., Ladislaus | | 9. 48 | 5. 6 | 4. 2 | 8. 3 |
| Donn. | 28 Benjamin, Leo II. | bedeckt | 10. 9 | 6. 16 | 4. 3 | 8. 3 |
| Freit. | 29 Petrus, Paulus. | ☾ in Erdferne | 10. 26 | 7. 27 | 4. 3 | 8. 3 |
| Samst. | 30 Pauli Gedächtniß | ☾ im ♌, ☾ □ ☿ | 10. 40 | 8. 36 | 4. 4 | 8. 3 |

**Hausfrieden.**

Kein reiner Glück ist dir beschieden,
Als nach des Tages drängend Thun,
In deines Hauses Abendfrieden
An treuem Herzen auszuruh'n!

Da draußen ist ein tobend Eilen,
Das Beste bleibt nur halb bestellt —
Hier innen darfst du nicht mehr theilen,
Dein eigen ist die ganze Welt.

Liebe nur zürnt und versöhnt sich geschwind; die bescheidene Freundschaft schweigt beim verletzten Gefühl, aber auf immer, und stirbt.

**18. Juni 1815.**
**Schlacht bei Waterloo.**

**Anmerkungen.**

Donnerst's im Juni, so geräth das Getreide.
Wie der Holder blüht, so blühen auch die Reben.
Die Immen, so vor Johanni stoßen, sind die besten, nach Johanni sind sie gar nicht gut.—
Wenn der Weinstock im Vollmond blühet, so soll er völlig Beeren bekommen.
Am St. Johanni-Abend soll man die Zwiebeln legen.
Wie's wittert auf Medardustag, Sobleibts sechs Wochen lang darnach.
Sonnjahr, Wonnjahr, Kothjahr-Nothjahr.
Wer auf Medardi baut, Der kriegt viel Flachs u. Kraut.
Vor Johannistag, Keine Gerst manlobenmag.

**Kinder im ☾ geboren.**

Hat dir schon bei deiner Entstehung dies Zeichen geleuchtet, so werden dir Wenigegleichen. Wenn du nur Verstand hast, Gedächtniß u. Muth, Aufrichtig zu thun, was der Edle nur thut, Das Laster verabscheu'st, die Tugend nur liebst, Und so deinem Glücke Beständigkeit gibst.

**Tageslänge.**

| | | |
|---|---|---|
| d. 3. | 15 St. | 50 M. |
| „ 10. | 15 „ | 57 „ |
| „ 17. | 16 „ | 2 „ |
| „ 24. | 16 „ | 2 „ |

| 1877. VII. Monat. | Katholischer u. Evangelischer **Juli** oder **Heumonat.** | ☾- u. Planetenlauf. Muthmaßl. Witter. | Mond- Aufg. U. M. | Mond- Untg. U. M. | Sonnen- Afg. U. M | Sonnen- Utg. U. M |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **26.** | Pr. Wehe dem Menschen ꝛc. Matth. 18, 6—11. Kath. Der Pharisäer Gerechtigkeit. Matth. 5, 20-24. (1. Pet. 3, 8-15.) | | Der Reiche, wenn er viel von seiner Armuth spricht, | | | |
| Sonnt. 1 | G. 5. Theobald, Sim. | ☾☌♂, ♄ retr. | 10. 53 | 9. 44 | 4. 4 | 8. 3 |
| Mont. 2 | Mariä Heims., Otto | ☾☌♄☿□ | 11. 6 | 10. 50 | 4. 5 | 8. 2 |
| Dienst. 3 | Cornelius, Reinhard | ☾ 9, 33 n. schön (♄ | 11. 20 | 11. 58 | 4. 6 | 8. 2 |
| Mittw. 4 | Ulrich, Bisch., Hatto | ☉ in größter Entfernung. | 11. 36 | Nachm. | 4. 6 | 8. 2 |
| Donn. 5 | Wendelin, Zoa, Num. | ☿☌♃, ♀ in ♋ | 11. 55 | 2. 22 | 4. 7 | 8. 1 |
| Freit. 6 | Esajas, Dominika | ☿ in ♍ | Vorm. | 3. 39 | 4. 7 | 8. 1 |
| Samst. 7 | Joachim, Clara | warm | 0. 20 | 4. 59 | 4. 8 | 8. 1 |
| **27.** | Pr. Vom Schwören. Matth. 5, 33—37. Kath. Jesus speist 4000 Mann. Mark. 8, 1-9. (Röm. 6, 3-11.) | | So glaub' es ihm nur gern; er lügt wahrhaftig nicht. | | | |
| Sonnt. 8 | G. 6. Kilian, Elisab. | ☾□☌♂ | 0. 56 | 6. 15 | 4. 8 | 8. 0 |
| Mont. 9 | Cyrillus, Zeno, Wolf | ☾☌♃, ☾□♄ | 1. 46 | 7. 22 | 4. 9 | 8. 0 |
| Dienst. 10 | 7 Brüder, Rufina | 10, 37 n. ☾☌☿ | 2. 54 | 8. 15 | 4. 10 | 7. 59 |
| Mittw. 11 | Rahel, Hermann | veränderlich | 4. 17 | 8. 51 | 4. 11 | 7. 59 |
| Donn. 12 | Nabor, Lydia, Ros. | ☾ i. Erdn., ☾☌♀ | 5. 47 | 9. 17 | 4. 12 | 7. 58 |
| Freit. 13 | K. Heinrich, Joh. G | ☾ im ♊ (♄△☉ | 7. 16 | 9. 38 | 4. 13 | 7. 57 |
| Samst. 14 | Bonaventura, Alfreda | ☾☌♂ | 8. 44 | 9. 55 | 4. 14 | 7. 56 |
| **28.** | Pr. Die Jünger wollen Feuer ꝛc. Luk. 9, 51—62. Kath. Vom falschen Propheten. Matth. 7, 15-21. (Röm. 6, 19-23.) | | Die Lieb' ist unser Gott, es lebet Alles durch die Liebe: | | | |
| Sonnt. 15 | G. 7. Margaretha, | ☾☌♄, ☿△♂ | 10. 8 | 10. 11 | 4. 15 | 7. 56 |
| Mont. 16 | Hilarius, Monis. | Hundstage Anfang. | 11. 28 | 10. 28 | 4. 16 | 7. 55 |
| Dienst. 17 | Alexius, Arthur | 1, 44 n. ☾□☿ | Nachm. | 10. 45 | 4. 17 | 7. 54 |
| Mittw. 18 | Maternus, Camilla | hell | 2. 6 | 11. 5 | 4. 18 | 7. 53 |
| Donn. 19 | Rosina, Vinzenz | ☾□♀ | 3. 25 | 11. 32 | 4. 20 | 7. 52 |
| Freit. 20 | Arnold, Hier., Aemil | ☿☌☉ w Abendst. | 4. 40 | Vorm. | 4. 21 | 7. 51 |
| Samst. 21 | Arbogast, Dietrich | ☾□☌♂, ☿ in ♋ | 5. 45 | 0. 7 | 4. 22 | 7. 50 |
| **29.** | Pr. Die Gesunden bedürfen des Arztes nicht. Luk. 5, 27—39. Kath. Vom ungerechten Haushalter. Luk. 16, 1-9. (Röm. 8, 12-17.) | | Wie selig wäre ein Mensch, der stets in ihr verbliebe. | | | |
| Sonnt. 22 | G. 8. Maria Magd. | ☾☌♃, ☾□♄ | 6. 39 | 0. 53 | 4. 23 | 7. 49 |
| Mont. 23 | Apollinarius, Libor. | ♀△♃ (☉ in ♋ | 7. 20 | 1. 50 | 4. 24 | 7. 47 |
| Dienst. 24 | Christina, Sigline | beständig | 7. 51 | 2. 56 | 4. 25 | 7. 46 |
| Mittw. 25 | Jakob, Christoph, B. | 7, 51 v. ☾☌☿ | 8. 14 | 4. 5 | 4. 27 | 7. 45 |
| Donn. 26 | Anna, Polybius | | 8. 32 | 5. 15 | 4. 28 | 7. 40 |
| Freit. 27 | Pantaleon, Martha | ☾ im ♌, ☾ i. Erdf. | 8. 47 | 6. 25 | 4. 29 | 7. 42 |
| Samst. 28 | Nazarius, Celsus v. P. | (☾☌♀, ♂☌♄ | 9. 1 | 7. 33 | 4. 30 | 7. 41 |
| **30.** | Pr. Jesus der Weinstock. Joh. 15, 1—14. Kath. Jesus weint über Jerusalem. Luk. 19, 41-47. (1. Kor. 10, 6-13.) | | Wer den Tod fürchtet, hat das Leben verloren. | | | |
| Sonnt. 29 | G. 9. Beatrix, Felix | ☾☌♂, □♃, ♂♄ | 9. 13 | 8. 40 | 4. 32 | 7. 40 |
| Mont. 30 | Jakobea, Abdon | ♀ in ♋ warm | 9. 26 | 9. 47 | 4. 33 | 7. 38 |
| Dienst. 31 | Germanus, Ign. v. L. | ☿△♃ | 9. 41 | 10. 55 | 4. 34 | 7. 37 |

Wer glücklich ist, kann glücklich machen,
Wer's thut, vermehrt sein eigen Glück.

**3. Juli 1866.**
**Schlacht bei Königgrätz.**

**Anmerkungen.**

Ist das Wetter drei Sonntage vor Jakobi schön, so wird gut Korn gesäet: so es anhält, Regnet's, so bringt's schlechtes Korn hervor. Regnet's auf Jakobi, so sollen die Eicheln verderben. Der Vormittag des Jakobitags bedeutet die Zeit vor Weihnachten, und der Nachmittag die Zeit nach Weihnachten, woraus zuurtheilen, wie die Witterung sein möchte.

Merkt daß heran Gewitter zieh',
Schnappt auf der Weid' nach Luft das Vieh
Wer nicht geht mit d. Rechen,
Wenn die Fliegen u. Bremsen stechen,
Muß im Winter gehn mit dem Strohseil
Und fragen: hat Niemand Heu feil.

**Kinder im ♋ geboren.**

Bist in des Löwen Zeichen du geboren, So liebe Wahrheit u. Gerechtigkeit
Sei listig und beherzt, wie er, im Streit Jedoch gib keinen Raum d. Zorn der Thoren; Arbeite treu in Amt, Beruf u. Pflicht, Und trachte nach den großen Ehren nicht.

**Tageslänge**

| | | |
|---|---|---|
| d. 1. | 15 St. | 59 M. |
| = 8. | 15 = | 52 = |
| = 15. | 15 = | 41 = |
| = 22. | 15 = | 26 = |
| = 29. | 15 = | 8 = |

| 1877. VIII. Monat. | Katholischer u. Evangelischer August, Erntemonat. | ☾- u. Planetenlauf. Muthmaßl. Witter. | Mond- Aufg. U. M. | Mond- Untg. U. M. | Sonnen- Afg. U. M | Sonnen- Utg. U. M |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Mittw. 1 | Petri Kettenfeier | gewitter- | 9. 58 | Nachm. | 4. 36 | 7. 36 |
| Donn. 2 | Portiunkula, Gustav | ☾ 10. 52 v. haft | 10. 20 | 1. 20 | 4. 37 | 7. 34 |
| Freit. 3 | Joh. Steph. Erf., Aug. | | 10. 49 | 2. 37 | 4. 38 | 7. 33 |
| Samst. 4 | Dominikus, Sigrade | ☾□♀,□♀ | 11. 31 | 3. 54 | 4. 40 | 7. 31 |
| **31.** Pr. Martha und Maria. Luk. 10, 38—42. Kath. Vom Pharisäer und Zöllner. Luk. 18, 9-14. (1. Kor. 12, 2-11.) | | | Die Weisheit findet sich gern, wo ihre Kinder sind, | | | |
| Sonnt. 5 | G. 10. Oswald, Mar. | ☽,☾□♂,♂♃ | Vorm. | 5. 4 | 4. 41 | 7. 30 |
| Mont. 6 | Sixtus, Vkl. Chr. | ♂ retr. (♀ in ♌ | 0. 31 | 6. 2 | 4. 42 | 7. 28 |
| Dienst. 7 | Afra, Alb., Kaj., Ulr. | Sonnenschein | 1. 46 | 6. 45 | 4. 44 | 7. 26 |
| Mittw. 8 | Reinhard, Cyriakus | [☉ Unsichtbare Finsterniß, | 3. 12 | 7. 16 | 4. 45 | 7. 25 |
| Donn. 9 | Romanus, Erikus | 5, 48 v. ☾ i. Erdn. | 4. 44 | 7. 40 | 4. 47 | 7. 23 |
| Freit. 10 | Laurentius, Blanko | ☾ i. ♋ zahlreiche | 6. 14 | 7. 59 | 4. 48 | 7. 21 |
| Samst. 11 | Ignatius, Sus., Tib. | Sternschnuppen ☾♂♀,♂♂,♂♄ | 7. 41 | 8. 16 | 4. 49 | 7. 20 |
| **32.** Pr. Liebe des Feindes. Matth. 5, 43—48. Kath. Vom Taubstummen. Mark 7, 31-37. (1. Kor. 15, 1-10.) | | | Warum? o Wunderding! Sie selber ist ein Kind. | | | |
| Sonnt. 12 | G. 11. Clara, Adele | verän- | 9. 7 | 8. 32 | 4. 51 | 7. 18 |
| Mont. 13 | Hypolit., Cas., Conc. | derlich | 10. 31 | 8. 49 | 4. 52 | 7. 16 |
| Dienst. 14 | Samuel, Eusebius | | 11. 53 | 9. 9 | 4. 54 | 7. 14 |
| Mittw. 15 | Mariä Himmelfahrt. | 10. 59 n. | Nachm. | 9. 35 | 4. 55 | 7. 13 |
| Donn. 16 | Jodokus, Rochus | ♃△☉,♀♂♂ | 2. 30 | 10. 7 | 4. 56 | 7. 11 |
| Freit. 17 | Liberatus, Verona | ♀□♃ [♀♂♄ | 3. 40 | 10. 49 | 4. 58 | 7. 9 |
| Samst. 18 | Agapitus, Helene | ☽☾♂♃,□♄ | 4. 37 | 11. 43 | 4. 59 | 7. 7 |
| **33.** Pr. Von den anvertrauten Zentnern. Matth. 25, 14—30. Kath. Barmherzige Samariter. Luk. 10, 23-37. (2. Kor. 3, 4-9.) | | | Will dir das Glück wohl, halt Maß in guter Zeit, | | | |
| Sonnt. 19 | G. 12. Sebaldus, Lud. | ♀♂♂ Wolken | 5. 22 | Vorm. | 5. 1 | 7. 5 |
| Mont. 20 | Bernhardus, Philib. | ♀□♃,♃ dir. | 5. 55 | 0. 46 | 5. 2 | 7. 3 |
| Dienst. 21 | Privatus, Franz, H. | Wind | 6. 20 | 1. 55 | 5. 3 | 7. 1 |
| Mittw. 22 | Symphorian, Timoth. | [ichtb. ☾ Finstern. | 6. 40 | 3. 5 | 5. 5 | 7. 0 |
| Donn. 23 | Philippus, Zachäus | 11. 42 n. ☾ i. Erdf. | 6. 56 | 4. 15 | 5. 6 | 6. 58 |
| Freit. 24 | Bartholomäus, Aldw. | ☾ in ♋ ( ☉ in ♌ | 7. 10 | 5. 24 | 5. 8 | 6. 56 |
| Samst. 25 | Ludwig, Ludo | ☾♂♂,□♃,♂♄ | 7. 22 | 6. 31 | 5. 9 | 6. 54 |
| **34.** Pr. Christus und die Sünderin. Luk. 7, 36—50. Kath. Zehn Aussätzige. Luk. 17, 11-19. (Gal. 3, 16-22.) | | | Auf allzu große Lust folgt gerne Traurigkeit. | | | |
| Sonnt. 26 | G. 13. Severus, Zeph. | ♂♂♄,♀ in ♍ | 7. 34 | 7. 37 | 5. 10 | 6. 52 |
| Mont. 27 | Gebhard, Jos. Uring | ☾♂♀, Hundstage Ende | 7. 48 | 8. 45 | 5. 12 | 6. 50 |
| Dienst. 28 | Augustinus, Adelinde | angenehm | 8. 5 | 9. 55 | 5. 13 | 6. 48 |
| Mittw. 29 | Johann. Enthauptung. | | 8. 25 | 11. 9 | 5. 15 | 6. 46 |
| Donn. 30 | Felix, Adolf, Rosa | [in größter Ausweichung | 8. 50 | Nachm. | 5. 16 | 6. 44 |
| Freit. 31 | Raimund, Rebecca, P | ☾ 9. 47 n., ♀ Abdst. | 9. 25 | 1. 39 | 5. 18 | 6. 42 |

Mächtiger als die Wellen des Meeres sind die Thränen der Liebe; Jene gehorchen dem Sturme, diese besänftigen ihn.

Die Weiber lieben die Stärke; ohne sie nachzuahmen, Die Männer die Zärtlichkeit, ohne sie zu erwidern.

6. August 1870. Schlachten bei Wörth und Spichern.
18. August 1870. Schlacht bei Gravelotte.

**Anmerkungen.** Ist's im August u. in der ersten Hälfte des September's schön u. warm, so ist es dem Weinstock zuträglich. Höhenrauch im Sommer deutet meist auf strengen Winter.

Mariä Himmelfahrt klar Sonnenschein Bringt gern viel u. guten Wein.

Um S. Laurenti Sonnenschein, Bedeut' ein gutes Jahr von Wein.

Wer im Heuet nicht gabelt, In der Ernt' nicht zabelt, Im Herbst nicht früh aufsteht, Der schau wie's ihm im Winter geht.

**Kinder i. d. ♌ geboren.** Wer in der Jungfrau Zeichen wird geboren, Der ist zu schönen Tugenden erkoren, Die zu des Lebens einzigem Genuß Er stets mit Lust u. Eifer üben muß. Klug, kunstreich, freundlich, froh und fromm zu werden, Macht in der Jugend schon dein Glück auf Erden. Ein frommes Weib, die beste aller Gaben, Zu lieben macht dich reich in dieser Zeit und du wirst keine Widerwärtigkeit, Bei großen und bei kleinen Herren haben.

Tageslänge.
d. 5. 14 St. 49 M.
= 12. 14 = 27 =
= 19. 14 = 4 =
= 26. 13 = 42 =

| 1877. IX. Monat. | Katholischer u. Evangelischer **September, Herbstm.** | ☾- u. Planetenlauf Muthmaßl. Witter. | Mond- Aufg. U. M. | Mond- Untg. U. M. | Sonnen- Afg. U. M. | Sonnen- Utg. U. M. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Samst. 1 | Egidius, Verena, Ad. | ☾□♂, ☾□♃ | 10. 14 | 2. 50 | 5. 19 | 6. 40 |
| **35.** Pr. Jesus am Gotteskasten. Mark. 12, 38—44. Kath. Niemand kann ꝛc. Matth. 6, 24-33. (Gal. 5, 15-24.) | | | Durch Sanftmuth wirst du mehr gewinnen, | | | |
| Sonnt. 2 | G. 14. Veronika, St. | ☾☾□☿, ☾☌♃ | 11. 20 | 3. 50 | 5. 20 | 6. 38 |
| Mont. 3 | Theodosia, Eph. | ☾□♀ | Vorm. | 4. 37 | 5. 21 | 6. 36 |
| Dienst. 4 | Esther, Rosalia, M. | bewölkt | 0. 40 | 5. 13 | 5. 22 | 6. 34 |
| Mittw. 5 | Bertinus, Laurent., J. | ☌☌● | 2. 8 | 5. 40 | 5. 24 | 6. 32 |
| Donn. 6 | Victor Magnus, Z. | ☾i.♉, ☾ in Erdn. 1, 32 n. | 3. 38 | 6. 0 | 5. 25 | 6. 30 |
| Freit. 7 | Regina, Alkmund | Unsch. ● Finst. | 5. 7 | 6. 18 | 5. 26 | 6. 28 |
| Samst. 8 | Mariä Geburt. | ☾□♃ | 6. 34 | 6. 36 | 5. 28 | 6. 26 |
| **36.** Pr. Petrus heilt einen Lahmen. Apostelgesch. 3, 1—19. Kath. Vom Jüngling. Luk. 7, 11-16. (Gal. 5, 25-26 u. 6, 1-10.) | | | Als durch Gewalt und Ungestüm. | | | |
| Sonnt. 9 | Geburt. d. Großh. v. B. | ☾☌☿, ♄☌● | 8. 0 | 6. 53 | 5. 29 | 6. 24 |
| Mont. 10 | Pthgerus, Nicf. | ☾☌♀ | 9. 26 | 7. 12 | 5. 31 | 6. 22 |
| Dienst. 11 | Felix, Reg. Chr., Th. | unfreundlich | 10. 51 | 7. 36 | 5. 32 | 6. 20 |
| Mittw. 12 | Syrus, Guido, Tob. | | Nachm. | 8. 6 | 5. 34 | 6. 18 |
| Donn. 13 | Hektor, Mart. Mat. | [☌, ☌♃, □♄ | 1. 27 | 8. 45 | 5. 35 | 6. 16 |
| Freit. 14 | † Erhöhung, Alb. | 11, 39 v. ☾, ☾□ | 2. 30 | 9. 36 | 5. 36 | 6. 14 |
| Samst. 15 | Nicodemus | ☾□☿ (☿ retr. | 3. 20 | 10. 37 | 5. 38 | 6. 12 |
| **37.** Pr. Die Apostel vor Gericht. Apostelgesch. 4, 5—21. Kath. Vom Wassersüchtigen. Luk. 14, 1-11. (Eph. 3, 13-21.) | | | Die Liebe, wenn sie neu, Braust wie ein junger Wein, | | | |
| Sonnt. 16 | G. 16. Eidg. Bettag. | regnerisch | 3. 58 | 11. 44 | 5. 39 | 6. 9 |
| Mont. 17 | Lambert. | ☾□♀, ♃□● | 4. 25 | Vorm. | 5. 41 | 6. 7 |
| Dienst. 18 | Rosa, Richard, Titus | (♀ in ♍ | 4. 46 | 0. 55 | 5. 42 | 6. 5 |
| Mittw. 19 | Quat. Januarius, | ☾ in Erdferne | 5. 3 | 2. 4 | 5. 44 | 6. 3 |
| Donn. 20 | Tobias, Eust. | ☾ im ♌ | 5. 17 | 3. 12 | 5. 45 | 6. 1 |
| Freit. 21 | Matthäus, Evangelist | [Tag- u. Nachtgleiche Herbst-Anfang | 5. 30 | 4. 21 | 5. 46 | 5. 59 |
| Samst. 22 | Moritz, Landolin | 4, 6 n. ● in ♎ | 5. 43 | 5. 28 | 5. 48 | 5. 57 |
| **38.** Pr. Stephanus, der erste Blutzeuge. Apostelgesch. 7, 55—59. Kath. Vom größten Gebote. Matth. 22, 34-46. (Eph. 4, 1-6.) | | | Je mehr sie alt und klar, Je heller wird sie sein. | | | |
| Sonnt. 23 | G. 17. Hercules, Lin. | ☾☌☿ auf- | 5. 57 | 6. 36 | 5. 49 | 5. 54 |
| Mont. 24 | Robert, Marc. | hei- | 6. 13 | 7. 45 | 5. 51 | 5. 52 |
| Dienst. 25 | Cleophas, Jos. v. C. | ternd | 6. 31 | 8. 56 | 5. 52 | 5. 50 |
| Mittw. 26 | Cyprian, Th. v. B. | ☾☌♀ | 6. 55 | 10. 11 | 5. 54 | 5. 48 |
| Donn. 27 | Cosmus, Damian | ☿☌● w. Morgst. | 7. 27 | 11. 27 | 5. 55 | 5. 46 |
| Freit. 28 | Wenzeslaus, Audom | ☾□☌, □♄ | 8. 11 | Nachm. | 5. 57 | 5. 44 |
| Samst. 29 | Michael, Alarich | ☾☾□☿, ☌♃ | 9. 8 | 1. 40 | 5. 58 | 5. 42 |
| **39.** Pr. Philippus und der Kämmerer. Apostelgesch. 8, 26—40. Kath. Vom Gichtbrüchigen. Matth. 9, 1-8. (1. Kor. 1, 4-8.) | | | Liebe und Andacht sind zwei Lieder auf einer Melodie. | | | |
| Sonnt. 30 | G. 18. Ursus, Hier. | ☾ 6, 52 v. ☿ i. ♐ zur. | 10. 20 | 2 33 | 5. 59 | 5. 40 |

Zwei der Pforten nur giebt's zum Tempel beglückender Liebe!
Offenherzigkeit heißt die eine, die andere Vertrau'n.

**2. September 1870.**
**Napoleon III. bei Sedan gefangen.**
**28. September 1870.**
**Straßburg wieder deutsch.**

**Anmerkungen.**

Donnerts in diesem Monat so soll's auf's folgende Jahr viel Obst und Getreide geben. Wie der Hirsch um Egidi in die Brunst tritt, so tritt er nach 4 Wochen wieder heraus.

Wenn um Michaelis die Nord- und Ostwinde wehen, gibts einen kalten Winter.

Die Wintersaat ist die beste, die acht Tage vor oder nach Michaelis geschieht.

So auf Mathäus gut Wetter ist, hofft man auf's nächste Jahr viel guten Wein.

So viel Tage es vor Michaelis reift, sovielwird es n. St. Georg Gefröst geben.

Ist der Herbst warm, hell und klar, so ist ein fruchtbares Jahr zu hoffen.

**Kinder i. d. ♎ geboren.**

Bist du geboren im Zeichen der Wage, So höre, was ich zur Regel dir sage: Treuherzig, still bescheiden, lieb' die Wahrheit, Aufrichtigkeit der Brust und Geistesklarheit Anfechtung des Verläumders achte nicht, denn Gott bringt deine Unschuld doch an's Licht.

**Tageslänge.**

d. 2. 13 St. 18 M.
= 9. 12 = 55 =
= 16. 12 = 30 =
= 23. 12 = 5 =
= 30. 11 = 41 =

| 1877. X. Monat. | Katholischer u. Evangelischer | ☾- u. Planetenlauf. Muthmaßl. Witter. | Mond- Aufg. U. M. | Mond- Untg. U. M. | Sonnen- Afg. U. M. | Sonnen- Utg. U. M. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | **Oktober, Weinmonat** | | | | | |
| Mont. 1 | Remigius, Vol. | | 11. 43 | 3. 13 | 6. 1 | 5. 37 |
| Dienst. 2 | Leodegarius, Theoph. | ☾□♀ | Vorm. | 3. 41 | 6. 2 | 5. 35 |
| Mittw. 3 | Lucretia, Jairus | beständig | 1. 9 | 4. 3 | 6. 4 | 5. 33 |
| Donn. 4 | Franziskus, Edwin | ☾ im ♉, ☾☌♂ | 2. 36 | 4. 21 | 6. 5 | 5. 31 |
| Freit. 5 | Constanz, Etzel, Plaz. | ☾ in Erdn., ☿ dir. | 4. 2 | 4. 38 | 6. 7 | 5. 29 |
| Samst. 6 | Angela, Bruno, Fid. | 10, 30 n. ( ♂ dir. | 5. 27 | 4. 55 | 6. 8 | 5. 27 |
| **40.** | Pr. Pauli Bekehrung. Apostelgesch. 9, 1—22. Kath. Königs Hochzeit. Matth. 22. 2-14. Eph. 4. 23-28.) | | Hüpfet und springet, Tanzet und singet, | | | |
| Sonnt. 7 | G. 19. Juditha, Amalia | schön | 6. 54 | 5. 14 | 6. 10 | 5. 25 |
| Mont. 8 | Pelagius, Ammon | . | 8. 20 | 5. 36 | 6. 11 | 5. 23 |
| Dienst. 9 | Dionysius, Abraham | abwech= | 9. 44 | 6. 3 | 6. 13 | 5. 21 |
| Mittw. 10 | Gideon, Frz. B. | ☾☌♀ selnd | 11. 4 | 6. 39 | 6. 14 | 5. 19 |
| Donn. 11 | Burkhard, Plac., E. | ☾□♂, ☿ in ♏ | Nachm. | 7. 27 | 6. 16 | 5. 17 |
| Freit. 12 | Pantalus, Walth., M. | ☾☌♃, ☿ Morgn. | 1. 13 | 8. 25 | 6. 17 | 5. 15 |
| Samst. 13 | Colmanus, Eduard | ♀ in ♎, (i. gr. Ausw. | 1. 55 | 9. 31 | 6. 19 | 5. 13 |
| **41.** | Pr. Paulus und Barnabas zu Lystra. Apostgesch. 14, 8-18. Kath. Heilung des Königleins Sohnes. Joh. 4. 46-53. (Eph 5. 15-21.) | | Denkt im Getümmel Auch an den Himmel. | | | |
| Sonnt. 14 | G. 20. Calixtus | 4, 14 n. | 2. 26 | 10. 41 | 6. 20 | 5. 11 |
| Mont. 15 | Theresia, Aurelia | rauh | 2. 50 | 11. 51 | 6. 22 | 5. 9 |
| Dienst. 16 | Gallus Abt, Hildebr. | [☾□♀ | 3. 9 | Vorm. | 6. 24 | 5. 7 |
| Mittw. 17 | Lucina, Hedwig, Fl. | ☾ i. ♌, ☾ i. Erdf. | 3. 23 | 1. 0 | 6. 25 | 5. 5 |
| Donn. 18 | Lucas Evangelist | ☾☌♂, ♂ ♄ | 3. 37 | 2. 8 | 6. 27 | 5. 3 |
| Freit. 19 | Ferdinand, Hilarius | ☾□♃ | 3. 50 | 3. 16 | 6. 28 | 5. 1 |
| Samst. 20 | Wendelinus, Sindolf | neblig | 4. 4 | 4. 24 | 6. 30 | 4. 59 |
| **42.** | Pr. Paulus zu Athen. Apostelgesch. 17, 22-34. Kath. Vom unbarmherz. Knechte. Matth. 18, 23-35. (Eph. 6. 10-17.) | | Es ist kein lieber Ding auf Erden, | | | |
| Sonnt. 21 | G. 21. Allg. Kirchweih | ☾☌☿ | 4. 19 | 5. 32 | 6. 31 | 4. 57 |
| Mont. 22 | Columb., Mar. | 8, 2 v. ♃✳☉ | 4. 37 | 6. 43 | 6. 33 | 4. 56 |
| Dienst. 23 | Severinus, Verus, B. | ☉ in ♏ auf= | 4. 59 | 7. 58 | 6. 34 | 4. 54 |
| Mittw. 24 | Salomea, Raph. | heiternd | 5. 30 | 9. 15 | 6. 36 | 4. 52 |
| Donn. 25 | Crispinus, Crisanth. | ☾☌♀, ♃ in ♐ | 6. 10 | 10. 28 | 6. 38 | 4. 50 |
| Freit. 26 | Amandus, Evaristus | ☾□♄, ♀□♂ | 7. 3 | 11. 35 | 6. 39 | 4. 48 |
| Samst. 27 | Sabina, Capitolinus | ☾☌♃ | 8. 11 | Nachm. | 6. 41 | 4. 47 |
| **43.** | Pr. Paulus zu Ephesus. Apostelgesch. 19, 23-40. Kath. Vom Zinsgroschen. Matth. 22, 15-21. | | Als Frauenlieb', wem sie mag werden. | | | |
| Sonnt. 28 | G. 22. Simon Judä T. | ☾ 2, 52 n. ☾□☿ | 9. 29 | 1. 11 | 6. 42 | 4. 45 |
| Mont. 29 | Eusebia, Narciss. | | 10. 52 | 1. 42 | 6. 44 | 4. 44 |
| Dienst. 30 | Hartmann, Eutropius | sonnig | Vorm. | 2. 6 | 6. 46 | 4. 42 |
| Mittw. 31 | Wolfgang, Frideg. | ☾ im ♉, ☿ in ♏ | 0. 16 | 2. 26 | 6. 47 | 4. 41 |

Ob die Armuth gleich nichts hat, gibt sie dennoch reiche Gaben,
Durch sie kann man Sicherheit und ein gut Gewissen haben.

Glückselig ist, wer Liebe rein genießet,
Weil doch zuletzt das Grab so Lieb' als Haß verschließet.

**18. Oktober 1813.**
**Völkerschlacht bei Leipzig.**
**27. Oktober 1870.**
**Uebergabe der Festung Metz**

**Anmerkungen.**

Wie in diesem Monat die Witterung ist, wird sie auch im März sein. Ist dieser Monat kalt, so gibts im folgenden Jahr wenig Raupen.

Um Gallustag erwartet man noch einen Nachsommer. Wenn Gallus den Butten trägt, ist's ein bös Zeichen für den Wein.

So die Eichbäume viel Eicheln tragen u. das Laub nicht gern von den Bäumen fällt, folgt ein kalter Winter. Um diese Zeit soll man die Raupennester verbrennen.

**Kinder im ♏ geboren.**

Dies Zeichen das der Monde Lauf herbeiführt, munter dazu auf: Bemühe dich in deinen Lebenstagen, Beredt zu sein, scharfsinnig u. verschlagen, Bewahre dich vor Rachgier, Zorn und Geiz, Sie rauben dir der Freude hohen Reiz. Wird in der Jugend schon dich Kreuz unmachten, So wirst du glücklicher im Alter sein; Und wirst du dich der Kunst des Bergmanns weih'n, So ziehst du Gold — Glück auf! — aus tiefen Schachten.

**Tageslänge.**

d. 7. 11 St. 15 M.
= 14. 10 = 51 =
= 21. 10 = 26 =
= 28. 10 = 3 =

| 1877. XI. Monat. | Katholischer u. Evangelischer **November, Winterm.** | ☾ u. Planetenlauf. Muthmaßl. Witter. | Mond- Aufg. U. M. | Mond- Untg. U. M. | Sonnen- Afg. U. M | Sonnen- Utg. U. M |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Donn. 1 | Aller Heiligen. K.F. | ☾□♀,♂☌♂ u. ♄ | 1. 35 | 2. 43 | 6. 48 | 4. 39 |
| Freit. 2 | Aller Seelen | ☾ in Erdn., ☾□♃ | 3. 2 | 2. 59 | 6. 49 | 4. 37 |
| Samst. 3 | Theophil, Pirmin, G. | (☿✳♃ naß | 4. 25 | 3. 16 | 6. 51 | 4. 36 |
| **44.** | Pr. Pauli Abschied. Apostelgesch. 20, 17-38. Kath. Obersten Tochter. Matth. 9, 18-26. (Phil. 3, 17-21 u. 4, 1-3.) | | Wer da muß ohne die Sonne sein, | | | |
| Sonnt. 4 | G. 23. Sigmund, C., | ♂☌♄ 9, 19 v. | 5. 50 | 3. 36 | 6. 53 | 4. 34 |
| Mont. 5 | Malachias, Zacharias | ☾☌♀ | 7. 15 | 4. 1 | 6. 54 | 4. 33 |
| Dienst. 6 | Leonhardus, Alwine | ♄△☉ | 8. 38 | 4. 34 | 6. 56 | 4. 31 |
| Mittw. 7 | Florentin, Engelbert | ☾□♄, ♀ in ♏ | 9. 54 | 5. 16 | 6. 57 | 4. 30 |
| Donn. 8 | 4 Gekrönte, Gottfr. | ☾☌♀ | 10. 58 | 6. 11 | 6. 59 | 4. 28 |
| Freit. 9 | Theodor, Erbo, Alg. | ☾☌♃ Wind | 11. 48 | 7. 16 | 7. 1 | 4. 27 |
| Samst. 10 | Justus, Tryph., Resp. | ♀☌♃ zahlreiche | Nachm. | 8. 26 | 7. 2 | 4. 25 |
| **45.** | Pr. Paulus vor dem Landpfleger Felix. Apostelgesch. 24, 10-27. Sturm auf dem Meere. Matth. 8, 23, 27. (Röm. 13, 8-10.) | | Der dankt dem Monde seinen Schein. | | | |
| Sonnt. 11 | G. 24. Martin Bischof | Sternschnuppen | 0. 52 | 9. 37 | 7. 4 | 4. 24 |
| Mont. 12 | Martin Pabst, Jonas | ☾□☿ \| ☾ i. ♌ 0, 16 v. | 1. 12 | 10. 47 | 7. 5 | 4. 23 |
| Dienst. 13 | Weibert, Stanislaus | ☾ i. Erdf. | 1. 29 | 11. 55 | 7. 7 | 4. 21 |
| Mittw. 14 | Friedrich, Jucundus | (☿☌☉ w. Abst. | 1. 43 | Vorm. | 7. 9 | 4. 20 |
| Donn. 15 | Leopold, Leupolt | ☾☌♂, ☾☌♄ | 1. 56 | 1. 1 | 7. 10 | 4. 19 |
| Freit. 16 | Othmarus, Othilde | ☾□♃, ♄ dir. | 2. 10 | 2. 8 | 7. 12 | 4. 18 |
| Samst. 17 | Florian, Diebold | ☾□♀ | 2. 24 | 3. 17 | 7. 13 | 4. 17 |
| **46.** | Pr. Psalm 145. Kath. Vom Senfkörnlein. Matth. 13, 31-35. (1. Thess. 1, 2-10.) | | Weibliche Treu, o du reinstes Gefühl aufopfernder Tugend! | | | |
| Sonnt. 18 | G. 25. Bad. Erntefest. | Stürmisch | 2. 40 | 4. 28 | 7. 15 | 4. 16 |
| Mont. 19 | Elisabeth, Kön. v. Ung. | ☿ in ♐ 10, 51 n. | 3. 2 | 5. 42 | 7. 16 | 4. 15 |
| Dienst. 20 | Amos, Eduard, Fel. | | 3. 30 | 6. 59 | 7. 18 | 4. 14 |
| Mittw. 21 | Mariä Opferung | ☾☌☿, ♂□☉ | 4. 6 | 8. 15 | 7. 19 | 4. 13 |
| Donn. 22 | Cäcilia | ☾☾□♂, ☉ i. ♐ | 4. 56 | 9. 25 | 7. 21 | 4. 12 |
| Freit. 23 | Clemens, Trutbert | ☾☌♃ ( ☾□♄ | 6. 2 | 10. 25 | 7. 22 | 4. 11 |
| Samst. 24 | Chrysogonus, Joh. v. † | ☾☌♀ | 7. 19 | 11. 11 | 7. 24 | 4. 10 |
| **47.** | Pr. Text von der obersten Kirchenbehörde zu bestimmen. Kath. Gräuel der Verwüstung. Matth. 24, 15-35. (Kol. 1, 9-14.) | | Selten und dürftig belohnt, nimmer erreicht dich der Mann. | | | |
| Sonnt. 25 | G. 26. Buß- u. Bettag | Regen | 8. 41 | 11. 45 | 7. 25 | 4. 9 |
| Mont. 26 | Konradus, Egbert | ☾ ♀✳♂ 10. 2. | 10. 5 | Nachm. | 7. 27 | 4. 8 |
| Dienst. 27 | Jeremias, Val., Jos. | ☾ im ♉ | 11. 27 | 0. 31 | 7. 28 | 4. 7 |
| Mittw. 28 | Sosthenes, R. Günther | ☾☌♄, ( ☾ i. Erdn. | Vorm. | 0. 49 | 7. 29 | 4. 7 |
| Donn. 29 | Saturnus, Noah | ☾☌♂ aufhei- | 0. 48 | 1. 5 | 7. 31 | 4. 6 |
| Freit. 30 | Andreas, Apostel | ☾□♃ terud | 2. 9 | 1. 22 | 7. 32 | 4. 6 |

Zart ist die Blume der Freundschaft, — benagt vom Wurme des Mißtrauens, senkt sie traurig das Haupt, trecknet von innen und stirbt.

**28. November 1870. Schlacht bei Amiens.**

Rosenknospe, du bist dem blühenden Mädchen gewidmet,
Die als die herrlichste sich, als die bescheidenste zeigt.

Nenn' mir den weiten Mantel, darunter Alles sich versteckt,
Liebe ist's, die alle Mängel gern verhüllt und fleißig deckt.

**Anmerkungen.**

Wenn es in diesem Monat donnert, solldas Getreide wohl gerathen. Ist's am St. Martinstag trüb, so wird ein leidicher, ist es aber hell, ein kalter Winter folgen. Wässert man im Wintermonat die Wiesen nicht, so gibt's wenig Heu. — Fällt das Laub von den Bäumen nicht v. Martini ab, so hat man einen kalten Winter zu erwarten. — Am Allerheiligentage in Spahn aus ein. Buchbaum gehauen, ist er trocken, so bedeutet's einen gelinden, u. ist er naß, einen kalten Winter. Wenns im Nov. donnern thut, Wird d. nächste Jahr wohl gut.

**Kinder im ♐ geboren.**

Dies Zeichen prägt es jedem Menschen ein, Verständig und sanftmüthiglich zu sein, Hantierung weislich ohne Hinterlist Zuführen wie's gerecht u. billig ist, Den Haushalt treu und fleißig zu verwalten Nicht in des Gatten Liebe zu erkalten Die Kinder im Gehorsam aufzuzieh'n, Und alles, was nun Krankheit bringt, zu fliehn.

**Tageslänge.**

d. 4. 9 St. 41 M.
= 11. 9 = 20 =
= 18. 9 = 1 =
= 25. 8 = 44 =

| 1877. XII. Monat. | Katholischer u. Evangelischer **Dezember, Christmon.** | ☾- u. Planetenlauf Muthmaßl. Witter. | Mond- Aufg. U. M. | Mond- Untg. U. M. | Sonnen- Afg. U. M | Sonnen- Utg. U. M | Anmerkungen. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Samst. 1 | Eligius, Longinus, M. | hell | 3. 30 | 1. 40 | 7. 33 | 4. 5 | Säe Korn Egidii, Hafer, Gerste Benedicti, Säe Flachs und Hanf Urbani, Wicken, Rüben Kiliani. |
| **48.** Pr. Christi Einzug in Jerusalem. Matth. 21, 1—9. Kath. Es werden ꝛc. Luk. 21, 25-33. (Röm. 13, 11-14.) | | | Wer Tugend will und Ehre tragen, | | | | |
| Sonnt. 2 | G. 1. Adv. U. Kirchenj. | ☾□♀ | 4. 52 | 2. 3 | 7. 34 | 4. 5 | Biti Kraut, Erbsen Gregori, Linsen Philippi Jakobi. |
| Mont. 3 | Lucas, Franz Xaver, C. | frisch | 6. 13 | 2. 31 | 7. 35 | 4. 5 | |
| Dienst. 4 | Barbara, Sigram | 10, 35 n. ♀ in | 7. 32 | 3. 9 | 7. 36 | 4. 5 | |
| Mittw. 5 | Cordula, Sab., Abig. | ☾☌♂♀, □♄, ♄ | 8. 42 | 3. 58 | 7. 37 | 4. 4 | Grab' Rüben Vincula Petri, Schneid' Kraut Simonu. Judä |
| Donn. 6 | Nikolaus, Saxo | ☾□♂, ♂♃ (□ | 9. 39 | 4. 58 | 7. 39 | 4. 4 | |
| Freit. 7 | Agathon, Ambrosius | ☿□♂ | 10. 21 | 6. 7 | 7. 40 | 4. 4 | Fang' Wachteln Bartholomäi |
| Samst. 8 | Maria Empfängniß | ☿ in | 10. 51 | 7. 19 | 7. 41 | 4. 4 | |
| **49.** Pr. Johannis Predigt. Luk. 3, 1-18. Kath. Joh. im Gefängniß. Matth. 11, 2-10. (Röm. 15, 4-15.) | | | Der muß dem eignen Sinn entsagen | | | | Heiz' warm Natali Domini, Iß Lammesbraten Blasi, Trink Wein vor Circulum Anni Sankt Lutzen Macht den Tag stutzen. |
| Sonnt. 9 | G. 2. Adv. Wilibald | ☾☌♀ schön | 11. 14 | 8. 30 | 7. 42 | 4. 3 | |
| Mont. 10 | Walther, Eulalia, J. | ☾ im ♋, ♂ in | 11. 32 | 9. 39 | 7. 43 | 4. 3 | |
| Dienst. 11 | Damasius, P., Daniel | ☾ i. Cf., ♀ Abs. | 11. 47 | 10. 47 | 7. 44 | 4. 3 | |
| Mittw. 12 | Paul, Hermogen, Ep. | 10, 6 n. (i. gr. Ausw. | Nachm. | 11. 54 | 7. 45 | 4. 3 | |
| Donn. 13 | Lucia, Ottilia | ☾☌♂ kalte | 0. 14 | Vorm. | 7. 46 | 4. 3 | |
| Freit. 14 | Nikasius, Matronius | ☾□♃ Winde | 0. 28 | 1. 0 | 7. 46 | 4. 4 | |
| Samst. 15 | Abraham, Ignaz, Chr. | ☾□☿, ☿☌♃ | 0. 44 | 2. 8 | 7. 47 | 4. 4 | |
| **50.** Pr. Johannis Zeugniß. Joh. 1, 15-30. Kath. Joh. Zeugniß v. Christo. Joh. 1, 19-28. (Ph. 4, 4-7.) | | | Was sind die Seelen eitler Weiber? | | | | Im December trocken und eingefroren, macht daß d. Weinstock mehr Kälte vertragen kann als ein Fichtbaum. |
| Sonnt. 16 | G. 3. Adv. Adelheid | Schnee- | 1. 3 | 3. 21 | 7. 48 | 4. 4 | |
| Mont. 17 | Lazarus, Ewald | ☾□♀ fall | 1. 27 | 4. 36 | 7. 49 | 4. 4 | |
| Dienst. 18 | Wunibald, Mariä E. | ☿✳♄ | 1. 59 | 5. 51 | 7. 50 | 4. 5 | |
| Mittw. 19 | Quat. Nemesius, Faust. | ☾□♄ | 2. 44 | 7. 5 | 7. 50 | 4. 5 | |
| Donn. 20 | Achilles, Sylvia | 0, 23 n. | 3. 45 | 8. 12 | 7. 51 | 4. 5 | |
| Freit. 21 | Thomas Apostel, B. | in Winter-Anfang Kürester Tag. | 5. 0 | 9. 5 | 7. 51 | 4. 6 | |
| Samst. 22 | Chirid., Bertha, Beata | ☾☍☿ | 6. 24 | 9. 45 | 7. 52 | 4. 6 | |
| **51.** Pr. Johannes im Gefängniß. Matth. 11, 2-10. Kath. Stimme in der Wüste. Luk. 3, 1-6. (2. Thess. 2, 1-8.) | | | Bloß Kammerfrauen ihrer Leiber. | | | | **Kinder im ♋ geboren.** Das letzte Zeichen in d. Jahr, Befiehlt es deutlich dir u. klar: Zorn, Tiefsinn u. Melancholie, Und traurige Gedanken flieh; Sei streng, doch unversöhnl. nie Enthülle d. verborg'ne Kunst, Zerstreue des Goldmachers Dunst. Bist du geneigt z. Ackerbau, Soacht' auf Saat und Ernt' genau; Bist du der Kaufmannschaft geweiht, So treibe sie mit Freundlichkeit. |
| Sonnt. 23 | G. 4 Adv. Dagobert | ☾ in Erdnähe naß | 7. 49 | 10. 14 | 7. 52 | 4. 7 | |
| Mont. 24 | Adam, Eva, Hermine | ☾ im ♉, ☾☍♀ | 9. 14 | 10. 36 | 7. 53 | 4. 8 | |
| Dienst. 25 | Christfest. | ☾☍♄, ☿ Abndst. | 10. 37 | 10. 54 | 7. 53 | 4. 8 | |
| Mittw. 26 | 2. Christfest. Stephan. | ☾ (in größter Ausweich. | 11. 58 | 11. 10 | 7. 53 | 4. 9 | |
| Donn. 27 | Johannes, Evangelist | 6, 51 v. ☾☍♂ | Vorm. | 11. 27 | 7. 54 | 4. 10 | |
| Freit. 28 | Kindleintag, Jolanthe | ☾□♃ kalt | 1. 19 | 11. 45 | 7. 54 | 4. 10 | |
| Samst. 29 | Thomas, Bischof, Jon. | ☾□☿ | 2. 39 | Nachm. | 7. 54 | 4. 11 | |
| **52.** Pr. Simeon's Gebet und Weissagung. Luk. 2, 25-35. Kath. Simeon und Anna, Luk. 2, 33-40. (Gal. 4, 1-7.) | | | Der Umgang mit Frauen ist das Element guter Sitten. | | | | |
| Sonnt. 30 | 1 S. n. W. David | rauh | 4. 0 | 0. 31 | 7. 54 | 4. 12 | |
| Mont. 31 | Schlußgdst. Sylvester. | ☾□♀ in kleinster Entfernung | 5. 19 | 1. 5 | 7. 54 | 4. 13 | |

Lieb' alle Menschen, sei nicht ein Lebens Feind,
Doch, welcher Tugend übt, der bitte, sei mein Freund.

18. Dezember 1870. Siegreiches Gefecht bei Nuits.

**Tagesläuge.**

| | | | |
|---|---|---|---|
| d. 2. 8 St. | 31 M. | | |
| „ 9. 8 „ | 21 „ | | |
| „ 16. 8 „ | 16 „ | | |
| „ 23. 8 „ | 15 „ | | |
| „ 30. 8 „ | 18 „ | | |

# Deutscher Kalender.

Der Hinkende bringt jetzt den deutschen Kalender seit dem Jahre 73. Er hat damit großes Lob und vielen Tadel geerntet. Er ist dafür gepriesen und verflucht worden. Der Herr Kanzleirath hat gesagt, wenn seine Therese ihn noch einmal mit einem Sprößling beschenken würde, so müßte er entweder Frodobert oder Asalinde heißen, natürlich je nachdem. Dagegen sagt der Herr Kaplan Policarpus Schwindel von Blutschwitzhausen es sei eine Schande mit dem heidnischen Kalender, wenn man einen so schönen christlichen habe, und seine Kinder, wenn — das Cölibat nicht wäre, dürften nicht anders heißen als: Cordula, Damasius, Portiunkula, Pankratius, und andere schöne christliche Namen, wie sie im Kalender stehen.

Nun der Hinkende läßt Euch ja die Wahl; übrigens sind die Namen im deutschen Kalender auch christlich und deutsch dazu, und das letztere ist freilich ein Fehler für die Vaterlandslosen, oder die ihr Vaterland über den Bergen haben. Es ist eben Geschmackssache. Dem Herrn Kaplan aber können wir noch einige Namen empfehlen von ganz neuen Heiligen, oder solchen, die es erst werden wollen, z. B. Peter Arbuez, der sich durch seine Geschicklichkeit im Zurichten von Ketzerbraten die Heiligkeit erwarb, Louise Lateau die Stigmatisirte, Isabella mit der Tugendrose, Theresia Städele, die in der Schweiz wegen unbefugten Blutschwitzens in's Zuchthaus kam, also eine Märtyrerin, und andere mehr.

| Schneemond. | Hornung. | Lenzmond. | Ostermond. | Wonnemond. | Brachmond. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. Odilo. | 1. Sigebert. | 1. Benno. | 1. Hugo, Sibich. | 1. Walburg. | 1. Kuno, Wolo. |
| 2. Meinolf. | 2. Bodo, Struthan. | 2. Herluga | 2. Roderich. | 2. Attala. | 2. Sindolf. |
| 3. Adelfried. | 3. Hadelin. | 3. Kunigund. | 3. Chrimhild. | 3. Friso. Wilbeth. | 3. Klothilde. |
| 4. Rigobert. | 4. Frodobert. | 4. Heimo. | 4. Walheide. | 4. Wolfhelm. | 4 Uta, Walgunde. |
| 5. Roger, Rando. | 5. Rolant. | 5. Walbod. | 5. Ortlieb. | 5. Gotthart. | 5. Winfried. |
| 6. Eckefried, Egfrid. | 6. Theodolf. | 6. Oldegar. | 6. Waltrut. | 6. Kunihilde, Gunild | 6. Norbert. |
| 7. Alderich Waldrich. | 7. Richhard. | 7. Kero, Gero. | 7. Amelgart. | 7. Gotfried, Otfried. | 7. Thorismund. |
| 8. Vilmut. | 8. Romuald. | 8. Manfred. | 8. Gotelind'. | 8. Ubald. | 8. Wittich, Hartung. |
| 9. Gudula. | 9. Berthold. | 9. Hedio. | 9. Chadalo, Welbert. | 9. Emma, Imma. | 9. Luitgard. |
| 10. Hartmut. | 10. Vollbert. | 10. Wielant. | 10. Allmann. | 10. Hulda, Eindeth | 10. Salaburg. |
| 11. Hilde, Hadebrant. | 11. Landolt, Ercha. | 11. Wittekind. | 11. Godebert. | 11. Erich, Gundo. | 11. Iduna. |
| 12. Mildrande. | 12. Pippin. | 12. Asbrant. | 12. Wigo (lo). | 12. Liebhilde. | 12. Harduin, Ortwin |
| 13. Dietmar. | 13. Walafried. Alfred. | 13. Giselher. | 13. Aduna. | 13. Wiborade. | 13. Nordhild |
| 14. Walerich. | 14. Wildburg (a). | 14. Mechthild. | 14. Trudo (bert). | 14. Hildeburg. | 14. Nanna, Helche. |
| 15 Itha. Warbeth. | 15. Sigfried. | 15. Lothar, Rothar. | 15. Albio. | 15. Imhilde. | 15. Boso. |
| 16. Thusnelda. | 16. Randolt. | 16. Heribert. | 16 Brigith. | 16. Landila. | 16 Volker. |
| 17. Ulfried. | 17. Widegern. | 17. Gertrut. | 17 Rudolf. | 17. Bruno. | 17. Theobald. |
| 18. Mainrad. | 18. Balder (ich). | 18. Anshelm. | 18. Edwart. | 18. Friedlinde. | 18. Arnulf. |
| 19. Wilfried. | 19. Humbert. | 19. Ingunde. | 19. Werner. | 19. Hildrun. | 19. Gerhart. |
| 20. Herfest | 20. Elisinde. | 20. Gambert. | 20. Hermann. | 20. Gudrun. | 20. Asalinde. |
| 21. Gibich. | 21. Kuminund. | 21. Relinde. | 21. Welf. | 21. Helmtraut. | 21. Chlosinde. |
| 22. Odram. | 22. Gosbert. | 22. Imideo. | 22 Erchenwalt. | 22. Isanthe. | 22. Similde. |
| 23. Bertram. | 23. Gottlieb. | 23. Lüdiger. | 23. Klodio. | 23. Godeleva. | 23. Edeltrud. |
| 24. Isberga. | 24. Albrecht. | 24. Lieberga. | 24. Albrecht. | 24. Herlinde. | 24. Reintraut. |
| 25. Poppo, Ingo. | 25. Fridegern. | 25. Rotwilda. | 25. Sigmar. | 25. Freha. | 25. Eberhart. |
| 26. Theodolinde. | 26. Otila. | 26. Guntram. | 26. Gambrin. | 26. Goderich. | 26. Retruda. |
| 27. Gotthold. | 27. Waldemar. | 27. Berengar. | 27. Oda (linde). | 27. Ludo (lf). | 27. Gunilde. |
| 28. Karl. | 28. Angelbert. | 28. Wilhelm. | 28. Helise. Else. | 28. Alnobert | 28. Iduberg (a). |
| 29. Rüdiger. | Ariowald. | 29. Marbod. | 29. Wolfhart. | 29. Amelung. | 29. Edburg (a). |
| 30. Algunde. | (Garibald). | 30. Wido, Udo. | 30. Rudibert. | 30. Wigand. | 30. Odowin, Edwin, |
| 31. Faramund. | Alarich. | 31. Rovena. | Eigel, Wendelbert. | 31. Katwald. | Sighilde. |
| Alwig, Rodebert. | Gundarich | Albhart | | Herdegen, | Sigeminne. |

| Heumond. | Erntemond. | Herbstmond. | Weinmond. | Windmond. | Wintermond. |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. Theobald. | 1. Ratbod. | 1. Merlinde. | 1. Volkmar. | 1. Hildegund. | 1. Hertha. |
| 2. Otto, Otthild. | 2. Gustav, Eudo. | 2. Wannig. | 2. Athelm. | 2. Ansgar | 2. Hidulf, Hibuld. |
| 3. Hagen(o). | 3. Walräm. | 3. Sido, Emiranthe | 3. Alapold. | 3. Winhilde. | 3. Gotthelf. |
| 4. Ulerich. | 4. Friedbrant. | 4. Wangio. | 4. Franz, Luitgart. | 4. Sigmund. | 4. Sigram. |
| 5. Wendelin. | 5. Oswalt. | 5. Herbold. | 5. Hellmut. | 5. Komwer. | 5. Ingeburg. |
| 6. Herrich. | 6. Krafto, Lindolf. | 6. Hacho. | 6. Lodemar. | 6. Alwine. | 6. Saro, Bertung. |
| 7. Karlmann. | 7. Grimolt. | 7. Alkmund. | 7. Amelolt. | 7. Angelbert. | 7. Reginald, Rein- |
| 8. Hans. | 8. Reinhart. | 8. Chnodomar. | 8. Traugott. | 8. Hermingild. | 8. Wiro. [hold. |
| 9. Wolf(ram). | 9. Dibold. | 9. Badomar. | 9. Diegitha. | 9. Gunila. | 9. Wilibald. |
| 10. Gunzo. | 10. Sigolf, Hildebold | 10. Otger, Odoaker. | 10. Gerhilde. | 10. Bardo(lf). | 10. Godo, Odo(lf). |
| 11. Hanno. | 11. Bernolt. | 11. Ingomar. | 11. Burkhart. | 11. Willimar. | 11. Wala(brecht). |
| 12. Wesso, Hatto. | 12. Wolfrade. | 12. Angila. | 12. Walther. | 12. Theuthilde. | 12. Gangolf. |
| 13. Heinrich. | 13. Friedhilde | 13. Thusinde. | 13. Wallia, Elimar. | 13. Wibert. | 13. Aldobrant. |
| 14. Teuto(bert). | 14. Brunhild. | 14. Malorich. | 14. Hermanarich. | 14. Friedrich. | 14. Bertilo. |
| 15. Hildebrant. | 15. Fridegund. | 15. Tummelich. | 15. Leupold. | 15. Netburga. | 15. Merwig. |
| 16 Heilwig. | 16. Rosamunde. | 16. Lambrecht. | 16. Erlefried. | 16. Landfried. | 16. Adelheid. |
| 17. Fromund. | 17. Welleda. | 17. Lidwina. | 17. Hedwig. | 17. Sigrade. | 17. Alkwin. |
| 18. Egeno(lf). | 18. Gundomar. | 18. Theoderich. | 18. Hadburg. | 18. Alboin. | 18. Wunnibald, |
| 19. Hilderich. | 19. Sebald, Ruthelin | 19. Marko(lf). | 19. Eckehart. | 19. Wibrant. | 19. Niblung. |
| 20. Arnold. | 20. Bernhart. | 20. Uring. | 20. Agilolf. | 20. Ulmann. | 20. Lanzo. |
| 21. Arbo, Erbo. | 21. Hunolt. | 21. Landolin. | 21. Thassilo. | 21. Angelinde. | 21. Lioba, Mergart. |
| 22. Alberich. | 22. Gerbert. | 22. Frida, Liebgart. | 22. Baldwin. | 22. Wendelgart. | 22. Bertha. |
| 23. Herwig, Heribald. | 23. Roswitha. | 23. Ruprecht. | 23. Eisfried. | 23. Edmund. | 23. Dagobert. |
| 24. Emich. | 24. Diether, Diethelm | 24. Adelhart. | 24. Harold. | 24. Bathilde. | 24. Hermine (gart). |
| 25. Hildebert. | 25. Ludwig. | 25. Friedebert. | 25. Leutfried | 25. Ivo. Tillo. | 25. Ettiche. |
| 26. Sigelinde. | 26. Edith, Egith. | 26. Amala(berga). | 26. Erchanger. | 26. Konrat. | 26. Stilicho. |
| 27. Rutharth. | 27. Gebhard. | 27. Audomar, | 27. Eldritha. | 27. Willigis. | 27. Dankwart. |
| 28. Mangolo. | 28. Frodulf. | (Ottmar). | 28. Markwart. | 28. Günther. | 28. Herwart. |
| 29. Egbert, Wippo. | 29. Dietger. | 28. Irnfried. | 29. Gisela. | 29. Helferich. | 29. Ewalt. |
| 30. Gerold, Sunno. | 30. Adolf, Radolf. | 29. Arngart. | 30. Hartmann. | 30. Gerwin. Erwin. | 30. Sämund. |
| 31. Friedegar. | 31. Roimund. | 30. Nudung. | 31. Wolfgang. | Ortrud. | 31. Gelferich. |
| Gerhart | Volkwein. | Totila, Toto. | Richmar. | Wolfing. | Genzo. |

## Vom Winter.

Der Winter dieses Jahres hat den 21. Dezember des vorigen Jahres, Vormittags 11 Uhr 26 Minuten seinen Anfang genommen, nämlich am kürzesten Tage, wo die Sonne in das Zeichen des Steinbocks tritt.

## Vom Frühlinge.

Der Frühling dieses Jahres beginnt den 20. März, Nachmittags 0 Uhr 19 Minuten und geht die Sonne in das Zeichen des Widders über.

## Von den Finsternissen.

In diesem Jahre werden sich fünf Finsternisse begeben, drei an der Sonne und zwei am Monde, von denen jedoch nur die beiden Mondfinsternisse in unserer Gegend sichtbar sein werden.

Die erste Finsterniß ist eine totale Mondfinsterniß und findet am 27. Februar statt. Der Mond tritt Abends um 6 Uhr 1 Min. in den Kernschatten der Erde, ist von 6 Uhr 59 Min. bis 8 Uhr 35 Min. verfinstert und verläßt den Kernschatten um 9 Uhr 32 Min., wonach der Halbschatten der Erde noch eine Stunde lang auf ihm sichtbar sein wird. Diese Verfinsterung wird in Australien, Asien, Europa und Afrika, das Ende im östlichsten Theil von Süd-Amerika und in Grönland sichtbar sein.

Die zweite Finsterniß ist eine bei uns unsichtbare partiale Sonnenfinsterniß von $3^1/_2$ Zollen (der Sonnendurchmesser zu 12 Zollen gerechnet), welche am 15. März von Morgens 1 Uhr 46 Min. bis 4 Uhr 32 Min. stattfindet und im Ural und in Turkestan gesehen wird.

Am 9. August begibt sich abermals eine für uns unsichtbare partiale Sonnenfinsterniß von $4^7/_{10}$ Zollen, von 4 Uhr 43 Min. Morgens bis 7 Uhr 20 Min. Sie wird im östlichsten Theil von Sibirien und in der nordwestlichen Ebene von Nordamerika beobachtet werden.

In der Nacht vom 23. auf den 24. August findet von Abends 9 Uhr 45 Min. bis Morgens 1 Uhr 40 Min. eine zweite sichtbare totale Mondfinsterniß statt, wobei der Mond von 10 Uhr 50 Min. bis 0 Uhr 35 Min. ganz vom Erdschatten bedeckt sein wird. Der Halbschatten der Erde wird vor und nach dem Eintritt des Mondes in den Kernschatten eine Stunde lang beobachtet werden. Die Finsterniß wird bei ihrem Beginn im westlichen Australien, in ihrem ganzen Verlauf in Europa, Asien, Afrika und Südamerika, und am Ende in der östlichen Hälfte von Nordamerika sichtbar sein.

Die letzte Finsterniß dieses Jahres ist wieder eine partiale und in unserer Gegend unsichtbare Sonnenfinsterniß von $7^2/_3$ Zollen. Sie beginnt auf der Erde überhaupt am Vormittag des 7. September um 11 Uhr 41 Min. und endigt um 2 Uhr 58 Min. Nachmittags. Man wird dieselbe nur im südlichen Theil von Südamerika beobachten.

## Vom Sommer.

Der Sommer fängt mit dem längsten Tage an, wo die Sonne in das Zeichen des Krebses kommt, nämlich am 21. Juni dieses Jahres, Morgens 8 Uhr 49 Minuten.

## Vom Herbste.

Dieser hat seinen Anfang, wenn die Sonne bei der andern Tag- und Nachtgleiche in das Zeichen der Waage tritt, den 22. September, Abends 11 Uhr 19 Minuten.

## Vom Jahresregenten.

Diesmal, für das Jahr 1877, ist es kein Regent, sondern eine Regentin. Die Sonne, die Königin des Himmels regiert auch das Jahr 1877. Eigentlich regiert sie jedes andere Jahr auch, und das Jahr müßte sonderbar aussehen, das nicht von der Sonne regiert würde. Sie ist unsere angestammte Königin, Jahr aus, Jahr ein, eine glänzende, strahlende Königin, eine Königin von Gottes Gnaden, im Jahre 1877 aber noch außerdem eine astrologische Königin.

Und eine stattliche Dame ist sie, nicht sehr schlank, denn sie ist 107 mal so dick wie unsere Erde, und erfreut sich eines Körpers, der eine ganze Million mal größer ist als die Erde. Kein Wunder, daß sie nicht sehr beweglich ist, und 25 Tage und 10 Stunden braucht, um sich ein mal um sich herum zu drehen.

Dabei ist sie eine sehr anziehende Persönlichkeit, denn ihre Anziehungskraft ist 320,000 mal größer als die der Erde, und ein Ballen Butter, der bei uns 1 Kilogramm wiegt, wiegt auf der Sonne 30 Kilogramm, so daß es für eine Hausfrau kaum mehr zu erschwingen ist, und die Kinder der „niedern Diener" auf der Sonne müssen ihr Butterbrod ohne Butter essen.

Aber wenn die Sonne eine glänzende, strahlende Königin ist, so hat sie doch auch ihre Flecken, (die meisten regierenden Königinnen haben sie) und zwar größere Flecken als selbst die der Königin Isabella, denn es gibt solche von der Größe unserer Erde. Es sind aber nicht die eigentlichen und ächten Königinsflecken, sondern mehr so eine Art Sommersprossen, weßhalb sie auch keinen Anspruch auf die Tugendrose des heiligen Vaters machen können.

Daß die Sonne es vorzugsweise ist, die stets das Wetter macht, ist bekannt, aber im Jahre 1877 muß sie nicht nur das Wetter machen, sondern sie muß als astrologische Königin auch vorher sagen, wie sie das Wetter machen will, sie muß eine Wetterprophetin sein.

Und so prophezeit sie denn einen ziemlich feuchten Frühlingsanfang, besonders im April, läßt den Mai und Juni anfangs sehr frostig, dann aber trocken und schön sein, will dem Sommer heiße Tage und kühle Nächte schenken und ihn mit ungestümer Witterung endigen. Sie verspricht uns einen schönen Herbst, und einen schönen Winter, den sie zwar frühzeitig ein- aber nicht heftig auftreten lassen, und im März mit Kälte schließen will.

Ob die Sonne richtig prophezeit hat, werden wir gewiß wissen am 31. Dez. 1877, Nachts 12 Uhr.

# Januar

## Gereimter Witterungskalender.

Bei Donner im Winter ist viel Kälte dahinter. — Morgens Morgenwind, Mittags Mittagswind, auf Tage schön Wetter wir sicher sind. — Gut Wetter kündet Abendroth, doch Morgenroth bringt Wind und Koth. — Der Abend roth und weiß das Morgenlicht, dann trifft den Wand'rer böses Wetter nicht. — Auf gut Wetter vertrau', beginnt der Tag nebelgrau. — Die dunkle Nacht heit'ren Tag macht. — Frühregen entweicht, eh' die Uhr auf Zwölfe zeigt. — Regen in der Frühe gilt' als gut Zeichen aller Welt. — Wenn kleiner Regen will, macht großen Wind er still.

# 31 Tage.

Letztes Viertel den 6. kalte Witterung.

Neumond den 14. kalt und unfreundlich.

Erstes Viertel den 22. Schnee und Regen.

Vollmond den 29. naß und windig.

☞ Sollte etwas Unrichtiges eingeschlichen sein, so bittet der Verleger um gütige Anzeige mittelst frankirten Briefes, er wird jeden Fehler sehr gerne verbessern, sowie ausgelassene Orte auf Verlangen einschalten. — An den mit einem † bezeichneten Orten wird mit dem Krämer- zugleich auch Viehmarkt abgehalten.

**Erklärung der Abkürzungen:**

K. Krämermarkt; KV. Krämer- und Viehmarkt; V. Viehmarkt; Rß. Roßm.; P. Pferdem.; Ld. Lederm.; Lw. Leinwandm.; Schf. Schafm.; Schw., Sw. Schweinem.; W. Wollm.; Hlz. Holzm.; Hf. Hanfm.; Fl. Flachsm.; Sp. Spinselm.; Fr. Farrenm.; Frcht. Fruchtm.; Tch. Tchm.; Kbl. Kübelm.; Grnm. Garnm.; LdSchHlz. Leder-, Schaf- und Holzmarkt; M. Messe; z. zugleich.

## Jahrmärkte.

2 Erbach
Leipzig Neuj.-M. (14 T.)
Waldshut 1878.
8 Bühlerthann
Ellwangen † z. Rß. (4 Tag.)
Habsheim
Stühlingen †
Thann (Elsaß)
9 Hausach
Solothurn
11 Munderkingen † z. R.
13 Burtheim a. Rh.
15 Markdorf
16 Knittlingen
18 Ehningen i. Gäu †
22 Diez
Grünsfeld
Hof Haurtm. (6 T.)
Neustadt Schwrzw. †
23 Kochendorf † z. R.
Mingolsheim bei Bruchsal
25 Altkirch
25 Kusel †
26 Gailingen † z. Schw.
29 Fehringen
Otten
30 Ehingen a. Don. †
Rosenberg Bauld.
Waldenburg †
31 Leonberg †
Rheinfelden

## Besondere Viehmärkte.

1 Meßkirch
2 Constanz
Crailsheim
Ehingen a. D.
Giengen a. Brenz
Haslach
Heidelsheim bei Bruchsal
Heitersheim i. Br.
Kandel (Langen-) z. Schw.
Kirchheim a. Teck
Leutkirch z. Rß.
Mannheim
Pforzheim
Reutlingen
Schaffhausen
Schömberg O.-Amt Rottweil
Stockach
3 Hall
Quirnbach
Radolfzell z. Schw.
Schopfheim i. Wiesenthal
Wangen Allgäu
4 Bietigheim
Ebersbach O.-Amt Göppingen z. Rß.
Gernsbach
Gießen i. Kleggau
Herbertingen
Kandel (Lngn-) Rdvh.
Kehl Schw.
Lauda Schw.
Leopoldshafen z. Sw
Wurzach
4 Zweibrücken
5 Hilzingen z. Schw.
8 Bretten
Bühl
Heckingen
Kandern
Kißlegg
Löffingen Schw.
Mengen
Weil die Stadt z. RßSchw.
9 Balingen (Wrtbg.)
Bühlerthann
Hälzheim
Schorndorf
Wehr
10 Bergzabern
Homburg, Pfalzb.
Vaihingen a. d. Enz
11 Bräunlingen z. S.w.
Freiburg
Jüny
Rastatt
Schönau, Wiesenth.
15 Ettlingen
Gebratzhofen
Langenau z. Rß.
Meßkirch
Pfedelbach
Rottenburg
Rottweil a. N
16 Balingen (Wrtbg.)
Haßloch
Kandel (Langen-) Schw.
Zell i. Wiesenthal
17 Altensteig
17 Bruchsal
Ettenheim
Pirmasens
Quirnbach
Radolfzell z. Schw.
18 Kandel (Langen-)
Krotzingen Schw.
Lörrach
Nebersteten Rß.
Rosenfeld
Sigmaringen
Zweibrücken
22 Alsenz
Durlach
Müllheim i. Brsg
23 Balingen (Wrtbg.)
Ulm a. d. D. Rß. (2 Tg.)
24 Bergzabern
Homburg, Pfalzb.
25 Gmünd
26 Thengen (Stadt)
29 Bopfingen
Leutkirch z. Rß.
Möhringen z. Schf.
Neuenbürg z. Rß. u. Schw.
Neunkirch, Canton Schaffhausen
Olnhausen
30 Nördlingen
Pfullendorf
31 Donaueschingen z. Schw.
Ueberlingen
Wangen (Allgäu) (Baden)

## Das ärgste Gift.

Im Löwen, an dem runden Tische, saß eine Gesellschaft, darunter mehrere Aerzte. Man behandelte die Tagesfrage, die das Städtchen in große Aufregung versetzte, die Vergiftung eines jungen Mädchens durch ihren Liebhaber, und stritt sich darüber, welches wohl das gefährlichste Gift sei.

„Strychnin", sagte der Herr Physikus.

„Cyankali", behauptete der Spitalarzt.

„Blausäure ist das stärkste Gift," meinte sein Assistent.

Der Barbier Peter saß an einem Seitentische, hinter seinem Glase Bier, und horchte aufmerksam auf das Gespräch der Herren Doktoren. Jetzt stand er auf, verbeugte sich und sagte: „Meine Herren, erlauben Sie, daß ich auch meine Meinung sage? Ich weiß, welches das gefährlichste Gift ist!"

„Nun Peter, da sind wir denn doch begierig; legen Sie los!" sagten die Herren heiter.

„Das gefährlichste Gift ist Opium!"

Die ganze Gesellschaft lachte.

„Ich kann es beweisen!"

„Nun, so beweisen Sie es!"

Der Peter stellte sich in Positur:

„Opium besteht aus . . . ."

„Besteht aus mekonsaurem Morphium, Narkatin und Codein", unterbrach ihn belehrend der Herr Apotheker.

Doch der Barbier ließ sich nicht aus der Fassung bringen: „. . . . besteht aus fünf Buchstaben, und zwar aus:

O = Orthodoxen
P = Pietisten
J = Jesuiten
U = Ultramontane und
M = Mucker.

„Meine Herren!" fuhr der Barbier mit Pathos fort, „eine Mixtur aus diesen Ingredienzien, wer die vertragen kann, der muß einen guten Magen haben. Darum sage ich, Opium ist das gefährlichste Gift."

„Bravo!" jubelte die ganze Gesellschaft; „der Peter hat Recht, Opium ist ein fürchterliches Gift. Kommen Sie, Herr Peter, setzen Sie sich zu uns, wir rücken zusammen."

## Der Adel.

Nicht daß ich alten Stolz auf Ahnen ganz verdamme;
Vielmehr erklär' ich, frei von Eifersucht:
Ich schätze gern den Baum nach seinem Stamme;
Doch lieber noch nach seiner Frucht.

# Februar

Regenbogen am Morgen, des Hirten Sorgen; Regenbogen am Abend, den Hirten labend. — Wind vom Sinken der Sonn' ist mit Regen verbündet, Wind vom Steigen der Sonn' uns gut Wetter verkündet. — Der Nebel, wenn er steigend sich erhält, bringt Regen, doch klar Wetter, wenn er fällt. — Dicke Abendnebel hegen öfters für die Nacht den Regen. — Wenn kurz vor Vollmond der Sonn' Aufgang neblig war, wird's Wetter in den nächsten Tagen warm und klar. — Winternebel bringt Thauen bei Ostswinde, bei Westwind treibt er weg das Gelinde. — Des Stinknebels Gewalt macht's Wetter rauh und kalt.

# 28 Tage.

Letztes Viertel den 5. frostige Luft.

Neumond den 13. veränderlich.

Erstes Viertel den 21. nasse Witterung.

Vollmond den 27. aufheiternd.

## Jahrmärkte.

1 Beutelsbach z. Holz
Ebersbach † z. R.
Herbertingen †
Steinheim a. d. Murr Hlz.
Wurzach †
2 Aalen
Dertingen (Wrtg.)†
Derzbach
Freudenstadt †
Güglingen †
Hof Km.
Niederstetten
Nürtingen † z. Rß.
SchwFldw.
Steinheim a. d. Murr †
3 Frotzingen
Tryberg
5 Adelsheim †
Eubigheim
Krautheim am Berg
Oberndorf †
Ostrach †
Riechen
Thiengen b. Waldshut
Ulm b. Oberkirch
Waiblingen Hlz.
Waldshut
6 Balingen (Wrtbg.)†
Metzingen † z. R.
Flchs.
Riegel †
Waiblingen † z. Flchs.
7 Ettenheim †
Langenbeutingen †
8 Aulendorf
Böblingen †
Donzhan †
Eigeltingen
Kaiserslautern
Melchingen †
Munderkingen † z. Rßm.
Rottweil a. N. †
Windischbuch
10 Mengen †
11 Annweiler
Wolfstein
12 Alzei (2 Tg.)
Bischofsheim a. d. Tauber
Erzingen (Klegg.) †
Laupheim † z. R.
Mockbach
Nekargemünd
Schliengen
Thann (Elsaß)
Weingarten = Altdorf †
Wiesenstaig †
Zell i. Wiesenthal
13 Bischofsheim a. Rh.
Creglingen
Elzach
Herrenberg † z. R.
Flchsm.
Kusel †
Lauffen † z. Hlz.
Ludwigsburg † z. Hlzm. (5 Tg.)
Schwarzach b. Bühl †
Meyr †
14 Biberach (Wrtbg.)† z. R.
15 Cannstatt † z. Rß.
Hlzm.
Ellmendingen †
Saulgau † z. Rß.
Wölfingen
19 Bühl
Ellwangen †
Haslach
Lenzkirch
Mergentheim (2 Tg.)
Neresheim †
Oehringen † z. Rß.
Riedlingen † z. Rß.
20 Hall (3 Tage).
Heilbronn † z. Rß.
Schw. Pdrm.
Metzingen Flchs. z. Viehm.
Pfirdt
Plochingen † z. Rß.
Solothurn
Staufen †
Waldenbuch †
21 Calw † z. Flchs.
Colmar
Lörrach
Wilferdingen
Winnenden †
22 Altkirch
Scheer †
Urach † z. Rß.
Waldkirch
Wimpfen a. B.
23 Basel M.
Welschingen †
24 Besigheim † z. Hlz.
Bottwar
Giengen a. d. Br. †
Groß-Rinderfeld
Kirchberg a. d. Jxrt
Laichingen Garn z. Lwd.
Marktgröningen † (2 Tage)
Oberrieringen †
Plieningen †
Spaichingen †
Veringenstadt †
Weikersheim
Weissenburg
26 Boxfingen †
Bräunlingen †
Friolzheim † z. Rß.
Hadsheim
Haigerloch †
Kippenheim
Ladenburg
Pfullendorf †
26 Schweinberg
27 Buchau †
Emmendingen †
Endingen †
Ettlingen
Feldrennach †
Obertettingen
Reichelsheim
Reutlingen †
Schaffhausen †
28 Bretten
Horb a. Neckar †
29 Bietigheim Hlz.

## Besondere Viehmärkte.

1 Bietigheim z. R.
Bonndorf
Dürrmenz = Mühlacker
Emmendingen
Gernsbach
Grießen i. Kleggau
Gschwend O.-A.
Gaildorf
Kandel, (Langen-)
Kehl Schw.
Lauda Schw.
Leopoldshafen z. Sw.
Zweibrücken
2 Hof z. Schw.
3 Aalen
Hilzingen z. Schw.
Lichtenau
5 Gmünd
Haslach
Hechingen
Heitersheim i. Br.
Kirchheim a. Teck
Meßkirch
Niederstetten
Pforzheim
Säckingen
6 Constanz
Crailsheim
Ehingen a. d. D.
Geisingen z. Schw.
Giengen a. d. Br.
Heidelsheim bei Bruchsal
Kandel, (Langen-) Schw.
Krautheim a. B.
Mannheim
Mosbach
Neuenstein
Reutlingen
Schaffhausen
Stockach
7 Hall
Quirnbach
Radolfzell z. Schw.
Schopfheim i. W.
Sindelfingen z. R.
Sulz a. Neckar.
Vorderweidenthal
Wangen i. Allgäu
8 Eichelzheim
Freiburg
Isny
Königsbach b. Durlach †
Rastatt
Schönau Wiesenth.
10 Tübingen z. Schaf
12 Bretten
Dörzbach
Kandern
Kißlegg
Löffingen z. Schw.
Rosenberg (Baul.)
Stühlingen
Tuttlingen
Weil d. St. z. Rß.
Schw.
Wolfstein
13 Bischofsheim
Gerabronn
Leonberg z. Rßm.
Mosbach
Rülzheim
14 Bergzabern
Creglingen
Hömburg, Pfalzb.
Osterburken
Vaihingen a. d. Enz
15 Engen z. Schw.
Hof z. RbSchw.
Kandel-Langen
Kirchberg a. d. Jrt.
Kritzingen z. Schw.
Lörrach
Mosbach
Sigmaringen
Zweibrücken
19 Ballenberg
Blaufelden
Ettlingen
Gebrazhofen
Göppingen
Langenau
Meßkirch
Müllheim i. Br.
Rottenburg a. N.
20 Bühl
Haßloch
Kandel, (Langen-) z. Schw
Knittlingen
Krautheim i. Thal.
Mergentheim
Ulm a. d. Donau z. Rßm. (2 Tg.)
Wilferdingen
Weinheim
Zell i. Wiesenth.
21 Altensteig
Bruchsal
Külzheim
Pirmasens
Quirnbach
Radolfzell z. Schw.
Vorderweidenthal
22 Bieberach (Württb. z. Rßm.
Engen z. Schw.
Gailingen z. Schw.
Heidelsheim b. Brsl.
Neuhausen b. Pforzheim z. RßSchw.
Oberkirch
23 Thengen (Stadt)
24 Laichingen
26 Alfenz
Durlach
Giengen a. d. Brz.
Groß-Rinderfeld
Lauterecken
Leutkirch z. Rß.
Möhringen z. Sch.
Neunkirchen (Kt. Schaffhausen).
Schliengen
Weikersheim
27 Gmünd
Neuenstadt an der Kocher
Nördlingen
Oberelmsingen
Pfullendorf
Schweinberg
28 Bergzabern
Donaueschingen z. Schw.
Homburg, Pfalzb.
Reutlingen z. Schf.
Ueberlingen
Wangen i. Allgäu
Weingarten b. Durlach.

## Deutsche Vielseitigkeit.

Ein Deutscher und ein Italiener waren gute Freunde, und verstand der Deutsche nicht viel Italienisch, so verstand der Italiener eben so viel Deutsch, doch beide so viel, daß sie mit einander reden konnten.

„Du bist mein Freundbusen", sagte der Italiener zu dem Deutschen.

Da lachte der Deutsche: „Man sagt nicht Freundbusen, sondern Busenfreund; der Busen vornen, der Freund hinten."

Das merkte sich der Italiener, und als sie am Golf von Genua standen rief der Italiener, entzückt über den herrlichen Anblick: „O du schönes Busenmeer!"

Jetzt lachte der Deutsche wieder: „Man sagt nicht Busenmeer, sondern Meerbusen."

Der Italiener aber schaute seinen Freund mit großen Augen an und sagte kopfschüttelnd: „Sonderbare Leute, Ihr Deutsche; haben den Busen bald vornen, bald hinten."

# März

Viel und langer Schnee: viel Heu, aber mager Korn und dicke Spreu. — Viel Schnee, den uns der Lenz entfernte, läßt zurück uns reiche Erndte. — Bleibt der Winter zu fern, nachwintert er gern. — Je drei Tage Sonn' und einen Tag Regen, gleicht aus in Niedrung und Höhe den Segen. — Mag der Rauch nicht aus dem Schornstein wallen, dann will der Regen aus den Wolken fallen. — Baumblüthen, die im Herbste kommen, haben kimftigen Sommer die Frucht genommen. — Stellen Blätter an den Eichen schon vor Mai sich ein, gedeiht im Lande Korn und Wein. — Verblühen nur die Kirschen gut, auch Roggen im Blüh'n dann was Rechtes thut.

# 31 Tage.

Letztes Viertel den 6. schönes Wetter.

Neumond den 15. trüber Himmel. Unsichtbare Sonnenfinsterniß.

Erstes Viertel den 22. stürmisch.

Vollmond den 29. nasse Luft.

## Jahrmärkte.

1 Bietigheim † z. Rß.
Flachsm.
Dürrmenz = Mühlacker †
Engen †
Lauda † z. Schw.
Neuenbürg
Pfalzgrafenweiler † z. Rßfldch.
Pfullingen †
Rosenfeld †
Schorndorf z. Holz. Schnittwaaren
Stein b. Bretten †
Ulm a. d. Donau Lederm. (2 Tg.)
Weingarten b. Drlch.
Wiernsheim † z. Rß.
Wurzach †
4 Beltheim (3 Tg.)
5 Alsdorf † z. Rß.
Blieskastel
Grießen i. Kleggau †
Heubach †
Kirchheim a. d. Teck †
Leutkirch † z. Rß.
Mainz M. (14 Tg.)
Marbach Holz.
Mönchweiler †
Rottenburg a. N. †
Schönau b. Hdlbg.
Schüpf
Stühlingen †
Ulm a. d. D. Tch. (3 Tage.)
Unterschüpf
6 Adelsheim †
Backnang Leder.
Durlach
Graben
Oetisheim †
Säckingen †
Schopfheim i. W.
Schorndorf †
7 Radolfzell †
Schömberg O.-A. Rottweil †
Schriesheim
Sindelfingen † z. Rß.
Tegernau †
Wimpfen a. Berg
Wolfach †
8 Altkirch
Blumberg †
Ditzingen † z. Rß.
Lorch †
Weißkirch †
Munderkingen † z. Rß.
Mühlburg
Sulz a. N. † z. Rß.
10 Gundelsheim †
11 Grünstadt
Kandel (Langen) (2 Tg.)
12 Eichstetten
Ellwangen †
Erpfingen
Heiligkreuzsteinach †
Kleinlauffenburg †
Liptingen †
Mahlberg
Maikdorf
Neustadt (Schrzw.) †
Oberndorf †
Olten
Renchen
Schramberg O. A. Oberndorf †
Thann, Elsaß
Thengen (Stadt) †
Trochtelfingen †
Waibstadt
Weild. St. † Rß Sw.
Weingarten Altd. †
13 Baden-Baden (2T.)
Breisach Alt-
Ebingen †
Geisingen † z. Sw.
Gochsheim
Grünsfeld
Neunkirchen bei Neckargemünd
Kandern
Kißlegg †
Kusel †
Kützsheim
Ludwigsburg Ldrm.
Maisch
Pfirdt
Pforzheim
Pirmasens
Rust b. Ettenheim
Sinsheim † z. Schf.
Solothurn (8 Tg.)
Tuttlingen † z. Schf.
Villingen † z. Fr.
14 Vorberg
Bruchsal
Ueberlingen †
Vaihingen a. d. Ex. †
15 Vingen, Sigm. †
Gschwend O.-A. Gaildorf †
Hayingen † z. Rß.
Saargemünd
Sulzfeld †
Zweibrücken †
18 Frankenthal
Vorderweidenthal
19 Appenweier
Ballenberg
Diez
Eberbach
Gernsbach
Güglingen z. Hlzm.
Hardheim
Hornberg †
Mudau
Schiltach
Wenkheim
20 Altensteig †
Backnang † z. Rß.
Berggabern
Buchheim b. Meßkirch †
Eßlingen †
Gamertingen †
Güglingen †
Heiligenberg †
Heppenheim (2 Tg.)
Herbolzheim
Klosterwald †
Knittlingen †
Lahr †
Möhringen †
Oberlenningen
St. Georgen bei Villingen †
Stetten a. k. M. †
Weinheim
21 Frankfurt a. M. M. (21 Tage.)
Herrischried †
Krauchenwies † Sig.
Schwetzingen
Steinbach b. Bühl
Waldshut
22 Aach †
Altkirch
Beutelsbach † z. Fl.
Bönnigheim Holz.
Empfingen †
Hüfingen †
Ittersbach b. Pforzheim †
St. Wendel
23 Blaubeuren †
Bönnigheim †
Geislingen † z. Rß.
Heimingen †
Welzheim † z. Fl. Lwd. (2 Tg.)
Wildbad †
24 Triberg
26 Groß Ingersheim
Leinstetten
Meckesheim
26 Heidenheim †
Weikersheim
27 Alpirsbach † z. Rß.
Bickesheim
Eningen a. d. Alm. †
Hettingen †
Wertheim
28 Beilstein Holz
Kehl Schw.
Kirchen b. Lörrach
Kürnbach b. Bretten
Leopoldshafen z. Sw.
Zweibrücken
2 Burladingen Sigm.
Hilzingen z. Schw.
3 Ravensburg Rß.
5 Ballenberg
Endingen
Haslach
Hechingen
Heitersheim i. Brsg.
Leutkirch z. Rß.
Löffingen
Meßkirch
Neckargemünd
Niedersteten
Pfedelbach
Pforzheim
6 Constanz
Crailsheim
Darmstadt
Ehingen a. d. D
Heidelsheim bei Bruchsal
Kandel (Langen-) Schw.
Marbach
Mosbach
Reutlingen
Rosenberg (Bault.)
Schaffhausen
Schriesheim
Schüpf
Stockach
Unterschüpf
Waldsee z. Rß.
7 Donaueschingen z. Rßfohl.
Hall
Quirnbach
Radolfzell z. Rß.
Schopfheim i. W.
Vorderweidenthal
Wangen i. Allgäu.
8 Bräunlingen z. Sw.
Freiburg
Giengen a. d. Br. z. Rßm.
Ihny
Meningen b. Bret.
Schönau Wiesenth.
Thiengen b. Waldsh.
10 Hof z. Rßm.
12 Bretten
Bühl
Dörzbach
Gochsheim
Immendingen bei Möhringen z. Sw.
Kandern
Kißlegg
Löffingen Schw.
Mengen
Osterburken
13 Ellwangen z. Rß.
Mannheim
Mosbach
Rülzheim
Wehr
14 Berggabern
Homburg, Pfalzb
Külsheim
15 Baden-Baden z. Sw.
Heilbronn Schf.
Hof z. Schw.
Kandel (Langen-)
Kenzingen
Krotzingen Schw.
Langensteinbach
Lörrach
Rastatt
Rothweil a. Kaiserst.
Sigmaringen
Spaichingen
z. 19 Gebratzhofen
Homburg, Pfalzb. Rß
Meßkirch
Müllheim Breisg.
Oehringen
Wachenheim Pfalzb.
20 Blaufelden
Ettlingen
Großerslingen
Hardheim
Haßloch
Kandel (Langen-) Schw.
Ludwigsburg
Schwetzingen
Ulm a. d. Donau Rß.
Zell i. Wiesenthal
21 Bruchsal
Dertingen b. Werth.
Ettenheim
Pirmasens
Quirnbach
Rottweil a. Neckar
Vorderweidenthal
22 Biberach (Wtbg.) Rß.
Steinbach b. Bühl
23 Augsburg Schf.
26 Alsenz
Durlach z. Farrm. mit Preisvertheil.
Engen z. Schw.
Lauterecken
Leonberg z. Schw.
Leutkirch z. Rß.
Neunkirchen Canton Schaffhausen
Odernheim
Schlingen
Tuttlingen
27 Creglingen
Göppingen Schf.
Herrenberg
Nördlingen
Oberrimsingen
Offenburg
Pfullendorf
28 Berggabern
Calw
Donaueschingen z. Schw.
Gaillingen z. Schw.
Homburg Pfalzb.
Sulz a. Neckar
Ueberlingen
29 Dürrmenz = Mühlacker

## Besondere Viehmärkte.

1 Bonndorf
Emmendingen
Gernsbach
Herbertingen
Hof z. Schw.
Kandel (Langen)

## Aus der Schule.

Lehrer: „Fritz, wo lebte der fromme Prophet Elias?"

Fritz: „Der fromme Prophet Elias lebte in der Wüste."

Lehrer: „Gut; und wie heißt man solche fromme, gottselige Männer, die einsam in der Wüste wohnen?"

Fritz: „Solche fromme, gottselige Menschen, die einsam in der Wüste wohnen, heißt man . . . . heißt man . . . .!"

Lehrer: „Nun, heißt man? Martin, weißt Du es?"

„Heißt man Wüstlinge!" schrie der Martin.

# April

Halten Birk' und Weid' ihr Wipfellaub lange, ist zeit'ger Winter und gut Frühjahr im Gange. — Viel Buchnüsse und Eicheln dann wird euch der Winter nicht schmeicheln. — An schönen Herbst und gelinden Winter glaubt, werden die Bäume schon im September entlaubt; doch bleibt das Laub bis zum November hinein, wird strenger Winter kein kurzer sein. — Wenn am Schlehdorn vor Mai schon Blüthe hängt, schon Reife der Roggen vor Jakobi empfängt. — Um Heu und Korn wird schlimmer es steh'n, je später wir Blüthen am Schlehdorn seh'n. — Viel Hopfen, viel Korn, viel Speis' und Trank und Gott dem Herrn verdoppelten Dank!

# 30 Tage.

Letztes Viertel den 5. stürmisch und naß.

Neumond den 13. feuchte Winde.

Erstes Viertel den 20. schöne Witterung.

Vollmond den 27. abwechselnd.

## Jahrmärkte.

2 Bartenstein
Beilnein †
Bischofsheim a. N.
Creglingen
Dertingen, Wrtbg. †
Dornstetten †
Essingen †
Gerabronn
Groß-Laufenburg †
Heidelsheim bei Bruchsal †
Hilsbach b. Sinsh.
Hochheim a. M.
Kehl † z. Sw. (2. T.)
Kirchheim a. N †
z. Rßm.
Klingenmünster
Laichingen † z. Rß.
Langenau
Laupheim † z. Rß.
Markgröningen † (2 Tage).
Merklingen O. A.
Leonberg † z. Rß.
Mutterstadt
Neresheim †
Nürtingen † z. Rß
SchFlchSwdtch.
Oehringen
3 Achern (2 Tg.)
Balingen Wrtbg. †
Blochingen
Böblingen †
Ehingen a. d. D. †
Eubigheim
Freudenberg
Hördten b. Gsbch. †
Mergentheim (2 T.)
Mosbach
Mühlhausen
Offnadingen
Oppenau
Pfirdt
Saulgau † z. Rß
Seelbach.
Sigmaringen †
Spaichingen †
Solothurn
Villingen † z. Frcht.
Waldsee
Wallbürn
Wiesloch
Zell a. Harmsb. †
4 Ostrach †
Straßburg M. (3 T.)
5 Herbertingen †
Hockenheim
8 Augsburg M (14 T.)
9 Olten
Riedlingen † z. Rß.
Schönau i. W.
Than (Elsaß)
Thiengen b. Wldsh.
Weil die Stadt †
i. RßSchw.
10 Adelsheim †
Feldrennach †
Heilbronn † z. Rß.
Schw. u. Ldr.
Steinheim an der Murr Holz.
Waiblingen † Fl.
12 Munderkingen † Rß.
Pfullingen †
16 Constanz z. M. †
Hechingen †
Leipzig O.-M (3 W.)
Neunkirchen Canton Schaffhausen.
17 Großengstingen †
Stettfeld b. Bruchs.
19 Gengenbach †
Neuenburg a. Rß. †
Stockach †
20 Landau (5 Tg.)
22 Hüngheim.
23 Bopfingen †
Bottwar.
Donaueschingen † z. Schw
Epfenbach.
Freiburg M. (6 T.)
Gebratzhofen †
Görwyl †
Grafenhausen bei Bonndorf †
Gundelsheim.
Homburg v. d. Höh
Lauterecken †
Leimen.
Mengen †
Rastatt
Rottweil a. N. †
St. Georgen b. Frb.
Weil b. Lörrach
24 Beerfelden
Buchau †
Darmstadt M. (8 T.)
Kenzingen †
Neuenstadt a. d. Kchr.
Ochsenburg
Schwenningen Amt Meßkirch †
Tübingen † Schaf
Bischofsheim a. d. T.
Bretten
Ichenheim
Säckingen †
Stein a. Rhein
25 Altkirch
Isny † RßFlacks.
Obertirch
Rosenfeld †
Thengen Stadt †
29 Erenkoben (3 Tg.)
Scheibenhardt
Schweigen Pflzb.
Wachenheim Pfalzb.
30 Brackenheim Holz.
Fehringen.
Marbach Holz.
Stühlingen †
Windischbuch

## Besondere Viehmärkte.

2 Kirchheim u. T.
Kirchheim u. T. Frn.
Leutkirch z. Rß.
Meßkirch
3 Constanz
Crailsheim
Darmstadt
Ehingen a. d. D.
Endingen.
Gächingen.
Giengen a. d. Brenz.
Haslach
Heidelsheimb. Brchs.
Heitersheim i. Br.
Horb a. Neckar.
Kandel Lang.-Schw
Langenau
Mannheim
Niederstetten
Pforzheim
Reutlingen
Schaffhausen
Säckingen
Stockach
4 Hall
Mergentheim
Quirnbach
Radolfszell z. Rß.
Schopfheim i. Wthl
Sindelfingen.
Vorderweidenthal
Wangen i. Allgäu.
5 Bietigheim z. Rß.
Bonndorf
Emmendingen
Gießen i. Kleggau
Hall Schaf
Hof z. RdvSchw.
Kandel (Langen-) z. Rdv
Kehl Schw.
Landa Schw.
Leopoldshafen z Sch.
Murzach
Zweibrücken.
6 Hilzingen z. Schw.
7 Lindau Rß.
9 Bretten
Bühl
Kandern
Kirblegg
Löffingen Schw.
Tuttlingen
10 Rülzheim
Waldenburg
Wehr
11 Bergzabern
Homburg, Pfalzb.
Külsheim
Rottenburg a. N.
Vaihingen a. d. E.
12 Bräunlingen z. Sch.
Isny.
Schönau i. Wthl.
Trochtelfingen
16 Ettlingen.
Gebratzhofen
Meßkirch
Mühlheim i. Br.
Stuttgart Roß (2 Tage).
Wachenheim Pflzb.
17 Haßloch
Kandel (Lang.-) Sch.
Knittlingen
Zell i. Wiesenthal
18 Bruchsal
Ettenheim
Pirmasens
Quirnbach
Radolfszell z. Rß
Vorderweidenthal.
19 Donauesching. Schf.
Ebersbach OA. Gpg
Ebingen
Hof Rdv Schw.
Kandel-Langen Rdv
Kretzingen Schw.
Lörrach
Luzern z. Rß.
Zweibrücken
20 Gamertingen
Alfenz
Durlach
Ellwangen
Gmünd
24 Geisingen z. Schw
Kusel
Leimen
Nördlingen
Oberrimsingen
Pfullendorf
Rastatt
Weinheim
25 Bergzabern
Homburg i. Pfalzb.
Ueberlingen
Wangen i. Allgäu
26 Eicholzheim
Freiburg
Gailingen z Schw.
30 Immendingen bei Möhringen Schw.
Leutkirch z. Rß.
Neunkirchen C. Sfb
Olnhausen
Weil d St z RßSchw

## Einer von unsere Leut'.

Ein kunstsinniger, aber ziemlich unbemittelter Jude war ein großer Verehrer von Rubinstein, und als der große Clavierspieler in der Residenz ein Concert gab, speiste Isaak nichts zu Mittag um sich ein Concertbillet kaufen zu können. Auf dem Comptoir wurde er aber ungebührlich lang zurückgehalten, und als er den Concertsaal betrat, fand er ihn zu seinem Schrecken bereits dicht angefüllt. Er drängte sich durch, in der Hoffnung weiter vorne noch einen Platz zu finden, aber überall wurde er abgewiesen. Auf der vordersten Bank saßen lauter Juden. aber gar vornehme, reiche Herren, Banquiers und Commerzienräthe, mit dicken goldenen Ketten auf den Westen, Brillantringe an den Fingern, und Orden in den Knopflöchern. Diese betrachteten unsern armen Isaak mit verächtlichen Blicken, und keiner machte Miene ein wenig zu rücken, um seinem Glaubensgenossen Platz zu machen.

Unser Isaak war aber nicht auf den Kopf gefallen, und mit einem pfiffigen Lächeln und einem tiefen Bücking sagte er: „Erlauben Se mer gütigst auch noch ein Plätzchen, bei Ihnen, meine Herren, gehöre ich doch auch auf d'r Nationalbank!"

## Einfachstes Mittel.

„He, guter Freund", sagte ein Handwerksbursche zu einem Berliner Eckensteher, „können Sie mir nicht sagen, wie ich wohl zu nächst nach der Stadtwogtei kommen kann?"

„Männeke, dat kann ich Se man wohl sagen", antwortete der Eckensteher. „Wenn Se am schnellsten in de Stadtwogtei kommen wollen, so jehe Se man hier in den Laden da drüben, und stehlen Se gefälligst een Pack seidene Taschentücher."

# Mai

Lassen die Frösche sich hören mit Knarren wirst du nicht lange auf Regen harren. — Wenn der Froschlaich im Lenz tief im Wasser war, auf trockenen Sommer deutet das; liegt er flach nur oder am Ufer gar, dann wird der Sommer besonders naß. — Wenn Johannes-würmchen schön leuchten und glänzen, kommt Wetter zur Lust und im Freien zu Tänzen; verbirgt sich das Thierchen bis Johanni und weiter, wird's Wetter einstweilen nicht warm und nicht heiter. — Wenn Spinnen fleißig weben im Freien, läßt sich dauernd schön Wetter prophezeien, weben sie nicht, wird's Wetter sich wenden, geschieht's bei Regen, wird bald er enden.

# 31 Tage.

Letztes Viertel den 5. regnerisch.

Neumond den 13. kühle Luft.

Erstes Viertel den 20. angenehm.

Vollmond den 27. veränderlich.

## Jahrmärkte.

1 Aalen
Aulendorf †
Blaubeuren †
Brackenheim †
Buchen
Bühlerthann.
Dertingen b. Wth.
Dörzbach.
Ettenheimmünster
Freudenstadt †
Giengen a. d. Br. †
Göppingen †
Hardheim.
Heilbronn N. (1 W.)
Herrenalb †
Homburg v. d. Höh.
Kirchberg a. d. Jrt.
Lauffen † z. Holz.
Löffingen †
Mannh. M. (14 T.)
Marbach † (2 T.)
Munderking. † Rß.
Neckargerach.
Neuhausen a. d. F. †
Neuenstein.
Niederstetten.
Oberndorf †
Philippsburg.
Schenkenzell.
Solothurn.
Urach † z. Rß.
Vaihingenstadt †
Villingen † Fr.
Waldkirch.
Waldshut.
Wolfersweiler.
Zuzenhausen
2 Brackenheim
Laudenbach
Rheinfelden
Ueberlingen †
3 Bliesskastel
Bonndorf †
Cannstatt † z. RßHlz.
Dürrmenz-Mühlacker †
Engen †
Friedrichshafen †
Haßmersheim
Inneringen (Sig.) †
Lichtenau
Ludwigsburg Leder.
Schömberg O.-A. Rottweil †
Wurzach †
4 Borberg
Gailingen † Schw.
5 Neu-Ulm (3 Tg.)
Triberg
6 Haßloch
Landau
Willgartswiesen
7 Benningheim
Birkenau
Bräunlingen †
Haigerloch †
Haslach
Kirchheim a. d. Teck †
Münchweiler, Pfalzb.
Münzesheim bei Bretten
Offenburg (2 Tg.)
Olten
Pfullendorf †
8 Eichstetten †
Ersingen
Friedrichsthal †
Heiligenberg †
Külsheim
Künbach b. Bretten
Leonberg †
Metzingen † z. Rß
Flchs.
St. Georgen bei Villingen †
Schorndorf Hlz. Schnittwaaren
Speyer M. (8 T.)
Staufen †
Strümpfelbrunn
Tuttlingen † z. Schf
Wehr †
Weinheim
Wertheim
Zweibrücken
9 Calw † z. Fl. (2 T.)
Eppingen
Furtwangen
Weingarten, Altdorf (3 Tg.)
11 Eschwend O.-A.
Gaildorf †
13 Herrheim
Kirchheimbolanden (2 Tg.)
Maikammer
Wolfstein
14 Billigheim b. Mosbach
Bühl
Eberbach
Gernsbach
Königsbach b. Durlach
Krauchenwies (Sigmaringen) †
Laichingen Grnwd.
Leutkirch † z. Rß.
Lorch †
Neustadt Schwrzw. †
Rangendingen †
Schramberg O. A.
Oberndorf †
Schüpf
Tettnang †
Thann, Elsaß
Tiefenbronn b. Pfz †
Unterschüpf †
15 Emmendingen †
Geisingen † z. Schw
Grombach
Herrenberg † z. RßFl
Klosterwald †
Langensteinbach †
Ludwigsburg † z Holz. (5 Tg.)
Pirmasens
St. Wendel
Schorndorf †
Thiengen b. Waldshut †
Zell i. Wiesenthal †
16 Altkirch
Ettenheim †
Heubach †
Quirnbach †
Radolfzell †
Vaihingen a. d. E. †
Wolfach †
17 Havingen † z. Rß
Hüfingen †
Melchingen †
Meßkirch †
Neuenbürg
Rorschach
Scheer †
21 Alsenz
Alpirsbach † z Rß
Blaufelden
Creglingen
Dautenzell
Dürkheim (2 Tg.)
Ehningen i. Gäu †
Eichtersheim H. Lwr
Eigeltingen
Friolzheim † z. Rß.
Gernersheim (3 Tg.)
Groß-Laufenburg †
Heidelberg M (8 T.)
Hochheim a. M.
Kehl † Schw. (2 T.)
Laichingen † z. Rß
Langenau
Laupheim † z. Rß
Leinstetten
Neckarelz
Neresheim †
Oehringen
Reichenbach O.-A. Freudenstadt †
Siegelsbach
Stuttgart M. (1 W.)
Waibstadt
Waldenburg
Wimpfen a. B.
22 Achern (2 Tg.)
Altheim
Balingen (Wtbg.) †
Bischofsheim a. d. T.
Ehingen a. d. Don. †
Ertingen, Klegg. †
Heilbronn † z. Rß.
Schw. Veder.
Herbolzheim
Horb a. N. †
Knittlingen †
Menzingen b. Breit.
Merchingen
Mergentheim (2 T.)
Mühlhausen
Neubenau
Nußloch
Pfirdt
Rothenfels b. Rast †
Saargemünd
Saulgau † z. Rß.
Schaffhausen †
Schrepfheim Wiesen.
Seelbach
Solothurn
Todtmoos
Trochtelfingen †
Villingen † z. Frcht.
Waldsee
28 Wangen i. Allgäu †
Worms (3 Tg.)
Zell a. H. †
23 Biberach (Wrttbg.) † z. Rß.
Biberach Kinzigth.
Colmar
Crailsheim (Mußwiesenmesse (3 Tg.)
Ellwangen †
Merchingen †
Schwarzach b. Bühl †
24 Altensteig †
Neufreistett
25 Basel Messe
26 Weißenburg
27 Kaiserslautern
Kandel (Langen-) (2 Tg.)
Acch †
Heiligkreuzsteinach †
Markdorf
Riedlingen † z. Rß
Rottenburg a. N. †
Schliengen
Weil d St † RßSchw
Wiesensteig † z. Rß
29 Backnang † z. Rß.
Bruchsal
Ebingen †
Kusel †
Mönchweiler †
31 Stetten u. Holstein †
Rosenfeld †
Weingarten b. Durl.

## Besondere Viehmärkte.

1 Heidelsheim b. Brchsl
Kandel (Langen-) Sw
Stockach
Schaffhausen
Constanz
Reutlingen
Darmstadt
Ebingen a. d. D.
Giengen a. d. Brenz
Crailsheim
2 Altensteig
Aalen
Ballenberg
Bühlerthann
Hardheim
Neuenstein
Niederstetten
Quirnbach
Radolfzell z. Rß.
Sulz a. Neckar
Vorderweidenthal
Wangen i. Allgäu
Hall
Schopfheim i. W.
3 Bietigheim
Emmendingen
Gernsbach
Grießen i. Kleggau.
Herbertingen
Hof z. RdvSchw.
Kandel (Langen-) Rdv.
Kehl Schw.
Kirchberg a. d. Jart
Landa Schw.
Leopoldshafen z. Sw
Zweibrücken
4 Hilzingen z. Schw.
Lichtenau
7 Endingen
Haslach
Hechingen
Heitersheim i. Brsg.
Leutkirch z. Rß.
Meßkirch
Mötringen z. Schf.
Pforzheim
8 Mannheim
Pfalzgrafenweiler
Rülzheim
9 Bergzabern
Homburg, Pfalzb.
Jßny (Wtbg.)
Külsheim
Rastatt
Sindelfingen z. Rß.
10 Schönau, Wiesenth.
14 Bretten
Dörzbach
Kandern
Kißlegg
Löffingen Schw.
Mengen
Stühlingen
Wolfstein
15 Bühl
Haßloch
Kandel (Langen-) Schw.
Reutlingen
Schüpf
Schweigern
Spaichingen
Straßburg z. Rß 3 T.
16 Winnenden
Alsdorf
Bruchsal
Dertingen b. Werth
Pirmasens
Quirnbach
Radolfzell z. Rß.
Vorderweidenthal
17 Freiburg i. Br.
Kandel (Langen-) z. Rdv.
Kenzingen
Krozingen Schw.
Lörrach
Rothweil a. Kaiserst.
Sigmaringen
Zweibrücken
21 Gebrethofen
Meßkirch
Müllheim i. Br.
Wachenheim Pfalzb.
22 Blaufelden
Ettlingen
Krautheim a. Berg
Langenau
Obertrimsingen
Rottweil a. Neckar
Waldenburg
23 Bergzabern
Bischofsheim
Homburg, Pfalzb.
Mergentheim
24 Gmünd
Hof z. RdvSchw.
25 Thengen, (Stadt.)
28 Immendingen bei Möhringen z. Sw
Alsenz
Bopfingen
Durlach
Lauterecken
Leutkirch z. Rß.
Neuenbürg z. RßSch.
Neumkirchen C. Sft.
Odernheim
Schliengen
29 Lahr
Neuenstadt a. K.
Nördlingen
Pfullendorf
30 Donaueschingen Sw
Ueberlingen
Wangen i. Allgäu
Weingarten b. Durl.
31 Dürrmenz Mühlack

# Juni

Eine Elster allein, ist schlechtes Wetter Zeichen, doch fliegt das Elsterpaar, wird schlechtes Wetter weichen. — Singt die Grasmück, eh' treiben die Reben, will Gott ein gutes Jahr uns geben. — Steigt die Lerche hoch, singt lange hoch oben, habt bald ihr das lieblichste Wetter zu loben. — Der Mittag des Freitags prägt oft uns ein, wie künftiger Sonntag das Wetter wird sein. — Im Juni wird des Nordwinds Horn noch nichts verderben an dem Korn — Stellt der Juni mild sich ein, wird mild auch der Dezember sein. — Juni trocken mehr als naß, bringt gut Naß dem Winterfaß. — Hat Medardus am Regen Behagen, will er ihn auch in die Erndte jagen.

## 30 Tage.

Letztes Viertel den 4. schöne Witterung.

Neumond den 11. Wolken.

Erstes Viertel den 18. bringt Regen.

Vollmond den 25. trüber Himmel.

## Jahrmärkte.

1 Schwenningen O.A.
Rottweil †
Wallbürn
2 Nördlingen Messe (10. Tg)
3 Carlsruhe M. (9T.)
4 Singen †
Stühlingen †
Sulzburg
Kirchheim a.d. Teck †
Olten
5 Malsch b. Wiesloch
Neunkirchen bei Neckargemünd
Nördlingen Woll (2 Tg.)
Steinheim a. d. M. Holz.
6 Bietigheim Holz
Ostrach †
Sindelfingen † z. Rß
Steinheim a.d. M. †
7 Becherbach †
Beutelsbach z. Holz
Bietigheim † z. Rß
Flachs
Colmar
Herbertingen †
Liptingen †
Sulz a. N. † z. Rß.
Sulz a. N. Woll.
Waldshut
8 Schömberg O.A.
Rottweil †
10 Billigheim Pfalzb. (2 Tg.)
11 Augsburg Wll (4T.)
Ellwangen †
Gamertingen †
Herrischried †
Oberschefflenz
Thann Elsaß
Ulm a. d. Donau M. (1 Woche)
Waiblingen Holz
12 Beilstein z. Holz
Ellwangen Wollm. (4 Tg.)
Nürtingen † z. Rß. Flchs.Wd.Tuch.
Oberndorf †
Pforzheim
Stetten am kalten Markt †
13 Spaichingen †
14 Ebersbach O.A.
Göppingen † z. Rß
Murderkingen † z. Roß.
Pfullingen †
Ulm a. d. D. Woll (3 Tg.)
Waldenbuch †
15 Burladingen (Sigmaringen) †
Hilzingen †
16 Ravensburg † z. Schw. (2 Tg)
Tuttlingen Woll (3 Tg.)
17 Vorderweidenthal
18 Habsheim
Memmingen Woll. (3 Tg.)
Möhringen † z. Schaf.
Schramberg O.A
Oberndorf †
Sigmaringen †
19 Hördten b. Gerneb †
Thengen, Stadt †
20 Furtwangen
Görwhl †
Sasbach b. Achern
21 Blumberg †
Hayingen † z. Rß.
Kirchheim a. Teck Woll (6 Tg)
24 Annweiler
Erbach
Feldkirch
Reichelsheim
Weingarten Altdorf (3 Tg.)
Blaubeuren
Bühlerthann †
Donaueschingen † z. Schw.
Geislingen † z. Rß.
Grenzach
Lenzkirch
Mengen †
Mosbach z. Leinentch
Neckargemünd
Oppenau
Rottweil a. N. †
Stetten a. Heuchelberg (2 Tg.)
Straßburg Messe (14 Tg.)
Thengen b Waldsh
Weikersheim
Zell a. H. †
26 Gochsheim
Kochendorf † z. Rß.
Metzingen † Flchs.
St. Blasien †
St. Georgen bei Villingen †
Weinsberg
27 Schwetzingen
28 Besigheim Holz
Ehingen a. d. D Woll Schaf
Pfalzgrafenweiler † z. Rß Flachs.
Welzheim † z. Fl. Lwd. (2 Tg.)
29 Altkirch
Bartenstein
Besigheim †
Creglingen
Diemringen
Gerabronn
Giengen a. d. Br. †
Hilsbach b. Sinsh.
Hornberg †
Pfedelbach
Schiltach
Sindolsheim
Wenkheim
Wimpfen im Thal Tuch. (2 Tg.)
30 Schönau Wiesenthl.
Wurzach
Zweibrücken
11 Bretten
Bühl
Kandern
Kißlegg
Löffingen Schw.
Pfedelbach
12 Külzheim
Ulm a. d. D. Rß (2 Tg.)
Waiblingen
Wehr
13 Bergzabern
Homburg, Pfalzb.
Külsheim
Vaihingen a. d. E.
14 Bieberach (Wrtbg.) Rß.
Bräunlingen
Freiburg
Ißny
Rastatt
Ravensburg Schf.
Schönau, Wiesenth.
Steinbach b. Bühl
18 Ettlingen
Gebratzhofen
Metzkirch
Müllheim i. Br.
Wachenheim, Pfalzb.
19 Haßloch
Kandel, (Langen-) Schw.
Knittlingen
Zell i. Wiesenthal
20 Bruchsal
Ettenheim
Pirmasens
Quirnbach
Radolfzell z. Schw.
21 Kandel, (Langen-) Rdv.
Kretzingen Schw.
Lörrach
Zweibrücken
25 Alsenz
Durlach
Gmünd
Gochsheim
Lauterecken
Leutkirch z. Rß.
Leonberg z. Schw.
Neunkirchen, Can.
Schaffhausen
26 Nördlingen
Oberimsingen
Pfullendorf
Schwetzingen
Weinheim
27 Bergzabern
Homburg, Pfalzb.
Ueberlingen
Wangen im Allgäu
Winnenden
28 Dürrmenz-Mühlacker
Eichelzheim
Gailingen z. Schw.
Hof RdvSchw.
29 Giengen a. d. Br.

## Besondere Viehmärkte.

1 Hilzingen z. Schw.
4 Carlsruhe Pfd.
Endingen
Großeislingen
Haslach
Hechingen
Heitersheim i. Br.
Leutkirch R.
Meßkirch
Neckargemünd
Niederstetten
Pforzheim
Säckingen
5 Constanz
Crailsheim
Darmstadt
Ehingen a. d. D.
Giengen a. d. Br.
Heidelsheim b. Brchf
Horb a. N.
Kandel, (Langen-) Schw.
Mannheim
Reutlingen
Schaffhausen
Stockach
Waldsee z. Rß.
6 Hall
Offenburg RßSchw.
Quirnbach
Schopfheim i. Wsth.
Wangen i. Allgäu
7 Bonndorf
Donaueschingen Schf
Emmendingen
Grießen i. Kleggau
Gschwend, O.-A.
Gaildorf
Hof RdvSchw.
Kandel, (Langen-) Rdv.
Kehl Schw.
Kirchen b. Lörrach
Landa Schw.
Leopoldshafen z. Sw.
Neuhausen b. Pfzb. z. RßSchw.
Oberkirch

## Auch im Grabe keine Ruh'!

Wenn die Leute nicht sterben wollen, ist das Amt des Todtengräbers ein schlechtes Geschäft. Das hat der Todtengräber Paule in Rumpelfingen erfahren, denn Rumpelfingen ist ein gesunder Ort, und selbst die ältesten Leute liefen darin heraus mit strammen Waden und rothen Backen, just dem Paul zum Possen, dessen Waden immer schlotteriger, und dessen Backen immer dünner wurden. Um den Paul zu ärgern, war in Rumpelfingen in drei Jahren Niemand gestorben, und folglich auch Niemand begraben worden, denn Rumpelfingen hatte keinen Arzt, der den Paule hätte in Nahrung setzen können. Kein Wunder, daß der Todtengräber am Hungertuch nagte, und mit seinen Steuern stark im Rückstande war.

Endlich hatte der Himmel ein Einsehen mit seiner Noth, und ließ den reichen Hofbauer vom Heuboden auf die Tenne herabfallen, daß er den Hals brach, und Morgen sollte er begraben werden.

Der Paule stand tief in dem schon beinahe fertigen Grabe, und pfiff sich, in Aussicht auf den Leichenschmauß und die Leichensporteln, ein lustiges Liedchen, da — nahte das Verhängniß.

„Paule!" rief eine Stimme in das Grab hinunter!

Paul schaute auf, und vor Schrecken entfiel ihm die Schaufel, denn oben stand die gefürchtete Gestalt des Steuerexecutors, und entfaltete ein bedenklich aussehendes Papier:

„Paule, im Namen des Gesetzes, wegen rückständiger Steuer!"

# Juli

Dampft das Strohdach nach Gewitterregen, kehrt's Gewitter wieder auf andern Wegen. — Dem Sommer sind Donnerwetter nicht Schande, sie nützen der Luft und dem Lande. — Merkt, daß heran Gewitter zieh', schnappt auf der Weid nach Luft das Vieh; auch wenn's die Rasen aufwärts streckt und in die Höh' die Schwänze reckt. — Giebt Ring oder Hof sich Sonn' oder Mond, bald Regen und Wind uns nicht verschont. — Sommers-Höhenrauch in Menge ist Vorbote von großer Winterstrenge. — Sind Abends über Wies' und Fluß Nebel zu schauen, wird die Luft schön anhaltend Wetter brauen. — Staubregen wird guter Bote sein, schön trocken Wetter tritt dann ein.

# 31 Tage.

Letztes Viertel den 3. beständig.

Neumond den 10. veränderlicher Himmel.

Erstes Viertel den 17. Sonnenschein.

Vollmond den 25. schön und warm.

## Jahrmärkte.

1 Frankenthal
Thann, Elsaß
2 Ballenberg
Engen †
Haslach
Olten
3 Badenweiler
Dallau
Heilbronn Wll. (4T.)
Neuhausen a. d. F. †
Oetisheim †
Riegel †
4 Fehringen
Kißlegg †
5 Rosenfeld †
Stockach †
8 Freudenberg
9 Bingen (Sigm.) †
Bischofsheim a. d. T.
Großelfingen †
Mergentheim (2T.)
Niederstetten
Obrigheim
Osterburken
10 Feldrennach †
Gemmingen
Oestringen b. Bruch.
Solothurn
Tuttlingen † z. Schf.
Waiblingen † Flchs.
11 Cappel u. Rodeck †
Vaihingen a. d. E. †
12 Aach †
Ditzingen †
Empfingen †
Gschwend O.-A.
Gaildorf †
Melchingen †
Meßkirch †
Munderking. † z Rß
15 Bopfingen Jpfmesse (2 Tg.)
16 Limbach
Marbach Holz.
Plieningen
17 Altkirch
Beerfelden
Marbach †
Pfirdt
18 Calw † z. Fl. (2T.)
Stetten u. Holst. †
19 Böblingen †
Bonndorf †
Hayingen † z. Rß.
Ludwigsburg LbN.
20 Neufra †
Oberndorf †
22 Erbach
Grünstadt
Neresheim
23 Brümlingen †
Grünsfeld
Hechingen †
Innerlingen (Sig.) †
Kleinlaufenburg †
Krautheim a. Berg
Möhringen † z. Schf.
Mönchweiler †
Schweinberg
Wollenberg
24 Asperg Holz.
Ebingen †
St. Georgen bei Villingen †
Zweibrücken
25 Aalen
Alfdorf † z. Rß.
Asperg † z. Ldr.
Backnang Ldr.
Buchen
Eßlingen †
Freudenstadt †
Gundelsheim
Hall (3 Tg.)
Heidenheim
Homburg v. d. Höhe
Kirchberg a. d. J.
Laupheim † z. Rß.
Leinstetten
Ostrach †
Plochingen †
Schweigern
Staufen †
Tiefenbronn bei Pforzheim †
Urach † z. Rß.
Schäferlauf
Villingen † z. Frcht.
Waldshut
26 Hüfingen †
Jßny † z. RßFlchs.
Ittersbach b. Pforzheim †
St. Wendel
Todtmoos
Waldkirch
29 Erbach
30 Birkenau
Hof Hauptm. (6 T.)
Neustadt Schwrzw †
Riedlingen † z. Rß.
31 Altensteig †
Balingen (Wrtb.) †
Buchau †
Eningen a. d. Achl †
Geisingen † z. Schw.
Strümpfelbrunn

## Besondere Viehmärkte.

2 Endingen
Dörzbach
Haslach
Heitersheim i. Br.
Kirchheim a. d. Teck
Langenau
Leutkirch z. Roß
Meßkirch
Pforzheim
Säckingen
3 Backnang
Constanz
Darmstadt
Ehingen a. d. D.
Crailsheim
Heidelsheim bei Bruchsal
Kandel (Langen-) Schw.
Mannheim
Reutlingen
Schofshausen
Steckach
4 Aalen Schaf
Biberach (Wrtbrg.) Farrenm.
Hall
Quirnbach
Radolfzell z. Schw.
Schopfheim i. Wsthl
Sindelfingen z. Rß.
Sulz a. Neckar
Wangen i. Allgäu
5 Bietigheim
Donaueschingen Schf
Emmendingen
Gernsbach
Grießen i. Klegg.
Herbertingen
Kandel (Langen-) Rdv.
Kehl Schw.
Kirchen b. Lörrach
Lauda Schw.
Leopoldshafen z. Sw
Wurzach
Zweibrücken
6 Hilzingen z. Schw.
7 Göppingen
9 Bretten
Bühl
Großengstingen
Immendingen bei Möhringen z. Sw.
Kandern
Kißlegg
Löffingen Schw.
Mengen
Rottenburg a. N.
Stühlingen
10 Bischofsheim a. d. T.
Mergentheim
Niederstetten
Rülzheim
Schorndorf
Thengen b. Waldsh.
Wehr
11 Berazabern
Homburg, Pfalzb.
Külsheim
12 Freiburg
Jßny
Königsbach b. Durlach z. Rß.
Rastatt
Schönau, Wiesenth.
16 Bopfingen
Ellwangen
Ettlingen
Gebrathofen
Herrenberg
Meßkirch
Müllheim i. Brsg.
Schömberg O.-A. Rottweil
Wachenheim, Pfalzb.
17 Blaufelden
Haßloch
Kandel (Langen-) Schw.
Knittlingen
Tübingen z. Schf
Zell i. Wiesenthal
18 Bruchsal
Ettenheim
Pirmasens
Quirnbach
Radolfzell z. Schw
19 Hof RdvSchw
Kandel (Langen-) Rdv.
Krotzingen Schw.
Kürnbach b. Bretten
Langensteinbach
Lörrach
Rothweil a. Kaiserst.
Sigmaringen
Trochtelfingen
Zweibrücken
23 Alsenz
Durlach
24 Augsburg Schf.
Oberimsingen
Schweinberg
25 Bergzabern
Donaueschingen z. Schw
Homburg, Pfalzb.
Spaichingen
Ueberlingen
Wangen i. Allgäu
26 Aalen
Gailingen z. Schw.
Kirchberg a. d. Jart
Leonberg z. Schw.
Urach Schf.
Thengen, Stadt
28 Lauterecken
30 Gmünd
Heidenheim Schaf
Leutkirch Roß
Neuenbürg z. RßSw
Neunkirchen Canton Schaffhausen
Weil d. St. RßSchw.
31 Nördlingen
Pfullendorf
Schriesheim

„Martin," rief der Paule, dem Steuerbeamten in feierlichem Tone zu, „Martin, bedenke, du stehest am Rande des Grabes!" Nun war die Thatsache, daß der Steuergardist Martin, trotz seines wohlgenährten Exekutionsbäuchleins, am Rande des Grabes stehe, allerdings nicht zu läugnen, allein Martin schien durch diese, sonst etwas bedenkliche Situation, nicht im Geringsten angegriffen, und wiederholte mit großer Gemüthsruhe sein: „Im Namen des Gesetzes!"

Da rief der Paule in komischer Verzweiflung: „So hat man denn nicht einmal im Grabe Ruhe vor Steuern und Execution!"

## Die gefährliche Drohung.

Auf einem schmalen Feldwege, der nur für eine Person Platz bietet, und an dessen beiden Seiten tiefer Morast liegt, begegnen sich ein schwäbischer Bauer und ein Handwerksbursche. „Geh' mir aus dem Weg, Kerl!" ruft der Bauer dem Handwerksburschen zu, „sonst muß ich Dir's machen, wie dem gestrigen!" Erschrocken tritt der Handwerksbursche auf die Seite und läßt den Bauer vorüber. Dann aber fragt er den Bauer: „Landsmann, wie habt Ihr's dem gestrigen gemacht?" Der Bauer erwiederte lachend: „Weil er mir nicht aus dem Weg gegangen ist, bin ich ihm aus dem Weg gegangen."

## Unverbesserlich.

„Magst Dich unter die Erde verkriechen vor Scham, Du Thunichtgut!" schilt die Frau den betrunkenen Gatten. „So gib mir die Kellerschlüssel!" erwiederte dieser zerknirscht.

# August

Der Sichel vergißt nicht Barnabas, er sorgt gern für's längste Gras. — Ist's in der ersten Augustwoche heiß, bleibt der Winter lange weiß. — Im August Wind aus Nord, jagt Unbeständigkeit fort. — Mehlthau im August ist sehr ungesund, ungereinigt Obst bring nicht in den Mund. — Wenn der Kuckuk lange nach Johanni schreit, so ruft er die theure Zeit. — Sind Laurentius und Bartholomäus schön, ist guter Herbst vorauszuseh'n. — Schön Wetter zu Maria Himmelfahrt, verkündet Wein von bester Art. — Wenn großblumig wir viele Disteln erblicken, will Gott gar guten Herbst uns schicken. — Bringt Rosamunde Sturmeswind, so ist Sybille uns gelind.

## 31 Tage.

Letztes Viertel den 2. Gewitter.

Neumond den 9. veränderlich. Unsichtbare Sonnenfinsterniß.

Erstes Viertel den 15. trüb und windig.

Vollmond den 23. schöner Himmel. Sichtb. Mondfinstern.

Letztes Viertel den 31. abwechselnd.

## Jahrmärkte.

1 Schriesheim
2 Herbertingen †
Herrischried †
5 Malterdingen
Wolfstein
6 Alpirsbach †
Bühl
7 Bergzabern
Heppenheim (2Tg.)
8 Wolfach †
9 Oberkirch
Welschingen †
10 Dertingen b. Wertheim.
Ehrenstetten †
Grießen i. Kleggau †
Groß-Rinderfeld
Hardheim
Mudau
Wolfersweiler
12 Edenkoben (3T)
Kirchheimbolanden (2T)
Lauterecken
Scheibenhardt
13 Ellwangen †
Gebratzhofen †
Mainz M. (14 T)
Schramberg O.-A
Oberndorf †
Thann, Elsaß
Weinheim
Wiesloch
14 Durlach
Kenzingen †
Solothurn (8T)
14 Wehr †
15 Helmstadt
Schiltach
16 Altkirch
Bretten
Ettlingen
Haßmersheim
Todtmoos
19 Kaiserslautern
20 Gernsbach
Güglingen Holz
Großlauffenburg †
Ladenburg
Neckarelz
Oppenheim (2T)
Sinsheim
Stühlingen †
Unterschüpf †
21 Bickesheim
Güglingen †
Klosterwald †
Knittlingen †
Lahr †
Neuenstadt a. Koch. †
Pirmasens
Rosenberg (Bauld.)
Stuttgart Tuch
22 Breisach, Alt-
Radolfzell †
Winnenden †
23 Mühlburg
24 Besigheim † Holz
Dornstetten †
Eppingen
Erbach, Volksfest
Eubigheim
Gamertingen †
Göppingen †
Grünsfeld
Hof kl. markt
Homburg v. d. H.
Laichingen Gr. u. Kl.
Markgroeningen
Schaf.
Mundelkingen † Rß.
Nürtingen † Roß,
Fchs, Lwnd, Tuch.
Oberndorf †
Oehringen
Oppenau
Schenkenzell
24 Spaichingen †
Thengen d. Waldsh.
Weikersheim
Weil die Stadt † Rß.
Schwn.
Welzheim †
Wertheim
Wildbad †
Wimpfen a. Berg
Zell a. Harmersb.
Zuzenhausen
26 Alsenz
Annweiler
Dürkheim (2Tg)
Laumersheim
Geinsheim
Klingenmünster 3T.
27 Bischofsheim a. d. T.
Eicholzheim
Heitersheim Brsg. †
Pfullendorf †
Rastatt
Schriesheim
Windischbuch
28 Bruchsal
Endingen †
Quirnbach †
Schaffhausen †
Schromberg O.-A.
Rottweil †
Waldenburg †
29 Ettenheim †
Frankfurt a. M. M. (21 Tg)
Heilbronn † Roß, Schwn. u. Leder
Rheinfelden
Ueberlingen †
30 Aach †
Eberbach
Rosenfeld †
31 Brackenheim Holz
Tuttlingen Woll 3T

## Besondere Viehmärkte.

1 Ehingen a. d. D. Schf.
Hall
Quirnbach
Radolfzell z. Schw.
Schopfheim i. Wiesth
Sulz a. N.
Wangen im Allgäu
2 Bietigheim z. Roß
Donaueschingen Schf.
Dürrmenz Mühlacker
Emmendingen
Gernsbach
Hof Rind Schw.
Kandel-Langen Rnd.
Kehl Schw.
Lauda Schw.
Leopoldshafen Schw.
Wurzach
Zweibrücken
3 Hilzingen z. Schw.
6 Endingen
Engen z. Schw.
Haslach
Hechingen
Heitersheim i. Br.
Kirchheim a. d. T.
Leutkirch z. Roß
Loeffingen
Metzkirch
Pforzheim
Sackingen
Sulz a. Neck. Schf.
Tuttlingen
Wollstein
7 Bühl
Constanz
Crailsheim
Darmstadt
Ehingen a. Donau
Gingen a. d. Brenz
Heidelsheim bei Bruchsal
Kandel (Langen-) Schw.
Mannheim
Reutlingen
Schaffhausen
Sinsheim Schf.
Stockach
8 Bergzabern
Bruchsal
Homburg Pfalzb.
9 Oberkirch
Schönau i. Wsenth.
Bonndorf
Freiburg
Isny
10 Heilbronn Schf.
11 Groß-Rinderfeld
13 Bretten
Hardheim
Kandern
Kißlegg
Lauterecken
Loeffingen Schw.
Mengen
14 Ellwangen Schaf
Rülzheim
15 Dertingenb. Wertheim.
Quirnbach
Vaihingen a. d. Enz
16 Göppingen Schaf
Kandel (Langen-)
Krotzingen Schw.
Lörrach
Pirmasens
Rottweil a. Neckar
Sigmaringen
Zweibrücken
18 Backnang Schf.
Mergentheim Schf.
20 Ettlingen
Gailingen † z Schw.
Gebratzhofen
Metzkirch
Müllheim i. Br.
Neresheim Schf.
Wachenheim, Pfalzb.
21 Augsburg Schaf
Haßloch
Kandel Langen Schw
Kusel m. Faselprsvr.
Zell im Wiesenth.
22 Bergzabern
Homburg, Pfalzb.
23 Markgroeningen
24 Hof z. Schw. und Schaf
Langenau
27 Bopfingen
Alsenz
Durlach
Leutkirch z. Rß.
Moehringen Schaf
Neunkirchen, Cantn. Schaffhausen
Rottenburg a. N.
Schliengen
28 Bischofsheim a. d. T.
Nördlingen
Oelnhausen
Oberrimsingen
Pfullendorf
Rastatt
Schriesheim
29 Donaueschingen Sch
Ueberlingen
Wangen i. Allgäu
30 Dürrmenz-Mühlacker
31 Thengen (Stadt)

## Der Müller und der Advokat.

(Schwäbisch.)

„Ei, Müller, sag' ist dees au wahr?"
Hat g'sait an Advokat,
„Daß Petrus dein Vorfährer net
In Himmel g'lasse hat?
Er hätt', so heißt's, als Grund angeb,
Er dürf en net laun nei',
Weil d' Müller pfleget insgesammt
A diebisch Völkle z' sei'!"

„An dera Sach' mei lieber Herr,
Ist weele ebbes dran'
No' hat mei' Vorfähr' auf der Stell
D' Beruafing kündigt an!
Wie hat er zum St. Peter g'sait,
Gang nei' in's Himmelhaus,
Und schickt mer zum a Rechtsbeistand
An Advokate raus!

St. Peter als a guater Mann
Erfüllt sein Wunsch au glei',
Er möcht' em gearn zoige, daß
Er net parteiisch sei!
Bald aber kommt er z'ruck und sait:
„Komm rei', sei's jetzt wia's wöll',
Do drine—n—ist koi' Advokat.
Dia sind all' in der Höll'!"

# September

September-Gewitter sind Vorläufer von starem Wind. — Sankt Michels-Wein wird Herren-Wein sein, Sankt Gallus-Wein ist Bauern-Wein. — Sind Zugvögel nach Michaelis noch hier, haben bis Weihnachten lind Wetter wir. — In vielem Herbstesnebel seh' ein Zeichen von viel Winterschnee. — Späte Rosen im Garten, schöner Herbst und der Winter läßt warten. — Ist die Hechtsleber der Galle zu breit, vorn spitz, nimmt harter Winter lange Zeit in Besitz. — Bläst Jakobus weiße Wölkchen in die Höh', sind's Winterblüthen zu vielem Schnee — Jakobus in sonnenheller Gewalt macht uns die Weihnacht kalt.

# 30 Tage.

Neumond den 7. unfreundlich. Unsichtbare Sonnenfinsterniß.

Erstes Viertel den 14. Regen und Wind.

Vollmond den 22. aufheiternd.

Letztes Viertel den 30. beständig.

## Jahrmärkte.

1 Brackenheim †
Erzingen (Klegg.) †
Heubach †
Odenheim b. Brchsl.
Ulm a. d. Donau
LbrM. (2 T.)
2 Albersweiler
Brackenheim
Deidesheim
Harmersbach i. Thl.
Ilbesheim, Pfalz
(3 T.)
Lambsheim
Neustadt a. d. H.
(3 Tg.)
Rheinzabern (3 T.)
3 Birkenau
Bliescastel
Ergen †
Gschwend O.-A.
Gaildorf †
Haigerloch †
Olten
Waibstadt
4 Dertingen (Wrtb.) †
Horb a. N. †
Kusel †
Oberlenningen
Oberstettingen
Stetten a. kl. R. †
Zaisenhausen
5 Furtwangen
Görwihl †
Quirnbach †
Radolfszell Hzgesch
Schw.
6 Badenweiler
Eßlingen † z. Fß.
Mahlberg
Mönchweiler †
Neuenbürg
Sulz a. N. † z. Rß.
7 Todtmoos
8 Hornberg †
Külsheim
Mockesheim
Oberriexingen †
Wenkheim
9 Dirmstein
Edelsheim
Freinsheim (3 T.)
Landau
Mutterstadt
10 Diez
Adelsheim †
Großengstingen †
Hilsbach b. Sinsh.
Lixtingen †
Merklingen O.-A.
Leonberg † z. Rß.
Neunkirchen Gant.
Schaffhausen
Schliengen
St. Wendel
Thann (Elsaß)
11 Altensteig †
Bickesheim
Groß-Ingersheim
Langenbrücken
Pfirdt
Reutlingen †
Solothurn
Wolfersweiler
12 Bönigheim Holz
Deidesheim Kübel
(2 T.)
Bathingen a. d. E. †
13 Bönnigheim †
Herrenberg † z. Rß.
Flachs
Singen †
14 Bönningheim
Ehingen a. d. D. †
z. Schaf
Friedrichshafen †
Mengen †
Mühlhausen
Offnadingen
St. Blasien †
Zell a. Harmrsb. †
16 Albisheim †
Buchen Schützen od.
großer Markt
Wilgartswiesen
(2 Tg.)
17 Alzey (2 T.)
Bischofsheim a. N.
Constanz M. †
Heiligkreuzsteinach
Lorch † z. Flchs.
Markdorf
Offenburg (2 T.)
Rottweil a. N. †
18 Backnang † z. Rß.
Bingen (Sigm.) †
Eichstetten †
Feldrennach †
Gaggenau †
Kürnbach b. Bretten
Metzingen † z. Rß.
Flachs
19 Colmar
Lörrach
Radolfzell Hzgesch
† Schw.
Tettnang †
20 Havingen † z. Rß.
Steinheim a. d. M.
Holz
Wöffingen
21 Aglasterhausen
Auggen
Basel M.
Bödigheim
Bartenstein
Creglingen
Diemringen
Dörzbach
Ettenheimmünster
Gerabronn
Heidenheim †
Herrenalb †
Neudenau
Neuenstein
Reichenbach O.-A.
Freudenstadt †
Sindelfingen † z. Rß
Steinheim a. d. M. †
Thengen (Stadt) †
Trochtelfingen †
Villingen † Frucht
Waiblingen † z. Flchs
Waldshut
Weil b. Lörrach
22 Weißenburg
23 Königshofen (8 T.)
24 Aalen
Heidelsheim bei
Bruchsal †
Leipzig Michaelis-
Messe (3 W.)
Menzingen b. Br.
Sulzfeld †
Ulm b. Oberkirch
Wangen i. Allgäu †
25 Balingen (Wrtbg.) †
Darmstadt M (8 T.)
Pforzheim
26 Calw † z. Flachs
(2 T.)
Emingen a. d. Achl. †
Schwetzingen
Unterkappel b. Bühl
27 Altkirch
Cannstatt † Rß Schf
Farrenm. Viksft.
Ebersbach O.-A.
Göppingen † z. Rß.
Empfingen †
Schwenningen OA.
Rottweil †
Lichtenau
Pfullingen †
28 Stetten u. Holst. †
29 Augsburg M (14 T.)
Ballenberg
Fehringen
Feldkirch
Freudenstadt †
Gundelsheim
Hall (3 Tg.)
Hördten b. Gernsb. †
Hof Kimarkt.
Lauffen
Mannheim Messe
(14 Tg.)
Mudau
Munderkingen † z.
Roß
Saargemünd
Saulgau † z. Rß.
Seelbach
Tryberg
Veringenstadt †
30 Dürkheim (3 Tg.)
Homburg. Pfalzb.

## Besondere Viehmärkte.

3 Aalen Schaf
Bühl
Endingen
Haslach
Hechingen
Kirchheim a. Teck
Leutkirch z. Rß.
Meßkirch
Pforzheim
Säckingen
Tuttlingen
4 Constanz
Crailsheim
Darmstadt
Ehingen a. d. D.
Fächingen
Giengen a. d. Br.
Heidelsheim b. Brch.
Horb a. N.
Kandel (Langens)
Schw.
Mannheim
Neckargemünd
Reutlingen
Schorndorf
Stockach
Schaffhausen
5 Donaueschingen
Rßfohlen
Hall
Memmingen Schaf
Quirnbach
Schopfheim i. Wthl
Wangen i. Allgäu
6 Bietigheim
Emmendingen
Gernsbach
Gmünd
Grießen i. Kleggau
Herbertingen
Kandel (Langens)
Rdv.
Kehl Schw.
Kirchen b. Lörrach
Lauda Schw.
Leopoldshafen z. Sw
Wurzach
Zweibrücken
7 Hilzingen z. Schw.
Sulz a. N. Schaf
10 Bretten
Ellwangen
Immendingen bei
Möhringen z. Sw.
Kandern
Kitzlegg
Külsheim
Lauterecken
Löffingen Schw.
Stühlingen
11 Bietigheim Schaf
Gerabronn
Rülzheim
Sinsheim z. Schaf
Wehr
Weinheim
12 Bergzabern
Crailsheim Schaf
Homburg, Pfalzb.
Osterburken Schaf
Reutlingen Schaf
13 Bräunlingen Schw.
Donaueschingen Sch.
Freiburg
Hof RdvSchw.
Ihny
Königsbach b. Drlch.
z. Rß.
Rastatt
Schönau i. Wiesthl.
Wolfstein
15 Mergentheim Schf.
17 Augsburg Schaf
Dörzbach
Ettlingen
Gebrotzhofen
Meßkirch
Wachenheim, Pflzb.
Weil die Stadt z.
RßSchw.
18 Blaufelden
Geisingen z. Schw.
Haßloch
Heiligkreuzsteinach
Kandel (Langens)
Schw.
Knittlingen
Schaffhausen
Zell i. Wiesenthal
19 Bruchsal
Ettenheim
Pirmasens
Quirnbach
20 Bonndorf z. Farn.
Heidenheim Schaf
Kandel (Langens)
Rdv.
Kretzingen Schw.
Kürnbach b. Brtn.
Lörrach
Neuhausen b. Pfrzh.
† RßSchw.
Sigmaringen
Zweibrücken
21 Dornstetten
Laichingen
24 Alsenz
Durlach
Leutkirch z. Rß.
Müllheim, Breisg.
Neuenbürg z. Rß.
Schw.
Neunkirchen Canton
Schaffhausen
Pfedelbach
Aalen
25 Göppingen Schaf
Heilbronn Schaf
Schwetzingen
Nördlingen
Oberrimsingen
Pfullendorf
Kusel
26 Bergzabern
Homburg, Pfalzb.
Ueberlingen
Wangen i. Allgäu
27 Dürrmenz Mühlack
Gailingen z. Schw.
Luzern z. Rß.
28 Lichtenau
29 Hof Rdv Schw Schf.

## Alter Spruch.

Wer einen Raben will baden weiß,
Und darauf legt seinen ganzen Fleiß,
Und an der Sonne Schnee will dörren,
Und allen Wind in eine Truhe sperren,
Und Unglück will tragen feil,
Und Wasser will binden an ein Seil,
Und einen Kahlen will bescheeren,
Und einen Pfaffen will belehren, —
Der thut manch' unnütz Arbeit gern. —

# Oktober

Warmer Oktober bringt fürwahr uns sehr kalten Februar. — Frost und Schnee im Oktober sind Boten, der Januar sei gesund. — Oktober-Gewitter sagen beständig, der künftige Winter sei wetterwendig. — Wenn zu uns Simon und Judas wandeln, wollen sie mit dem Winter handeln. — Oktober-Donner ist fürwahr noch besser als im Februar, der klingt nur wohl der Buch'rer Schaar. — Fällt der erste Schnee in den Schmutz, vor streng'rem Winter kündet er Schutz. — Hat der Oktober viel Regen gebracht, hat er die Gottesäcker bedacht.

# 31 Tage.

Neumond den 6. veränderlich.

Erstes Viertel den 14. kalte Neuel.

Vollmond den 22. aufheiternd.

Letztes Viertel den 29. schöne Witterung.

## Jahrmärkte.

1 Donaueschingen † Schwn.
Alfdorf † Roß
Gebrathofen †
Goeppingen Woll 3T
Groß-Lauffenburg †
Haslach
Hechingen †
Hochheim a. M.
Homburg v. d. H.
Langenau
Loeffingen †
Moehringen † Schaf
Oberndorf †
Schönau b. Heidelb.
Sigmaringen †
Stühlingen †
Thingen b. Waldsh.
2 Gr. Bengstingen †
Heilbronn † Roß Schwn und Leder
Kehl †
Lenzkirch
Neckargerach
Riegel †
Schopfheim i. Wth.
Waldsee
Wertheim (3Tg.)
Zweibrücken
3 Bieberach Wthg † Rß
Ellwangen †
Leonberg † R. ß
4 Aach †
Herbertingen †
Jßny † Rß Fchs (2T)
Melchingen †
Pfalzgrafenweiler † Roß Flachs
Urach † Rß.
Waldenbuch †
Wurzach †
5 Becherbach †
6 Grafenhausen bei Bonndorf †
Neu-Ulm (3Tg)
7 Germersheim (3Tg)
Herrheim
Scheibenhardt
8 Blaubeuren †
Engen † zgl. Farren
Kißlegg †
Neresheim †
Neufra †
Schramberg O.-A.
Obernbdorf †
Thann (Elsaß)
Ulma d. D. Tuch (3T)
Voehrenbach †
Wiesensteig † Rß Flch
9 Friedrichsthal †
Oetisheim †
Ostrach †
Schwenningen Amt Meßkirch †
Tuttlingen † Schaf
Wallstett
10 Coppel unt. Rodeck † Gschwend O.-A.
Gaildorf † Fchs Ld.
Herrischried †
Wolfach †
11 Altheim
Aulendorf †
Bischofsheim a. Rh.
Ebingen †
Ehningen im Gäu †
St. Georgen b. Villingen †
Stockach †
14 Kirchheimbolanden (2Tg)
15 Berfingen †
Dallau
Heidelberg M (14T)
Kuppenhm. b. Rastatt †
Laupheim † Roß
Rangendingen †
Riedlingen † Roß
Siegelsbach
Wilferdingen
16 Buchheim bei Moeßkirch †
Burkheim a. Rhein
Burladingen, Sigmaringen †
Harmersbach i. Thl.
Hettingen †
Horb a. Neckar †
Knittlingen †
Memmingen (4Tg)
Osterburken
Reichelsheim
Spaichingen †
Waldshut
17 Laudenbach
Tegernau †
18 Altkirch
Durlach
Hüfingen †
Rottweil am Neckar †
Scheer †
20 Hardheim
21 Billigheim, Pfzb.
22 Alpirsbach † Roß
Billigheim, Pfzb.
Bühlerthann
Dettingen b. Heidenheim †
Eichtersheim Hanf und Lnwd.
Elzach
Eppingen
Goetzingen
Gmünd (3T)
Grombach
Heimbach
Hilzingen †
Hofheim
Inneingen (Sig.) †
Kippenheim
Königsbachs. Durlch
22 Kroetzingen
Lauterecken †
Leutkirch † Roß
Moehringen † Schaf
Olten
Pfullendorf †
Renchen
Rust b. Ettenheim
Saeckingen †
St. Wendel
Walldorf
Weil die Stadt †
Roß Schwn
Wollenberg
Zell i. Wiesenthal
23 Billigheim, Pfzb.
Birkendorf
Buchau †
Eigeltingen
Helmstadt
Laichingen † Roß
Langensteinbach †
Malsch
Rüttingen † Roß, Schn. Flch. Lw Tch.
Pfirdt
Philippsburg
Schwarzach b. Bühl
Solothurn
Strümpfelbrunn
24 Cappel a. Rhein †
Stein am Rhein
25 Ueberlingen †
Blumberg †
Boeblingen †
Braeunlingen †
Ittersbach b. Pfzb †
Meßkirch †
Rorschach
Sulz a. Neckar † R ß
Sulzburg
Stetten unter Holstein †
Weingarten b. Drlch
26 Welzheim † Flachs Lwnd (2 Tg.)
27 Bottwar
28 Basel M
Diemringen
Grünstadt
Haßloch
Herbolzheim
Kandel (Langen-) 2T
Leinstetten
Speyer M (8T)
Walldürn
29 Beßgheim †
Billigheim b. Mosb.
Breisach, Alt-
Gamertingen †
Geislingen † (2T)
Giengen a. d. B. †
Griesen i. Kleggau †
Großelfingen †
Groß-Lauffenburg †
Grünsfeld
29 Habsheim
Kirchberg a. d. Jxrt
Kork z. Schw.
Külsheim
Laichingen Grn. Lnd.
Limbach.
Munderkingen † Rß.
Münzesheim b. Brett.
Neuhausen a. Feld. †
Neustadt, Schwzwld. 30
29 Oehringen Schaf
Schenkenzell
Schönau i. Wiesenth.
Sindolsheim
Thengen, Stadt
Tiefenbronn b. Pfb †
Weikersheim
Wolfstein †
Zell a. Hermersb. † 31
30 Emmendingen †
Hausach
Kork, Hanf
Ochsenburg
Pirmasens
Reutlingen †
Billingen † Frucht
Wolfersweiler
Ichenheim
Schriesheim

## Besondere Viehmärkte.

1 Bühl
Engingen
Haslach
Heitersheim b. Brsg.
Kirchheim a. Teck
Leutkirch z. Roß
Meßkirch
Obernheim
Pforzheim
Rottenburg a. N.
Tuttlingen
2 Mannheim
Reutlingen
Schaffhausen
Constanz
Crailsheim
Darmstadt
Ehingen a. d. D.
Giengen a. d. B.
Heidelsheim b. Brchs.
Kandel-Langen Sch.
Lahr
Langenau
Steckach
Waldsee Roß
3 Hall
Nemmingen Schaf
Quirnbach
Radolfzell z. Schw.
Schopfheim Wsnth.
Wangen i. Allgäu
Winnenden
4 Bietigheim Roß
Ellwangen Schaf
Emmendingen
Hall Schaf
Kandel-Langen Rind
Kehl Schw.
Lauda Schw.
Leopoldshafen Sch.
Zweibrücken
5 Gamertingen
Hilzingen Schw.
Urach Schf.
8 Bretten
Kandern
Kißlegg
Loeffingen Schw.
Mengen
9 Fusel
Rülzheim
Wehr
10 Altensteig
Bergzabern
Homburg, Pfalzb.
Vaihingen a. d. E.
11 Bonndorf
Freiburg
Jßny
Rastatt
Schönau i. Wsnthl.
12 Goeppingen
Osterburken Schaf
15 Ettlingen
Gebratzhofen
Mergentheim Schf.
Meßkirch
Müllheim, Brsg.
Thiengen b. Wldsh.
Trochtelfingen
Wachenheim, Pflzb.
16 Haßloch
Kandel-Langen Schw
Leifferdingen
Zell i. Wiesen.
17 Ettenheim
Külsheim
Pirmasens
Quirnbach
Radolfzell Schw.
18 Donaueschingen Sch.
Hof Rdv. Schw.
Kandel-Langen Rd.
Kenzingen
Kretzingen Schw.
Lörrach
Ravensburg Schaf
Rothweil a. Kaiserst.
Zweibrücken
22 Aisenz
Turlach
Ehingen a. d. D. Schf
Hardheim
Immendingen bei Möhringen z. Schw.
Lauterecken
23 Bühlerthann
Gmünd
Kusel z. Schw. Schf.
Oberrimsingen
24 Bergzabern
Bruchsal
Crailsheim Schaf
Homburg, Pfalzb.
Schwarzach b. Bühl
Weingarten b. Drlch.
25 Gailingen Schw.
Heidelsheim b. Brchs.
Kirchberg a. d. Jxrt
Oberkirch
Sulz a. Neckar Schaf
27 Lindau Roß
Ravensburg Roß
29 Blaufelden
Leutkirch z. Roß
Neumkirchen Canton Schaffhausen
30 Giengen a. d. Brenz
Krautheim a. Berg
Nördlingen
Offenburg
Pfullendorf
Schriesheim
31 Calw
Donaueschingen Sch.
Heidenheim Schaf
Reutlingen Schaf
Ueberlingen
Wangen im Allgäu

## So bettelt man!

„Ach, mein lieber, guter Herr, erbarmen Sie sich einer armen Waise, die Niemand mehr auf der Welt hat. Einen Vater habe ich nie gehabt, und meine Mutter ist als kleines Kind schon gestorben. Haben Sie Mitleid und schenken Sie mir Etwas, denn wenn ich kein Geld mit nach Hause bringe, kriege ich von meinen Eltern Prügel."

# November

Aller-Heiligen bringt Sommer für alte Weiber, der ist des Sommers letzter Vertreiber. — Aller-Heiligen trägt eigen den Winter zu allen Zweigen. — Sankt Martin setzt sich schon mit Dank am warmen Ofen auf die Bank. — Sankt Martin weiß nichts mehr von heiß. — Schafft Katharina vor Frost sich Schutz, so watet man lange draußen im Schmutz. — Kalter Dezember und fruchtreich Jahr sind vereinigt immerdar. — Kalter Dezember mit Schnee gibt reichlich Korn auf der Höh'. — Frau Lucia findet zu kurz den Tag, drum wird er verlängert acht Tage darnach. — Der heil'ge Christ will 'ne Eisbrücke haben, fehlt sie, wird selbst er damit sich begaben.

## 30 Tage.

Neumond den 5. rauh und windig.

Erstes Viertel den 13. stürmisch.

Vollmond den 20. nasse Witterung.

Letztes Viertel den 27. aufheiternd.

## Jahrmärkte.

1 Beutelsbach z. Flchs.
Heilbronn N. 1 W.
Müllheim, i. Breisg
Neufreistett
Rosenfeld †
Urach † z. Rß.
Wiernsheim † z Rß.
Wurzach †
2 Lindau (5 Tag)
Münchweiler, Pf z.
4 Carlsruhe M. (9T.)
Offenbach, Pfalzb.
5 Appenweier
Bischofsheim a. d. T †
Blieskastel
Bühl
Eilmendingen †
Hochheim a. N.
Kirchheim a. Teck †
Oberscheffletz
Obrigheim
Rottenburg a. N. †
z. Flachs.
Schüpf
Singen †
Sinsheim
Stühlingen †
Trochtelfingen †
Unterschüpf
Worms (3 Tag)
6 Adelsheim †
Balingen Wrtb. † z. N
Dornstetten †
Ehingen a. d. D. †
Geisingen † z. Schw
Lahr †
Lorch †
Ludwigsburg † z.
Holz u. Lorm
Neunkirchen b. Neckargemünd
Schweigen, Pfalzb.
St. Leon b. Phlsb.
Stetten a. k. Mkt. †
Weinheim
7 Bretten
Gengenbach †
Leonberg †
Radolfzell †
Rheinfelden
Winnenden †
8 Beerfelden
Bonndorf †
Dürrmenz Mblack. †
Krauchenwies (Sg.) †
Liptingen †
Stein b. Bretten †
9 Gailingen † z. Schw
11 Bergzabern
Buchen
Hall, Flachs
Rhodt
Wachenheim, Pfzb.
12 Aalen
Alzey (2 T.)
Blaubeuren †
Borberg
Brackenheim † z.
Flachs
Crailsheim
Creglingen
Donaueschingen †
z. Schw.
Engen †
Epfenbach
Freiburg M. (6 Tg.)
Göppingen †
Haslach
Herb a. N. †
Mergentheim (2 Tg.)
Meersburg
Mengen †
Mudau
Niederstetten
Oberndorf †
Olten
Spaichingen †
Staufen †
Thann (Elsaß)
Veringenstadt †
Wangen i. Allgäu †
13 Baden-Baden 2 Tg.
Cannstatt † z. Rß.
Ettelingen
Heiligenberg †
Kaiserslautern
Schaffhausen †
Schwetzingen Gesp.
Solothurn
Tübingen † z Schaf- u. Flachs.
Unteröwisheim
Waldenburg †
Waldsee
Wehr †
14 Biberach Kinzigth.)
Biberach (Württb.)
† z. Rß.
Cappel u. Rdeck. †
Ettenheim †
Görwhl †
Vaihingen a. d. E †
15 Aulendorf †
Colmar
Oertingen (Wrtb.) †
Erfingen
Hayingen † z. Rß.
Hornberg †
Isny † Rß. u. Flchs.
Stockach †
Tuttlingen † Schf
16 Ravensburg † Schw
(3 Tag)
18 Schönau b. Heidel.
19 Birkenau
Frendenberg
Heiligkreuzsteinach †
Gespinsel
Markdorf
Möhringen † Schf.
Sigmaringen †
Röhrenbach †
Waldstadt z. Hanf
20 Bruchsal
Endingen †
Hockenheim z. Gesp.
Kehl †
Klosterwald †
Weinsberg
21 Gundelsheim †
Inmeringen (Sgm) †
Marbach, Holz
Tettnang †
Wenkheim
Wimpfen a. Berg †
22 Blochingen
Heßmersheim
Marbach †
Mühlburg
Neuenburg a. Rh. †
Pfullingen †
Plochingen † z Rß.
Schorndorf Holz- u. Schnittw.
25 Annweiler
Benningheim
26 Altkirch
Bräunlingen †
Constanz †
Erzingen (Klgg.) †
Hilzingen †
Klein-Laufenburg †
Mahlberg
Munderkingen † z Rß.
Neckargmünd
Oppenheim 2 Tg.
Plieningen †
Rottweil a. N. †
Seelbach
Wangen im Allgäu †
Wiesensteig † z. Rß Flchs.
27 Altensteig † z. Fl.
Eichtersheim Hf Swd
Graben
Großengstingen †
Heppenheim (2 T.)
Kandern
Malterdingen
Metzingen †
Schorndorf †
Wertheim
28 Eßlingen † z. Fl. Hf. (3 Tg.)
Mosbach Gespinsel
Steinbach b. Bühl
29 Aulendorf
Everbach
Eigeltingen
Kenzingen †
Lichtenau
Melchingen †
Neckschach
Waiblingen Holz
Waldkirch
30 Beilstein
Bönnigheim † z. Hf.
Eicholzheim
Gochsheim
Heidenheim †
Krautheim am Berg
Laichingen † z. Rß.
Leinstetten
Neudenau
Pfedelbach z. Fl.
Riechen
Saulgau † z. Rß.
Säckingen †
Sindelfingen † z
Roß
Thiengen b. Wldsh.
Wildbad †
Zweibrücken
Schiltach

## Besondere Viehmärkte.

1 Bietigheim
Emmendingen
Grießen i. Kleggau
Herbertingen
Hof Rß.
Hof Rd. Schw.
Kandel-Langen Rd.
Kehl Schw.
Leopoldshafen z Sch.
2 Hilzingen z. Schw.
Urach Schf.
Zweibrücken
5 Endingen
Haslach
Hechingen
Hettersheim Brgu.
Kirchheim a. T. F. n.
Langenau
Leutkirch z. Rß.
Meßkirch
Pforzheim
6 Bischofsheim a. d. T.
Bühl
Constanz
Crailsheim
Darmstadt
Ehingen a. d. D.
Gernsbach
Heidelsheim Brchfl.
Kandel-Langen Sch.
Mannheim
Mosbach
Neustadt a. Kocher
Reutlingen
Schaffhausen
Schüpf
Stockach
Unterschüpf
7 Hall
Memmingen Schf.
Quirnbach
Schopfheim Wsnth
Wangen i. Allgäu
8 Donaueschingen Sch.
Giengen a. d. B. Rß.
Isny
Lauda Schw.
Odernheim
Schönau i. Wsnth.
Wolfstein
12 Bretten
Göppingen Schaf
Kandern
Kißleg
Löffingen Schw.
13 Aalen
Bietigheim Schaf
Gemmingen
Mergentheim
Osterdunken Schaf
Rülzheim
Sinsheim z. Schaf
14 Bergzabern
Homburg, Pfalzb.
Mergentheim Schaf
15 Baden-Baden z. Sw.
Freiburg
Gmünd
Hof z. Rd v Schw.
Kandel (Langen-) Rdv.
Krotzingen Schw.
Lörrach
Luzern z. Rß.
Rüttingen Schaf
Zweibrücken
16 Neckargemünd
17 Backnang Schaf
19 Ettlingen
Ettlingen
Gebratzhofen
Meßkirch
Müllheim, Brsgau.
Niederstetten
Oehringen
Wachenheim, Pfzb.
Weil die Stadt z Rß Schw.
20 Haßloch
Heilbronn Schaf
Kandel (Langen-) Schw.
Knittlingen
Rosenberg (Bauld.)
Ulm a. d. D. Roß (2 T.)
Zell im Wiesenthal
21 Bruchsal
Pirmasens
Quirnbach
Radolfzell z. Schw
22 Bieberach (Wrtbg.) Roß
24 Rastatt
26 Alsenz
Bopfingen
Durlach
Lauterecken
Leutkirch z. Rß.
Neunkirchen Ganter
Schaffhausen
27 Neuenstein
Nördlingen
Pfullendorf
28 Bergzabern
Homburg, Pfalzb.
Ueberlingen
Wangen im Allgäu
29 Dürrmenz-Mühlacker
Gochsheim
30 Geislingen z. Rß
Lichtenau
Thengen, Stadt
Waiblingen

## Im Zuchthause.

Gefangener: „Was ist das heute wieder für ein Saufressen!"

Gefangenwärter: „Nicht räsonnirt! Dafür bist Du auch im Zuchthause!"

Gefangener: „Im Zuchthause sind auch Menschen, so zu sagen!"

Gefangenwärter: „Menschen? Spitzbuben sind drin, wie Du einer bist?"

Gefangener: „Spitzbuben? Na, da sag' nur deinem König, wenn er seine Spitzbuben nicht ernähren kann, so soll er sich auch keine halten!"

BLB Karlsruhe

# Dezember

Je dunkler es über Dezember-Schnee war, je mehr leuchtet Segen im künftigen Jahr.

Düngerreime.

Wer spärlich seinen Acker düngt, der weiß schon was die Erndte bringt. — Hans düngte seine Felder schlecht, war Ackermann, jetzt ist er Knecht. — Wer gute Erndten machen will, der dünge, pflüg' und grabe viel. — Jobs läßt die Jauche in den Bach, ein Dummkopf nur thut es ihm nach. — Dünger ist die Seele vom Ackerbau, sie gehören zusammen wie Mann und Frau. — Gutes Vieh, gute Spreu, reichlich Futter, gibt fetten Mist, reiche Erndten, viel Milch, Käs und Butter.

# 31 Tage.

Neumond den 4. hell und sonnig.

Erstes Viertel den 12. Wind und Schnee.

Vollmond den 20. feuchte Luft.

Letztes Viertel den 27. unfreundlich.

## Jahrmärkte.

1 Tryberg
2 Frankenthal
Aach †
Diez
Friedrichshafen † 11
Haigerloch †
Leutkirch † z. Rß.
Nußloch
Schweinberg
Schliengen
Ulm a. d. D. M. (1 W.)
4 Furtwangen
Heilbronn † z. Rß.
SchwUdr
Herrenberg † z. Rß. 12
Flachs
Hüfingen †
Ladenburg z. Gespl.
5 Bietigheim Holz 13
Meesburg
Sulzfeld †
6 Bietigheim † z. Rß.
Flachs
Ehingen a. d. D. †
Empfingen †
Fehringen
Heitersheim, Brsg. †
Herbertingen †
Mühlhausen 17
Neuenbürg
Oberkirch
St. Wendel
Schramberg O.-A.
Oberndorf †
Veringenstadt † 18
Waldshut
Wiesloch
9 Grünstadt
10 Gmünd (3 T.)
Kusel †
Mergentheim (2 T.)
Neunkirchen Canton 19
Schaffhausen 20
Olten
Osterburken
Pfullendorf †
Thann (Elsaß) 21
Backnang † z. Roß
Emmendingen †
Hausach
Mannheim Chrstm.
Neuenstadt a. K.
Pfirdt
Pforzheim
Reutlingen †
Schorndheim i. Wsthl
Solothurn
Weinheim
Calw † z. Flachs (2 Tg.)
Durlach
Ueberlingen
Gschwend O.-A.
Gaild. † FlchsLwd
Hayingen † Rß.
Herrenalb †
Melchingen †
Meßkirch †
Munderkingen † z. Roß
Rosenfeld †
Urach †
Blaubeuren
Hechingen †
Riedlingen † z. Roß
Stuttgart M. (1 W) 22
Weil die Stadt † z. RßSchw.
Balingen (Wrtbg.) † 24
Ettlingen
Güglingen †
Knittlingen †
Lahr
Straßburg Messe (21 T.)
Colmar
Altkirch
Ebingen †
Sulz a. N. †
Wolfach
Alpirsbach † z. Korn
Basel M.
Bödigheim
Constanz †
Crailsheim
Diemringen
Dörzbach
Eningen v. d. Achl. †
Esslingen †
Feldkirch
Gerabronn
Horburg v. d. H.
Kochendorf
Langenau
Laufen z. Flachs
Markgröningen † (2 Tag)
Neustadt a. d Hardt (3 Tage)
Nürtingen † z. Rß
SwFlchsLwdTch.
Rust b. Ettenheim
Saargemünd
Sasbach b. Achern
Villingen † z. Fr.
Weikersheim
Welzheim † z. Fl. Lwd.
Zaisenhausen
Aach †
Tuttlingen
Weißenburg
Gernsbach
Groß-Laufenburg †
Landa z. Schw.
Schweigern
Tryberg
Grießen im Kleggau †
Hornberg †
Löffingen †

## Besondere Viehmärkte.

3 Haslach
Kirchheim a. d. T.
Langenau
Leutkirch z. Rß.
Mehkirch
Pforzheim
4 Constanz
Crailsheim
Ehingen a. d. D.
Giengen a. d. Br.
Heidelsheim b. Brch.
Horb a. N.
Kandel (Langen-) Schw.
Mannheim
Reutlingen
Schaffhausen
Schweinberg
Sinsheim z. Schaf
Stockach
5 Hall
Ostrach
Quirnbach
Radolfzell z. Schw.
Schopfheim i. Wthl
Wangen im Allgäu
6 Bonndorf
Ebersbach OA. Gpg
Emmendingen
Gernsbach
Kandel Langen- Rdv
Kehl Schw.
Leopoldshafen z. Sts
Wurzach
Zweibrücken
7 Hilzingen z. Schw.
10 Bretten
Bühl
Ellwangen
Kandern
Kibfegg
Löffingen Schw.
Mengen
Stühlingen
11 Bietigheim Schaf
Geisingen z. Schw.
Gmünd
Mergentheim
Rülzheim
Wehr
12 Bergzabern
Gmünd Roß
Homburg, Pfalzb.
Reutlingen Schaf
Rottenburg a. N.
Vaihingen a. d. E.
13 Bräunlingen z Sty.
Freiburg
Jony
Rastatt
Sinsheim z. Schaf
7 Ettlingen
Gebratzhofen
Mehkirch
Müllheim, Brsg.
Wachenheim, Pflzb.
18 Haßloch
Heilbronn Schaf
Kandel (Langen-) Schw.
Nördlingen
Rottweil a. N.
Zell im Wiesenthal
19 Bruchsal
Donaueschingen z. Schw.
Ettenheim
Pirmasens
Quirnbach
Radolfszell z. Schw.
20 Kandel (Langen-) Rdv.
Krotzingen Schw.
Lörrach
Sigmaringen
Zweibrücken
24 Alsenz
Durlach
26 Homburg, Pfalzb.
Pfullendorf
Wangen im Allgäu
27 Bergzabern
Engen z. Schw.
Gailingen z. Schw.
Ueberlingen
28 Thengen, Stadt
31 Leutkirch z. Roß
Möhringen z. Schf.
Neunkirchen C. Schff

## Gewissens-Beruhigung.

Der reiche Hesselbauer ist in der Kirche so andächtig, daß er, nachdem er dem Klingelbeutel sein Scherflein gegeben, den bockledernen Geldsäckel neben seine Hosentasche steckt, welcher nun auf den Boden fällt. Nicht weit von ihm steht der Prestels Domini (Dominikus), kurz aus dem Zuchthaus entlassen. Er hat dem Hausgeistlichen hoch und theuer geschworen, ehrlich zu bleiben und in Fällen, wo er zweifelhaft, was zu thun sei, den Weisungen des Pfarrers zu folgen. Da dreht sich der Priester am Altar um und spricht das: „Pax Domini" ꝛc. ꝛc. und der Domini steckt den Bockledernen in die Tasche und verläßt ohne Gewissensbisse die Kirche.

## Die Sporteln.

Eine junge Dame, die mit Recht nicht im besten Rufe stand, gewann einen Prozeß, und ging zu ihrem noch unverheiratheten Anwalt, demselben ihren Dank zu bringen. Sie that es auf die verbindlichste Weise, und schloß mit den Worten: „Da ich auf keine andere Art sie würdig genug belohnen kann, so biete ich Ihnen mein Herz an." Rasch erwiederte der junge Advokat: „Verzeihen Sie, die Sporteln gehören in der Regel meinem Schreiber", worauf Sie sich beschämt entfernte.

## Lebensweisheit.

Wer Weisheit nur aus Büchern lernt
Und selbst nicht weise denkt und lebt,
Wird immer mehr von ihr entfernt,
Je mehr er ihr zu nahen strebt.

Das Leben soll die Erde sein,
Darin die Weisheit Wurzel schlägt,
Und pflanzt ihr hier den Kern nicht ein,
Wächst euch kein Baum, der Früchte trägt.

Fr. Bodenstedt.